राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

गौरवशाली भारत

दिल्ली से प्रकाशित

R.N.I. NO. DELHIN/2011/38334 वर्ष- 10, अंक- 314 पृष्ठ - 08, नई दिल्ली, शनिवार ,22 मई 2021, मूल्य रु. 1.50

एक नज़र...

गौतम नवलखा को सुप्रीम कोर्ट ने नहीं दी जमानत

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भीमा कोरेगांव हिंसा केस में जेल में बंद सामाजिक कार्यकर्ता गौतम नवलखा को सुप्रीम कोर्ट से झटका लगा है। सुप्रीम कोर्ट ने गौतम नवलखा को जमानत देने से इनकार कर दिया। शीर्ष अदालत ने कहा कि गौतम नवलखा को 34 दिन नजरबंद रखा गया था और इसे सीआरपीसी के तहत हिरासत में रखना नहीं माना जाता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा हाईकोर्ट की ओर से नवलखा को नजरबंद रखे जाने के आदेश में यह स्पष्ट नहीं था कि क्या यह न्यायिक हिरासत की जगह नजरबंद किए गए थे।

म्यूकोरमाइकोसिस की दवा बनाने के लिए पांच और दवा कंपनियों को मंजूरी

नई दिल्ली। मोदी सरकार में केंद्रीय मंत्री मनसुख मंडाविया ने कहा कि म्यूकोरमाइकोसिस के इलाज में उपयोगी दवा एम्फोटेरिसीन-बी की कमी के मुद्दे का जल्द समाधान होगा। कई नई दवा कंपनियों को औषधि के विनिर्माण की मंजूरी दी गई है। ब्लैक फंगस में नाक, आंख और कभी-कभी दिमाग को नुकसान पहुंचाता है। तीन दिनों के भीतर पांच और दवा कंपनियों को भारत में औषधि बनाने की मंजूरी दी गई है। ये कंपनियां मौजूदा छह दवा कंपनियों के अलावा हैं। रसायन एवं उर्वरक राज्यमंत्री मंडाविया ने कहा कि मौजूदा दवा कंपनियों ने औषधि का उत्पादन बढ़ाना शुरू कर दिया है।

दिल्ली में 24 घंटे में 3000 नए मरीज मिले

नई दिल्ली। दिल्ली में कोरोना के मामलों में कमी का दौर शुक्रवार को भी जारी रहा। दिल्ली में शुक्रवार को जहां संक्रमितों की संख्या घटकर 3 हजार पर आ गई, वहीं अब संक्रमण दर घटकर भी 5 फीसदी से नीचे पहुंच गई है। हालांकि, आज भी मरने वालों की संख्या 250 से अधिक रही। स्वास्थ्य विभाग की ओर से शुक्रवार को जारी हेल्थ बुलेटिन के अनुसार, बीते 24 घंटे में जहां कोरोना के 3009 नए मरीज मिले हैं, वहीं 252 मरीजों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। संक्रमण दर घटकर भी अब 4.76 प्रतिशत पर आ गई है, जो गुरुवार को 5.50 थी।

कार्टून

पीएम मोदी का नया मंत्र 'जहां बीमार वहीं उपचार'

वाराणसी, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए वाराणसी के डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ और अन्य फ्रंटलाइन स्वास्थ्यकर्मियों से बात कर रहे हैं. इस दौरान उन्होंने कहा कि मैं काशी का एक सेवक होने के नाते हर एक काशीवासी का हृदय से धन्यवाद देता हूं. विशेष रूप से हमारे डॉक्टर्स, नर्सेज, वार्ड बॉयज और एम्बुलेंस ड्राइवर्स ने जो काम किया है, वो वाकई सराहनीय है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए वाराणसी के डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ और अन्य फ्रंटलाइन स्वास्थ्यकर्मियों से बात की। पीएम मोदी ने कहा कि हमने इस महामारी में कई अपनों को खोया है, मेरी उन सभी को श्रद्धांजलि। इस दौरान वे भावुक हो गए। पीएम ने कहा कि आप लोगों की तपस्या ने जिस तरह बनारस को संभाला है, उसकी पूरे देश में तारीफ हो रही है। पीएम मोदी ने कहा कि अब हमारा नया मंत्र है जहां बीमार वहीं उपचार। इस सिद्धांत पर माइक्रो-कंटेनमेंट जोन बनाकर जिस तरह आप शहर और गांवों में घर-घर दवाएं बांट रहे हैं, ये बहुत अच्छी पहल है। इस अभियान को ग्रामीण इलाकों में जितना हो सके उतना व्यापक करना है।पीएम ने कहा कि कोरोना की दूसरी लहर में कई मोर्चों पर एक साथ लडना पड़ रहा है। इस बार संक्रमण दर भी पहले से कई गुना जादा है। मरीजों को कई दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ रहा है। बनारस वैसे भी काशी के लिए ही नहीं पूर्वांचल के स्वास्थ्य सेवाओं का केंद्र है। बिहार के लोग भी काशी पर डिपेंड हैं। ऐसे में यहां के लिए कोरोना चुनौती बनकर आया है। यहां के हेल्थ सिस्टम पर सात सालों में जो काम हुआ उसने हमारा बहुत साथ दिया। फरि भी यह असाधारण हालात रहे। इस दबाव को संभालना संभव रहा। एक एक के लिए दिन रात काम किया। खुद की तकलीफ से ऊपर उटकर जी जान से काम करते रहे। आपकी तपस्या से बनारस ने जिस तरह कम समय में खुद को संभाला है। आज पूरे देश में उसकी चर्चा हो रही है। इस दौर में जन प्रतिनिधियों और अधिकारियों और सुरक्षा बलों ने भी लगातार काम किया। आक्सीजन के लिए प्लांट लगाए। बनारस ने जिस गति से कम समय में आइसीयू बेड बढाया और डीआरडीओ अस्पताल को स्थापित किया। बनारस कका कोविड कमांड सेंटर बढिया काम कर रहा है। तकनीक का प्रयोग किया। मरीजों के लिए सुलभ बनाया वह अनुकरणीय है। जो योजनाएं बनी जो अभियान चले उसने कोरोना से लड़ने में मदद की। 2014 में आप लोगों ने मुझे सांसद चुनकर भेजा। आपका धन्यवाद करने आया तो आशीर्वाद दिया। मैने आप लोगों से मांगा कि काशी को स्वच्छ करेंगे। आप लोगों ने जो स्वच्छता के लिए किया उसका लाभ मिला। बैक खाते हों और आयष के प्रति काम किया। योगा दिवचयय की आलोचना की गई। आज पूरे विश्व में कोरोना से लडने में योग का महत्व प्रचलित हुआ। योग और आयुष ने लोगों की ताकत बढाई। महादेव की कृपा से पहला दूसरा वेव हो लोगों ने धैर्य का परिचय दिया। मेरी काशी के लोग मरीजों बुजुर्गों की परिवाारके सदस्य के तौरपर मदद की। खाने की दवा की चिंता न करनी पड़ी।

भारत-चीन के रिश्ते चौराहे पर : जयशंकर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने चीन को जमकर कोसते हुए कहा, वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर तनाव के बाद से भारत और चीन के रिश्ते चौराहे पर हैं। अब आगे का रास्ता इस बात से तय होगा कि चीनी पक्ष आपसी सहमति या द्विपक्षीय समझौतों को मानेंगे या नहीं। जयशंकर ने कहा कि बीते साल चीन की सेना के चलते लद्दाख में तनाव बढ़ा। उन्होंने कहा, चीन ने बीते साल 1988 में बनी आपसी सहमति को दरकिनार कर दिया था। अगर आप शांति और सद्भाव भंग करते हो, आक्रामकता दिखाते हो या फिर लगातार टकराव बनाए रखते हो तो इसका असर द्विपक्षीय रिश्तों पर पड़ना लाजिमी है।

बीते साल भी हमने स्पष्ट रूप से कहा था कि सीमा पर तनाव और सहयोग साथ-साथ नहीं चल सकते।

विदेश मंत्री ने 21वीं सदी में अमेरिका और चीन के बीच संबंधों के संदर्भ में भू-राजनीतिक स्थिति पर एक सवाल का जवाब देते हुए कहा, यह शीत युद्ध 2.0 नहीं है, क्योंकि यह उस तरह का सैन्य संघर्ष नहीं है जैसा कि शीत युद्ध 1.0 में होता है। यह राजनीति चमकाने का एक विरोधाभास है, जहां देशों के बीच मूल्य, व्यवस्था, विश्वास और स्वतंत्रता परस्पर निर्भरता पर आधारित है। भारत और चीन ने कई दौर की कूटनीतिक और सैन्य वाताओं के बाद लद्दाख में पैंगोंग झील के इलाके से अपनी सेनाएं हटा ली हैं। दोनों पक्ष फिलहाल टकराव वाली तीन जगहों गोगरा, हॉट स्प्रिंग्स और डेपसांग मैदान से सैनिकों को हटाने पर बातचीत कर रहे हैं, मगर अभी तक कोई सहमति नहीं बन पाई है।

ममता लड़ेंगी विधानसभा का उपचुनाव

कोलकता, (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी अब अपनी परंपरागत सीट भवानीपुर से चुनाव लड़कर विधानसभा पहुंचने की तैयारी में हैं। ममता बनर्जी का रास्ता साफ करने के लिए इस सीट से मौजूदा विधायक शोभनदेब चट्टोपाध्याय ने पद से इस्तीफा दे दिया है। उनके इस्तीफे को विधानसभा के स्पीकर बिमान बनर्जी ने तत्काल स्वीकार कर लिया है। बनर्जी ने कहा, मैंने उनसे पूछा है कि वह खुद इस्तीफा दे रहे हैं और उनके ऊपर कोई दबाव नहीं है। मैं संतुष्ट हूं और उनके इस्तीफे को स्वीकार कर लिया है। अब उपचुनाव में ममता बनर्जी मुकाबले में उतरकर विधानसभा की राह तय कर सकती हैं। ममता बनर्जी पहले भी भवानीपुर सीट से ही चुनाव लड़ती रही हैं, लेकिन इस बार उन्होंने नंदीग्राम से उतरने का फैसला लिया था। नंदीग्राम में उन्हें अपने ही पुराने सिपहसालार और बीजेपी के नेता शुभेंदु अधिकारी के मुकाबले हार का सामना करना पड़ा था।नंदीग्राम से हार के बावजूद वह मुख्यमंत्री बनी हैं। ऐसे में उन्हें 6 महीने के अंदर विधानसभा की सदस्यता हासिल करनी होगी। सीएम ममता बनर्जी के लिए अपनी विधायकी छोड़ने के सवाल पर शोभनदेब चट्टोपाध्याय ने कहा कि यह पार्टी का फैसला है और मैं उसके साथ हूं। बंगाल सरकार में कृषि मंत्री की जिम्मेदारी संभाल रहे शोभनदेब चट्टोपाध्याय ने कहा, मैं आज भवानीपुर विधानसभा सीट से विधायक के तौर पर अपना पद छोड़ने जा रहा हूं। यह पार्टी के साथ ही मेरा भी फैसला है। मैं इस फैसले से पूरी तरह खुश हूं।

बच्चों पर कहर बनकर टूट रही कोरोना की दूसरी लहर, कर्नाटक में 9 साल से कम उम्र के 40 हजार हुए संक्रमित

बेंगलुरु । देश का शायद ही कोई ऐसा राज्य होगा, जहां पर कोरोना वायरस की दूसरी लहर ने अपना कहर नहीं बरपाया हो। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ समेत कई राज्यों में कोरोना संक्रमितों के पुराने सभी रिकॉर्ड्स टूट गए। हालांकि, पिछले चंद दिनों में मामलों में कमी आई है, लेकिन अभी भी संक्रमण से उस तरह की राहत नहीं मिली है, जिसकी सरकार उम्मीद कर रही है। दूसरी लहर में सबसे ज्यादा चिंतित करने वाली बात बड़ी संख्या में बच्चों का पॉजिटिव होना है। सिर्फ कर्नाटक जैसे राज्य में ही पिछले दो महीने में 40 हजार से ज्यादा बच्चे कोरोना संक्रमित हो चुके हैं। इन बच्चों की उम्र 9 साल से भी कम है।

कर्नाटक के कोरोना मामलों के अनुसार, 0-9 साल की उम्र के 39,846 और 10-19 उम्र के 1,05,044 बच्चे कोविड पॉजिटिव पाए जा चुके हैं। यह आंकड़ा इस साल 18 मार्च से 18 मई तक का है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले साल जब से कोरोना महामारी की शुरुआत हुई थी, तब से लेकर इस साल 18 मार्च तक 17,841 और 65,551 बच्चे कोविड से संक्रमित हुए थे। इस लिहाज से पिछली बार की तुलना में दूसरी लहर में तकरीबन दोगुने की रफ्तार से बच्चों को कोरोना संक्रमण हुआ है।

महामारी से मरने वाले बच्चों की बात करें तो पिछले साल से इस साल 18 मार्च तक 28 बच्चे कोविड का शिकार हुए थे, तो 18 मई तक 15 और बच्चों की मौत हो गई। डॉ. श्रीनिवास कासी कहते हैं कि इस बार जब कोई भी शख्स कोविड पॉजिटिव हो रहा है, उसके दो दिन के भीतर ही घर के बाकी सदस्य भी संक्रमित हो जा रहे हैं। कुछ मामलों में, बच्चे कोविड मरीजों के प्राथमिक संपर्क होते हैं। ज्यादातर मामलों में परिवार में सबसे पहले संक्रमित होने वालों में बच्चे ही होते हैं।

लेडी कर्जन अस्पताल के डॉक्टर ने आगे कहा, बच्चे काफी आसानी से संक्रमित होते हैं और फिर चूंकि वे ही बड़ों के सबसे ज्यादा संपर्क में आते हैं तो काफी तेजी से संक्रमण फैलता है। जैसे ही बच्चों में कोई भी लक्षण दिखाई दे, तुरंत ही उनके बड़ों को भी उनके साथ आइसोलेट हो जाना चाहिए। बच्चों की एक और डॉक्टर डॉ. सुपराजा चंद्रशेखर कहती हैं कि दस में से सिर्फ एक ही बच्चे को अस्पताल में भर्ती करवाने की जरूरत पड़ती है, बाकी के बच्चे आसानी से घर पर ही आइसोलेट होकर ठीक हो जाते हैं। हालांकि, उनकी सख्त देखभाल करनी पड़ती है। उन्होंने आगे कहा, जैसे ही बच्चों में लक्षण दिखाई दें, तुरंत ही उनका कोविड टेस्ट करवाना चाहिए। उनका ख्याल रखने के साथ ही उन्हें तुरंत ही आइसोलेट कर देना चाहिए। वहीं, बिना डॉक्टर की सलाह से बच्चों का सीटी स्कैन नहीं करवाना चाहिए।

संबित पात्रा की पोस्ट पर टैग से खफा केंद्र सरकार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा की ओर से टूलकिट वाले ट्वीट को मैन्युप्लेटिड मीडिया यानी गुमराह करने वाली पोस्ट करार देने पर केंद्र सरकार ने ट्विटर से नाराजगी जताई है। केंद्र सरकार ने सोशल मीडिया कंपनी को पत्र लिखकर उसके इस कदम पर कड़ा ऐतराज जताया है। सरकार ने ट्विटर से साफ तौर पर कहा है कि वह इस तरह के टैग को हटाए, जिन्हें पूर्वाग्रह के तहत लगाया है। समानता और पक्षपात रहित माहौल और अवसर के लिए यह जरूरी है। सरकार की ओर से ट्विटर से कहा है कि उसकी भूमिका एक माध्यम के तौर पर है और इसके जरिए उसने फैसला देने का प्रयास किया है, जो गलत है।

आईटी मिनिस्ट्री की ओर से पत्र लिखकर कहा गया है कि टूलकिट के मामले में संबंधित पक्षों की ओर से शिकायतें की गई हैं और कानूनी एजेंसियों की ओर से जांच की जा रही है। ऐसे में इस मामले पर ट्विटर की ओर से कोई फैसला देने गलत है। यही नहीं सरकार ने ट्विटर की इस कार्रवाई को पूर्वाग्रह, पूवार्नुमान और सोचे-समझी रणनीति का हिस्सा बताया है ताकि जांच को प्रभावित किया जा सके। मंत्रालय ने ट्विटर को लिखे पत्र में स्पष्ट तौर पर लिखा है, मंत्रालय ट्विटर के इस कदम को एकतरफा फैसला और जांच की उचित प्रक्रिया को प्रभावित करने वाला मानता है। यह अपने अधिकार से बाहर जाने जैसा है, जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। हालांकि केंद्र सरकार की ओर से अपने पत्र में संबित पात्रा के ट्वीट पर कंपनी के एक्शन का जिक्र नहीं किया गया है, लेकिन उसके लेटर से साफ है कि बीजेपी प्रवक्ता की पोस्ट को लेकर ही उसने यह बात कही है। इससे पहले 18 मई को संबित पात्रा ने एक ट्वीट किया था, जिसमें कांग्रेस का लेटरहेड था और उसमें यह बताया गया था कि सोशल मीडिया पर किस तरह ट्वीट और जानकारी साझा करनी है। संबित पात्रा ने कांग्रेस पर आरोप लगाया था कि वो एक कथित टूलकिट के सहारे सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की छवि बिगाड़ने का काम कर रही है।

उनका कहना था कि कांग्रेस कुछ बुद्धिजीवियों की मदद से सरकार के खिलाफ माहौल बनाने का काम कर रही है। उनकी इसी पोस्ट को गुरुवार को ट्विटर ने मैन्युप्लेटिड मीडिया यानी गुमराह करने वाली पोस्ट करार दे दिया था। बता दें कि बीते कई दिनों से बीजेपी की ओर से कथित टूलकिट को लेकर कांग्रेस पर हमला बोला जा रहा है। वहीं कांग्रेस ने टूलकिट के आरोपों को फर्जी करार दिया है और बीजेपी चीफ जेपी नड्डा समेत पार्टी के कई नेताओं के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अपने पिता और पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की 30वीं पुण्यतिथि पर नई दिल्ली में उनके स्मारक वीर भूमि पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए।

जेपी नड्डा का आरोप- कोरोना और किसान मुद्दे पर विपक्ष कर रहा है राजनीति, केंद्र सरकार की तारीफ की

नई दिल्ली। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने कोरोना से निपटने के लिए और किसानों के कल्याण के लिए मोदी सरकार की सराहना की है. वहीं, इन्हीं मुद्दों पर विपक्षी पार्टियों पर राजनीति करने का आरोप लगाया है. जेपी नड्डा का कहना है कि केंद्र की मोदी सरकार किसानों के हित के लिए लगातार काम करती रही है. मोदी सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है. नरेंद्र मोदी की सरकार ने पीएम किसान सम्मान निधि के तहत 14 मई को 9.5 करोड़ किसानों के बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से इस योजना की 8वीं किस्त जारी की. नड्डा का कहना है कि इस बार पीएम किसान सम्मान निधि का फायदा पश्चिम बंगाल के किसानों को भी हुआ. हालांकि उन्होंने ममता सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि इस मुद्दे पर वे देर आए लेकिन दुरुस्त आए.

मोदी सरकार ने लिया खाद सब्सिडी बढ़ाने का फैसला

नड्डा ने कहा कि 19 मई को खाद सब्सिडी बढ़ाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है. डीएपी खाद की सब्सिडी 140 प्रतिशत बढ़ा दी गई है. किसानों को डीएपी खाद में 500 रुपये प्रति बोरी से बढ़ाकर 1,200 रुपये प्रति बोरी सब्सिडी मिलेगी. पंजाब में इस बार गेहूं की सबसे ज्यादा खरीद हुई है जो पंजाब सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य से भी अधिक है. भारतीय खाद्यान्न निगम के आंकड़ों के अनुसार प्रमुख गेंहू उत्पादक राज्यों में 13 मई तक 361 लाख टन से ज्यादा गेंहू खरीदा जा चुका है. देश में पहली बार मोदी सरकार ने एक देश-एक कृषि बाजार बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है. देश में पहली बार किसानों को अपनी फसल कहीं पर किसी को भी बेचने की छूट मिली है. देश में पहली बार किसानों की भलाई के लिए उत्पादन लागत का न्यूनतम 1.5 गुना एमएसपी निर्धारित किया गया. देश में पहली बार किसान रेल, किसान उड़ान की शुरुआत हुई. देश में पहली उर्वरक सब्सिडी को डीबीटी के दायरे में लाया गया है. देश में पहली बार पेड़ की परिभाषा से बांस को हटाने के लिए कानून में संशोधन किया. अब लोग बांस उगाकर उसका लाभ ले सकेंगे. इसके साथ साथ बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कोरोना के खिलाफ लड़ाई में पीएम केयर्स फंड को संजीवनी बताया है. देश भर में टीकाकरण अभियान, ऑक्सीजन प्लांट्स की स्थापना, अस्थायी अस्पताल और RT-PCR परीक्षण प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए इस फंड से सहायता प्रदान की जा रही है. नड्डा का कहना है कि भारत सरकार द्वारा अब तक 18 करोड़ 70 लाख से अधिक कोरोना वैक्सीन के डोज मुफ्त मुहैया कराए गए हैं.

विपक्षी पार्टियों पर नड्डा ने लगाए आरोप- बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कोरोना और किसान के मुद्दे पर विपक्षी पार्टियों पर आरोप लगाते हुए कहा कि वह इस मुद्दे पर राजनीति कर रहे हैं. जेपी नड्डा का कहना है कि पीएम नरेंद्र मोदी लगातार किसानों के विकास के लिए काम कर रहे हैं वहीं विपक्षी पार्टियां विभिन्न माध्यमों से किसानों को भड़काने की कोशिश कर रही है.

न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनिया गुतरेस मध्य पूर्व और फिलिस्तीन की हालत को लेकर आम सभा की बैठक को संबोधित करते हुए।

भारत के कोरोना वैक्सीन के निर्यात पर प्रतिबंध से संकट में घिरे गरीब देश

लंदन, (एजेंसी)। दुनिया के सबसे बड़े वैक्सीन निमार्ता भारत ने कोरोना वैक्सीन के निर्यात पर रोक लगा दी है। भारत के इस निर्णय से दूसरे जरूरतमंद देशों के लाखों गरीब लोगों को झटका लगा है। कई जगहों पर वैक्सीन की पहली खुराक लगवा चुके लोगों को अब चिंता है कि उन्हें दूसरी खुराक मिलेगी भी या नहीं। इस बीच कोरोना के कई अलग-अलग और खतरनाक वैरियंट्स सामने आने के बाद सुरक्षा को लेकर डर बढ़ गया है।

कोरोना की दूसरी खुराक का इंतजार कर रहे केन्या के एक टैक्सी ड्राइवर जॉन ओमोन्डी ने कहा कि वैक्सीन के बिना हम मरने का इंतजार कर रहे हैं। ऐसे दर्जनों विकासशील देश हैं जिनके राष्ट्रीय वैक्सीन प्रोग्राम को भारत के फैसले से झटका लगा है। केन्या भी ऐसे ही देशों में से एक है। दरअसल, भारत में भी खतरनाक वेरियंट बी.1.617 तेजी से फैल रहा है जिसने हाल के हफ्ते में भारी तबाही मचाई है। इसके चलते भारत में वैक्सिनेशन तेज करने और घरेलू मांग को पूरा करने की जरूरत आ पड़ी है।

भारत के सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया (सीआईआई) ने कोवैक्स प्रोग्राम के तहत 5 करोड़ की आबादी वाले केन्या को आस्ट्राजेनेका वैक्सीन की 10 लाख खुराकें दी थीं। 30 लाख खुराकों के साथ दूसरा बैच जून में जाना था, लेकिन भारत ने निर्यात बंद कर दिया है। केन्या के स्वास्थ्य मंत्रालय के कार्यकारी निदेशक पैट्रिक ऐमथ का कहना है हमारे पास वैक्सीन होती तो हम अपने प्लान का दूसरा चरण शुरू कर देते।

उन्होंने उम्मीद जताई है कि भारत में हालात जल्द सामान्य हों। इसके साथ-साथ जानसन एंड जानसन और फाइजर की वैक्सीन हासिल करने की कोशिश भी की जा रही है। इसी तरह इंडोनेशिया, फिलिपींस, वियतनाम और दक्षिण कोरिया को भी भारत से वैक्सीन न आने के चलते झटका लगा है। इंडोनेशिया ने अब चीन का रुख किया है और उत्पादन बढ़ाने के लिए पेटेंट हटाने की अपील की है। केन्या, घाना से लेकर बांग्लादेश, इंडोनेशिया तक गरीब देश कोवैक्स के ऊपर निर्भर हैं, लेकिन उनके पास अब वैक्सिनेशन रोकने को छोड़कर दूसरा रास्ता नहीं है। संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी यूनीसेफ के मुताबिक भारत के एक्सपोर्ट रोकने से जून के अंत तक दुनियाभर में 19 करोड़ खुराकों की कमी हो जाएगी। इससे गरीब देश पिछड़ जाएंगे और वायरस को रोकने की वैश्विक कोशिशों को झटका लगेगा, वह भी ऐसे समय में जब खतरनाक वेरियंट सामने आ रहे हैं।

भारत के पड़ोसियों-नेपाल, श्रीलंका, मालदीव से लेकर अर्जेंटीना और ब्राजील जैसे देशों में भी स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा गई है। बांग्लादेश में अभी पहली खुराक दिए जाने के कार्यक्रम को ही रोकना पड़ गया है। यहां साल के शुरूआती 6 माह में भारत से हर महीने 50 लाख खुराकें जानी थीं। अभी तक सिर्फ 70 लाख पहुंची हैं। बांग्लादेश ने अब रूस की स्पूतनिक वैक्सीन को मंजूरी दे दी है और 5 लाख खुराकें यहां चीन से पहुंची हैं। कोवैक्स के तहत फाइजर की एक लाख खुराकें अगले महीने पहुंचेंगी।

अफ्रीका में 54 फीसदी देश वैक्सिनेशन के लिए कोवैक्स पर निर्भर हैं। अफ्रीका का लक्ष्य साल के अंत तक 30-35 फीसदी और अगले दो से तीन साल में 60 फीसदी आबादी को वैक्सिनेट करने का था, लेकिन वैक्सीन की कमी से यह लक्ष्य दूर जा सकता है। इसी तरह इथियोपिया के पास अब चीन की साइनोफार्म वैक्सीन हैं और वह दूसरे ब्रैंड्स हासिल करने की कोशिश कर रहा है। घाना में भी वैक्सिनेशन का लक्ष्य पीछे जाता दिख रहा है। यूनीसेफ और दूसरी चैरिटीज ने अमीर देशों से अपील की है कि वे अपनी जरूरत से ज्यादा खुराकें गरीब देशों को दान कर दें। यूनीसेफ फोर का कहना है कि सिर्फ जी-7 देश अगर अपनी सप्लाई में से 20 फीसदी शेयर करें तो भी जून, जुलाई और अगस्त में 15.3 करोड़ खुराकें मिल सकती हैं जिससे कई देशों को राहत मिलेगी। फाइजर और माडर्ना जैसी कंपनियों से भी सप्लाई तेज करने की गुजारिश की गई है।

गाजा संघर्ष में मध्यस्थता कर रहे मिस्र को व्यापक प्रभाव की उम्मीद

काहिरा, (एजेंसी)। मिस्र ने पश्चिम एशिया में अत्यावश्यक मध्यस्थ के तौर पर खुद को फिर से स्थापित कर लिया जब उसने इजराइल और हमास युद्ध में सफलतापूर्वक संघर्षविराम समझौते की मध्यस्थता की। कम समय तक चले लेकिन बेहद महंगे साबित हुए इस युद्ध में सैकड़ों लोग मारे गए और गाजा पट्टी में बहुत बबार्दी हुई। काहिरा में सरकारी मीडिया ने कहा कि लड़ाई में ठहराव शुक्रवार तड़के से प्रभावी होगा और मिस्र के दो प्रतिनिधिमंडल तेल अवीव और फलस्तीन क्षेत्र में जाकर समझौते के क्रियान्वयन पर अमल को देखेंगे।

यह ताजा उदाहरण है जिसमें मिस्र ने इजराइल और गाजा के सत्तारूढ़ चरमपंथी हमास समूह के बीच मध्यस्थता की है जिन्होंने महज एक दशक में चार युद्ध लड़े हैं।

मिस्र की सीमा इजराइल और गाजा पट्टी दोनों के साथ लगती है और 2005 में गाजा से इजराइल के पीछे हटने और 2007 में हमास के क्षेत्र पर कब्जा कर लेने के बाद से वह मुख्य भूमिका निभाता रहा है।

राजनयिक अधकारियों के मुताबिक, हालिया 11 दिन के युद्ध में मिस्र ने ऐसी रूपरेखा उपलब्ध कराने का काम किया है जिस पर दोनों पक्ष सहमत हो सकें। यह तत्काल साफ नहीं हो सका कि संघर्षविराम की शर्तें क्या-क्या हैं, लेकिन इसकी सफलता देश की कूटनीतिक विश्वसनीयता को जरूर मजबूत करेगी।

आज हम फिलिस्तीन के एक नए जन्म को देख रहे : सलामी

गाजा, (एजेंसी)। ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के कमांडर मेजर जनरल हुसैन सलामी ने इजरायल पर हमला करने को लेकर फिलिस्तीन के चरमपंथी संगठन हमास की तारीफ की है। सेंट्रल तेहरान में फिलिस्तीनियों के पक्ष में आयोजित रैली को संबोधित कर जनरल हुसैन सलामी ने कहा, आज हम फिलिस्तीन के एक नए जन्म को देख रहे हैं...वहां (हमास) मिसाइलों से लड़ रहे हैं। हमास के रॉकेट हमलों की जवाबी कार्रवाई में इजरायल भी हवाई हमले कर रहा है।

जनरल सलामी ने कहा, एक नया इजरायल भी उभरा है, जो टूटा हुआ है, निराश है, जिसने खुद पर भरोसा खो दिया है। जनरल सलामी के हवाले से बताया, इजरायल और कमजोर हुआ है जबकि फिलिस्तीन उतना ही मजबूत और ताकतवर बनकर उभरा है।

जनरल हुसैन सलामी का बयान उस समय सामने आया है, जब कहा जा रहा है कि ईरान हमास को मदद मुहैया करा रहा है, जिससे वहां इजरायल को मजबूती से टक्कर दे रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ईरान फिलिस्तीन के चरमपंथी गुट हमास को सिर्फ हथियार ही नहीं बल्कि मिसाइल आदि तैयार करने वाली टेक्नोलॉजी, डिजाइन और फामूर्ला भी मुहैया करा रहा है।जनरल सलामी ने कहा कि हमास के रॉकेट दागने के कारण पिछले हफ्ते इजरायल के तेल अवीव एयरपोर्ट पर इंटरनेशनल फ्लाइट्स निर्लंबित कर दी गई थीं। रॉकेट हमलों के चलते यह पहली बार हुआ। इजरायलियों के खिलाफ यह लड़ाई सिर्फ फिलिस्तीनियों के लिए नहीं है, बल्कि दुनिया के अहंकार के खिलाफ मुसलमानों की लड़ाई का प्रतीक है।

इजरायली सेना का दावा है कि पिछले 10 दिनों में गाजा से इजरायल की तरफ चार हजार रॉकेट दाग दिए गए है। इजरायल पर हमास के रॉकेट हमले में अब तक 12 लोगों की मौत हो चुकी है जिसमें एक पांच साल का बच्चा और 16 साल की बच्ची भी शामिल है।सैकड़ों घायल भी बताए जा रहे हैं।गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, इजरायली हमले में अब तक 219 फिलिस्तीनियों की जान जा चुकी है।मरने वालों में 60 से ज्यादा बच्चे शामिल हैं।इस बीच, गुरुवार तड़के इजराइल ने फिर गाजा पट्टी में कई हवाई हमले।इसमें जिसमें कम से कम एक फिलिस्तीनी मारा गया और कई अन्य घायल हो गए।शुक्रवार को गाजा में सीजफायर की घोषणा हो गई है। उम्मीद है कि दस दिनों से जारी हिंसा का अब अंत हो जाएगा।

इजरायल में हमास आतंकियों के दागे राकेटों को लेकर साइरन की आवाज आने पर अपने बचाव के लिए कवर लेकर जमीन पर लेटे हुए लोग।

पुतिन की दुश्मन देशों को धमकी, रुसी क्षेत्र हड़पने की कोशिश करने वालों के दांत तोड़ दूंगा

मॉस्को, (एजेंसी)। हाल के दिनों में अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ चल रहे तनाव के बीच रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अपने दुश्मनों को जोरदार धमकी दी है। पुतिन ने कहा है कि उनका देश रूसी क्षेत्र के कुछ हिस्सों को हड़पने की कोशिश करने वालों को नॉक आउट कर उनका दांत तोड़ देगा। बताया जा रहा है कि पुतिन ने रूसी क्षेत्र के कुछ हिस्सों को हड़पने की कोशिश करने वाले देशों को अप्रत्यक्ष रूप से धमकी दी है। पुतिन ने कहा कि विदेशी दुश्मन रोजाना रूसी क्षेत्रों को छीनने की कोशिश करते हैं। पुतिन ने कहा, हर कोई हमें कहीं काट लेना चाहता है या हमारे किसी हिस्से को काटना चाहता है, लेकिन उन्हें पता होना चाहिए कि जो लोग ऐसा करना चाहते हैं, हम उनके दांत तोड़ देने वाले हैं, जिससे वे हमें काट न सकें।

हालांकि सोवियत संघ के पतन में रूसी क्षेत्र का एक तिहाई हिस्सा चला गया था, लेकिन रूस अभी भी क्षेत्रफल के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा देश है। रूस ने हाल के सालों में अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया है, आधिकारिक आंकड़ों में कहा गया है कि इस साल सिर्फ राष्ट्रीय रक्षा में 3 ट्रिलियन रूबल (41 अरब से ज्यादा) का निवेश किया जाएगा। रूस लगातार नई-नई मिसाइलों और महाविनाशक हथियारों का परीक्षण कर रहा है।

पिछले दिनों ही रूस का यूक्रेन के साथ तनाव चरम पहुंच गया था और पुतिन ने हजारों की तादाद में सैनकि तथा हथियार यूक्रेन की सीमा पर तैनात कर दिए थे। हालांकि बाद में रूस ने यूक्रेन बॉर्डर पर तैनात अपनी सेना को वापस जाने के आदेश दे दिए। माना जा रहा है कि इससे यूरोप में तीसरे विश्वयुद्ध के शुरू होने का खतरा फिलहाल टल गया है। मार्च के अंत से ही रूसी सेना के लगभग एक लाख जवान भारी सैन्य साजोसामान के साथ यूक्रेन की सीमा के नजदीक पहुंच गए थे। इसके बाद अमेरिका समेत कई यूरोपीय देश खुलकर यूक्रेन के पक्ष में लामबंद हो गए थे। सेना की वापसी का आदेश देते हुए रूसी रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू ने सैन्य साजोसामान को इस साल के अंदर में एक दूसरे युद्धाभ्यास के लिए वहीं छोड़ने को कहा है।

बृहस्पति का वायुमंडल अलग वेवलेंथ में दिखाई दिया

लंदन, (एजेंसी)। हबल स्पेस टेलिस्कोप और हवाई की जेमिनाई नॉर्थ ऑब्जर्वेटरी से मिलीं तस्वीरों में बृहस्पति का वायुमंडल अलग वेवलेंथ में दिखाई दिया है। इनकी मदद से ही वैज्ञानिक वहां बनने वाले तूफानों के बारे में जान सकते हैं। बृहस्पति ग्रह पर आने वाले भयानक तूफान के पीछे आखिर क्या है वैज्ञानिकों ने इन्फ्रारेड, विजिबल और अल्ट्रावॉइलट वेवलेंथ में ये तस्वीरें ली थीं और इन्हें प्रोसेस करने के बाद बादलों में तुलना की गई है।

एक तस्वीर में बृहस्पति एकदम आग सा धधकता दिखाई दिया है और इसका ग्रेट रेड स्पाट भी अलग नजर आया है। अलग-अलग वेवलेंथ पर बृहस्पति में दिखने वाले बदलाव से ऐस्ट्रोनॉमर्स को वायुमंडल के बारे में नई जानकारी मिली है। दिलचस्प बात यह है कि बृहस्पति के ईक्वेटर के दक्षिण में दिखने वाले महातूफान ग्रेट रेड स्पाट को विजिबल और अल्ट्रावॉइलट वेवलेंथ में देखा जा सकता है लेकिन इन्फ्रारेड रोशनी में यह बैकग्राउंड में मिल जाता है। तीनों में तुलना से यह भी पता चला है कि इस इन्फ्रारेड तस्वीर में डार्क रेड स्पॉट की जगह दिखने वाला क्षेत्र विजिबल लाइट में और बड़ा दिखता है। अमेरिका के नैशनल ऑप्टिकल इन्फ्रारेड ऐस्ट्रोनॉमी रिसर्च लैब का कहना है कि ऐसा इसलिए है कि हर रोशनी अलग-अलग प्रॉपर्टी को कैद करती है। इन्फ्रारेड में मोटे बादल दिखते हैं, विजिबल और अल्ट्रावॉइलट रोशनी में क्रोमोफोर्म का क्षेत्र दिखता है। ये ऐसे कण होते हैं जो नीली और अल्ट्रावॉइलट रोशनी को अब्जॉर्ब करते हैं। इससे ये लाल रंग के दिखते हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के वैज्ञानिक माइक वॉन्ग ने नासा के जुनो स्पेसक्राफट से मिले रेडियो सिग्नल्स के साथ ही इन तस्वीरों की तुलना की है। ये सिग्नल बृहस्पति के वायुमंडल में बिजली दिखाते हैं। तुलना करने पर उन्हें बादल की अलग-अलग परतों के बारे में ज्यादा जानकारी मिली है।ये तस्वीरें पहले 11 जनवरी, 2017 को ली गई थीं। अल्ट्रावॉइलट और विजिबल व्यू हबल स्पेस टेलिस्कोप के वाइड फील्ड कैमरे ने और इन्फ्रारेड तस्वीरें नियर इन्फ्रारेड इमेजर ने ली थीं।

इजरायल के खिलाफ सतही भाषा के प्रयोग पर बेइज्जत हुए पाक विदेश मंत्री

इस्लामाबाद, (एजेंसी)। अपने बड़बोलेपन के लिए ख्यात पाकिस्तानी विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी को अमेरिका में बड़ी बेइज्जती का सामना करना पड़ा। संयुक्त राष्ट्र में इजरायल को घेरने के लिए अमेरिका पहुंचे पाकिस्तानी विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने एक चैनल को दिए इंटरव्यू में बिना ठोस सबूत के इजरायल के खिलाफ बहुत सतही भाषा का प्रयोग किया। इस पर टीवी चैनल के एंकर ने उन्हें तगड़ी झाड़ लगाई। इस घटना का वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

टीवी चैनल की एंकर बिआन्ना गोलोदरयगा के साथ इंटरव्यू के दौरान पाकिस्तानी विदेश मंत्री ने कहा कि इजरायल हार रहा है। अपने संबंधों के बाद भी वह मीडिया युद्ध में हार रहा है। इस पर बिआन्ना ने पूछा कि आप किस तरह के संबंध की बात कर रहे हैं। इस पर कुरैशी ने जवाब दिया।हा हा हा... डीप पॉकेट। पाक विदेश मंत्री ने कहा इजरायली बहुत प्रभावशाली हैं और वे मीडिया को नियंत्रित कर रहे हैं।

कुरैशी के इस नस्ली बयान पर चैनल की एंकर ने उन्हें घेरते हुए कहा मैं इसे यहूदी विरोधी टिप्पणी मानती हूं। बिआन्ना ने जब कुरैशी को घेरा तो वह कहने लगे कि मीडिया के बारे में ऐसी धारणा है। इसके बाद जब एंकर ने चीन में उइगर मुस्लिमों के खिलाफ अत्याचार के मुद्दे को उठाया तो कुरैशी बगलें झांकने लगे। कुरैशी ने कहा कि वह इसके बारे में सार्वजनिक रूप से कोई टिप्पणी नहीं करेंगे। इसके बाद पाकिस्तानी विदेश मंत्री ने मुद्दे को कश्मीर की ओर ढकलने का प्रयास किया।

कुरैशी अपने इस बयान के लिए सोशल मीडिया में जमकर ट्रोल हो रहे हैं। इससे पहले कुरैशी ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से अपील की थी कि फिलस्तीन में जारी हिंसा को बंद कराया जाए। उन्होंने कहा कि अब वह समय आ गया है जब कहा जाए कि बहुत हो गया। कुरैशी अपने आका तुर्की के विदेश मंत्री के साथ अमेरिका पहुंचे हैं।

इजराइल और फलस्तीन के बीच वार्ता बहाल करने के लिए हर संभव प्रयास हो

जेनेवा, (एजेंसी)। सरकार ने रेखांकित किया है, कि इजराइल और फलस्तीन के बीच वार्ता बहाल करने में सहायक माहौल तैयार करने के लिए हर संभव प्रयास होने चाहिए। भारत ने कहा कि क्षेत्र में दीर्घकालिक शांति और स्थिरत कायम के लिए अर्थपूर्ण वार्ता का दौर लंबा चल सकता है। भारत के संयुक्त राष्ट्र में राजदूत एवं स्थायी प्रतिनिधि टीएस तिरुमूर्ति ने कहा,हम लगातार जोर दे रहे हैं, कि तत्काल तनाव को कम करना इस वक्त की जरूरत है, ताकि हिंसा की कड़ी को तोड़ा जा सके। हम आह्वान करते हैं कि तनाव को बढ़ाने वाले किसी भी कदम से बचना चाहिए। इसके साथ ही एक तरफा तरीके से यथास्थिति बदलने की कोशिश से भी बचना चाहिए। तिरुमूर्ति की टिप्पणी इजराइल और हमास के बीच 11 दिन के संघर्ष के बाद संघर्ष विराम की घोषणा के बीच आई है। इस संघर्ष में गाजा पट्टी में बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष वोल्कन बोजकिर ने बैठक बुलाई थी और गत साल शुरू हुई महामारी के बाद पहली बार दर्जनों देशों के विदेशमंत्री आमने-सामने बैठकर इस बहस में शामिल हुए। तिरुमूर्ति ने बहस में बोलते हुए कूटनीतिक प्रयासों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की पहल के बावजूद क्षेत्र में हिंसा जारी रहने पर चिंता जताई। उन्होंने कहा, हम गाजा से इजराइल पर दागे जा रहे रॉकेट की निंदा करते हैं जिससे कई आम नागरिकों की मौत हुई है। दुर्भाग्य से भारत ने भी अपना एक नागरिक इन रॉकेट हमलों में इजराइल के अश्केलोन में रहने वाली नर्स सौम्या संतोष को खोया है। तिरुमूर्ति ने कहा कि गाजा पर जवाबी हमले में भी मौतें एवं विध्वंस हुआ है। उन्होंने कहा, हिंसा की मौजूदा कड़ी में हम भारतीय नागरिक सहित निर्दोष लोगों की जान जाने से शोकाकुल हैं। हम एक बार फिर उकसावे, हिंसा और विध्वंस की सभी कार्रवाई की निंदा करते हैं। भारत ने जोर देकर कहा कि हाल की घटनाओं ने एक बार फिर तत्काल इजराइल और फलस्तीन के बीच संवाद को बहाल करने की जरूरत को रेखांकित किया है।

बेरुत में एक लेबनानी समूह ने एक कार से वोट देने जा रहे सीरियाई लोगों पर हमला बोल दिया।

टीका नहीं लेने वालों के लिए खतरनाक है भारतीय वैरिएंट

लंदन, (एजेंसी)। भारतीय कोरोना वैरिएंट उन लोगों में जंगल की आग की तरह फैल सकता है जिन्होंने अबतक कोरोना का वैक्सीन नहीं लगवाया है। यह चेतावनी दी है ब्रिटेन के स्वास्थ्य सचिव मैट हैनकॉक ने। उन्होंने बताया कि बोल्टन और ब्लैकबर्न जैसे इलाकों में कोरोना के वायरस तेजी से फैल रहे हैं। हालांकि उन्होंने संतोष जताया कि मौजूदा वैक्सीन बेहतरीन है और वर्तमान टीके वैरिएंट के खिलाफ प्रभावी हैं।

हैनकॉक ने उन लोगों से आग्रह किया जो टीकाकरण के लिए पात्र हैं, लेकिन उन्होंने अभी तक वैक्सीन लगवाने के लिए अपॉइंटमेंट बुक नहीं किया, ऐसे भी लोग जल्द से जल्द टीका लगवा लें। नवीनतम आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, ब्रिटेन में 3. 6 करोड़ से अधिक लोगों को कोरोनावायरस वैक्सीन का पहला जैब दिया गया है। पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड (पीएचई) ने कहा कि ब्रिटेन में बी 1617.2 के रूप में जाना जाने वाला संक्रमण पिछले सप्ताह पीएचई द्वारा दर्ज 520 मामलों से दोगुना से अधिक 1313 हो गया है। हालांकि, हैनकॉक ने कहा कि सोमवार को लॉकडाउन में ढील की योजना अभी भी आगे बढ़ेगी। हैनकॉक के अनुसार, 14 जून को एक निर्णय की घोषणा की जाएगी कि क्या देश 21 जून को अंतिम चरण में आगे बढ़ेगा, जब सामाजिक संपर्क की सभी कानूनी सीमाओं को हटाने की उम्मीद है।

सोमवार से इंग्लैंड में पब, बार और रेस्तरां को घर के अंदर खोलने की अनुमति होगी, जबकि इनडोर मनोरंजन भी फिर से शुरू होगा, जिसमें सिनेमा, संग्रहालय और बच्चों के खेलने के क्षेत्र शामिल हैं। इंग्लैंड में लोगों को अधिकतम 30 लोगों के समूह में बाहर मिलने और छह या दो परिवारों के समूहों में घर के अंदर मिलने की अनुमति होगी। लेकिन ब्रिटेन के स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने चेतावनी दी कि लॉकडाउन में ढील के अगले चरण को अत्यंत सावधानी के साथ इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

डॉक्टर की सलाह पर ही लें स्टेरॉइड : सत्येंद्र जैन

खून में शुगर बढ़ने और स्टेरॉइड लेने से हो रहा है ब्लैक फंगस

नई दिल्ली (आनंद राय) । दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने कहा कि दिल्ली में ब्लैक फंगस के अब तक 197 मामले आए हैं, जिसमें कुछ मरीज दिल्ली के बाहर के भी शामिल हैं।

उन्होंने डॉक्टर की सलाह पर ही स्टेरॉइड लेने की अपील करते हुए कहा कि खून में शुगर बढ़ने और स्टेरॉइड लेने से इम्युनिटी कम होने पर ब्लैक फंगस हो रहा है। जिन कोरोना मरीजों को इलाज के दौरान स्टेरॉइड दिया गया है, वे इसके बंद होने के बाद एक सप्ताह तक सतर्क रहें और घर से बाहर न निकलें। ब्लड शुगर जब बढ़ता है, तो वायरस, फंगस और बैक्टीरिया बहुत तेजी से हमला करते हैं। दिल्ली समेत पूरे देश में ब्लैक फंगस की दवा की किल्लत है। यह दवा केंद्र सरकार के नियंत्रण में है और राज्य को कोटे के मुताबिक दवा दे रही है। इस बार कोरोना पीड़ित बच्चों के ज्यादा मामले नहीं आए हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक अगली लहर बच्चों को अधिक प्रभावित कर सकती है। श्री जैन ने कहा कि दिल्ली में संक्रमण दर घटकर 5.5 फीसदी आ गई है और अस्पतालों में 16,712 कोविड बेड व 1748 आईसीयू बेड खाली हैं। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने कहा कि दिल्ली में 20 मई को 3231 कोरोना संक्रमण के मामले आए थे, जबकि संक्रमण दर 5.5 फीसदी रही है। दिल्ली में पहले जहां अधिकतम मामले 28,000 तक पहुंचे थे, वह अब घटकर तीन हजार के करीब आ गए हैं। इसके अलावा, संक्रमण दर 36 फीसदी से कम होकर 5 फीसदी के करीब रह गई है। यह थोड़ी सी राहत की बात है, लेकिन इसे बिल्कुल भी हल्के में न लें। दो-तीन महीने तक कोरोना के केस बिल्कुल नहीं आए थे, लेकिन फिर अचानक से बढ़ गए। हमें अभी भी 3 हजार मामले कम लग रहे हैं, क्योंकि 28 हजार से ये कम होकर यहां तक आए हैं। दिल्ली में जब 200-300 मामले आ रहे थे, तब एक हजार मामले भी हमें बहुत ज्यादा लग रहे थे। ऐसे में तीन हजार मामले कम नहीं होते हैं। सभी को कोरोना गाइडलाइंस का पालन करना है और लॉकडाउन में घर से बाहर निकलने से बचे। यदि सब्जी- राशन सहित कुछ जरूरी सामान लेने जाएं, तो मास्क लगाएं और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें। उन्होंने कहा कि दिल्ली में ब्लैक फंगस के 19 मई तक सभी सरकारी और निजी अस्पतालों में 197 मामले आए हैं।

दिल्ली में ब्लैक फंगस के अब तक 197 मामले सामने आए

दिल्ली में संक्रमण दर 5 फीसदी से नीचे

नई दिल्ली। कोरोना के मद्देनजर दिल्ली की स्थिति अब पटरी पर लौटती दिख रही है। कोरोना संक्रमण दर में शुक्रवार को बड़ी गिरावट देखी गई। राजधानी में संक्रमण की दर आज 4.76 फीसदी हो गई जो 4 अप्रैल के बाद सबसे कम है। हालांकि मामले तो कम आ रहे हैं लेकिन मौतों का आंकड़ा डरावना ही है। वहीं सक्रिय मरीजों की दर भी आज घटकर 2.52 फीसदी हो गई है। यह 6 अप्रैल के बाद से सबसे कम है। 6 अप्रैल को भी यहदर 2.52 फीसदी थी। हालांकि चिंता की बात यह है कि हर दिन बड़ी संख्या में कोरोना से मौतें हो रही है। बीते 24 घंटे में ही 252 मरीजों ने कोरोना से जान गंवाई है। कोरोना रिकवरी की बात करें तो आज यह दर 96 फीसदी के करीब पहुंच गई है। दिल्ली में शुक्रवार को रिकवरी दर 95.85 फीसदी रही, जो 5 अप्रैल के बाद से सबसे ज्यादा है। 5 अप्रैल को यह दर 96.22 फीसदी थी। वहीं टेस्ट का आंकड़ा बीते दिन की तुलना में बढ़ा है।

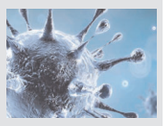

राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर दिल्ली कांग्रेस ने शुरू की फ्री एम्बुलेंस

जरूरतमंदों के बीच दिल्ली के शहरी और ग्रामीण इलाकों में वितरित की जाएगी राहत सामग्री

(एजेंसी)

नई दिल्ली। दिल्ली में लोगों की मदद करने के लिए दिल्ली कांग्रेस ने पूर्व प्रधानमंत्री राजवी गांधी की पुण्यतिथि के मौके पर बड़े स्तर पर राहत व सेवा कार्य शुरू किया है। प्रदेश अध्यक्ष अनिल चौधरी ने सेवा कार्य की शुरुआत फ्री एम्बुलेंस सेवा को झंडी दिखाकर किया। वहीं दवाइयां, मेडिकल किट, ऑक्सीजन सिलेंडर, ऑक्सीजन कन्सेंट्रेटर, सैनीटाइजर, स्टीम मशीन, साबुन, मास्क इत्यादि प्रमुख शामिल है जो वितरित किया जाएगा। चौधरी अनिल कुमार ने कहा कि जरूरतमंदों के बीच दिल्ली के शहरी और ग्रामीण इलाकों में राहत सामिग्रियों को वितरित किया जाएगा। अस्पतालों में जरूरतमंद मरीजों व उनके परिजनों को रसोई के माध्यम से मुफ्त पका हुआ पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की शुरुआत भी की गई है। चौथी लहर के दौरान अप्रैल मई में दिल्ली में देश में सबसे अधिक मौतें हुईं। लोगों ने त्रासदी देखी। कांग्रेस ने बड़े स्तर पर राहत व सेवा कार्य सोनिया गांधी के निर्देश व राहुल गांधी के मार्गदर्शन में शुरू किया।

जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री वितरित

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर जिला कृष्णा नगर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गुरचरन सिंह राजू ने अपने निवास पर जरूरतमंदों को राशन और चाचा नेहरू अस्पताल गीता कॉलोनी एवं हेडगेवार अस्पताल में मरीजों के बीच खाद्य सामग्री मास्क सैनिटाइजर एवं भोजन वितरित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की । बीएन झा ने बताया कि जनसेवक के रूप में राजू एवं उनके पुत्र शिवम निरंतर लोगों की सेवा में लगे रहते हैं।

संक्षिप्त खबर

केबिनेट मंत्री ने पोषक आहार की गुणवत्ता व मात्रा की जांच की

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्री राजेंद्र पाल गौतम ने समेकित बाल विकास योजना आईसीडीएस के तहत दिए जाने वाले पोषण आहार की गुणवत्ता और मात्रा की जांचने के लिए विश्वास नगर की युधिष्ठिर गली और त्रिलोकपुरी के ब्लॉक 10 और 11 में घर-घर जाकर निरीक्षण किया। मंत्री राजेंद्र पाल गौतम लॉकडाउन के दौरान पहले भी पोषण आहार की जांच के लिए कई इलाकों का औचक निरीक्षण कर चुके हैं। स्थानीय विधायक रोहित मेहरोलिया के साथ औचक निरीक्षण करने पहुंचे कैबिनेट मंत्री राजेंद्र पाल गौतम ने इन इलाकों में घर-घर जाकर आईसीडीएस के तहत मिल रहे पोषण आहार की मात्रा और गुणवत्ता की जांच पड़ताल की।

'लिंचिंग में मारे गए आसिफ के मामले की सुनवाई फास्ट ट्रैक हो'

नई दिल्ली। हरियाणा के नूह जिले के खेड़ा खलीलपुर निवासी मुहम्मद आसिफ की 16 मई की रात को कुछ उपद्रवी तत्वों ने पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। यह घटना अत्यंत निंदनीय है। सरकार की ओर से सजा ना देना या सजा में देरी के कारण ऐसी घटनाओं को बार बार दोहराया जा रहा है। ये विचार नूह से लौटे कलीमुल हफीज़, अध्यक्ष, दिल्ली एआईएमआईएम ने प्रेस को जारी एक बयान में व्यक्त किए । दिल्ली मजलिस अध्यक्ष कलीमुल हफ़ीज़ ने मजलिस के प्रतिनिधिमंडल के साथ गुरूवार खेड़ा खलीलपुर का दौरा किया था । कलीमुल हफीज़ ने क़त्ल कर दिए गए मुहम्मद आसिफ के पिता जाकिर साहब के साथ शोक व्यक्त करते हुए कहा कि दुख की इस घड़ी में दिल्ली मजलिस उनके परिवार के साथ है, दोषियों को सजा दिलाने में हम आपके साथ हैं। हम पूरा सहयोग देंगे।

रेमडेसिविर देने का झांसा देकर लोगों से ठगी करने वाला गिरफ्तार

नई दिल्ली। द्वारका जिला पुलिस की स्पेशल स्टाफ की टीम ने ठगी के आरोप में नाइजीरियाई नागरिक को गिरफ्तार किया है। आरोपी चियूइकेम डेनियल 41 कोरोना महामारी के दौरान रेमडेसिविर इंजेक्शन देने का झांसा देकर लोगों से ठगी कर रहा था। पुलिस ने उसके पास से दो लैपटॉप, आठ मोबाइल फोन, 25 मोबाइल व बेसिक कीपैड, 18 सिम कार्ड, 7 एटीएम कार्ड, दो पेन ड्राइव, दो इंटरनेट डोंगल और 50 हजार रुपए नगदी बरामद किया है। पुलिस उपायुक्त संतोष कुमार मीणा ने बताया कि इंस्पेक्टर नवीन कुमार की टीम मोहन गार्डन थाने के एक ठगी के मामले की जांच कर रही थी। मोसीन खान नामक शख्स ने हाल ही में 10 हजार रुपए ठगी की शिकायत दर्ज करवाई थी।

पूर्व पीएम राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर नई दिल्ली में भारतीय युवा कांग्रेस द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर।

ओलंपियन सुशील को है कुख्यात बदमाश काला जठेड़ी से जान का खतरा, भाग सकता है नेपाल

नई दिल्ली । जूनियर पहलवान सागर की हत्या में मुख्य आरोपित ओलंपियन सुशील कुमार भागकर नेपाल भी जा सकता है, क्योंकि उसे कुख्यात बदमाश काला जठेड़ी से जान को खतरा है। फिलहाल जहां दिल्ली पुलिस सुशील कुमार की तलाश में जगह-जगह छापेमारी कर रही हैं, वहीं बदमाश काला जठेड़ी भी उसके पीछे पड़ा है। मिली जानकारी के मुताबिक, पुलिस को आशंका है कि वह नेपाल चला गया है, क्योंकि उसे कुख्यात बदमाश काला जठेड़ी से जान को खतरा है। चार मई की रात को सुशील और उसके साथियों ने सागर के साथ-साथ सोनू नाम के युवक के साथ मारपीट व अमानवीय हरकतें की थीं। बाद में इन्हें मालूम हुआ कि सोनू, काला जठेड़ी के सगे मामा का बेटा है। ऐसे में जठेडी गैंग भी सुशील से नाराज है और गैंग के बदमाश भी उसकी तलाश कर रहे हैं।

सुशील को मिली है काला जठेड़ी से जान से मारने की धमकी

बताया जाता है कि काला जठेड़ी ने सुशील की हत्या की बात कही थी। इससे डर कर सुशील ने उसे फोन कर समझौते की पेशकश की थी। फिलहाल समझौता नहीं हो पाया है। उससे समझौता होने के बाद ही गिरफ्तारी हो, सुशील इसी फिराक में है।

मेरठ टोल पर देखा गया ओलंपियन सुशील कुमार

मॉडल टाउन स्थित छत्रसाल स्टेडियम में चार मई की देर रात पहलवान सागर धनखड़ की हत्या के मामले में फरार चल रहे ओलंपियन सुशील कुमार की एक सीसीटीवी फुटेज गुरुवार को वायरल हुई है। यह फुटेज मेरठ टोल प्लाजा की है। जिसमें वह सफेद रंग की कार से टोल प्लाजा से गुजरता हुआ दिखाई दे रहा है। फुटेज में वह चालक के बगल में मास्क लगाकर बैठा हुआ नजर आ रहा है। पुलिस के अनुसार यह फुटेज छह मई की है।

बताया जा रहा है कि 4 मई को छत्रसाल स्टेडियम में हुए खून खराबे के बाद सुशील पांच मई को हरिद्वार चला गया था। लेकिन फिर वह वापस दिल्ली की तरफ रवाना हो गया। फुटेज दिल्ली वापसी की है। इस बीच गुरुवार को भी पुलिस की कई टीमें आरोपित सुशील कुमार की तलाश में एनसीआर के विभिन्न जगहों पर छापेमारी करती रहीं, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिल सका है।

सुशील कुमार पर दिल्ली के छत्रसाल स्टेडियम में 4 मई की रात को हुई जूनियन पहलवान सागर धनखड़ की हत्या में शामिल होने का आरोप है, तभी से सुशील कुमार फ़रार हैं. किसी को नहीं पता कि सुशील कुमार कहां हैं। वहीं, दिल्ली पुलिस ने सुशील कुमार को सागर हत्याकांड में मुख्य आरोपित बनाया है।

लड़कियों और महिलाओं को बनाता था निशाना, अब चढ़ा दिल्ली पुलिस के हत्थे

नई दिल्ली । दिल्ली पुलिस के साउथ जिला पुलिस ने एक ऐसे इटरस्टेट स्नेचर को दबोचा है जो महिलाओं और लड़कियों को ही स्नैचिंग के लिए निशाना बनाता था. दिल्ली पुलिस के संगम विहार थाना पुलिस टीम ने इस स्नेचर से चोरी की बाइक के साथ-साथ 10 स्नैचिंग के मोबाइल भी बरामद किए हैं. पुलिस अब इसके साथी की तलाश में जुटी है. पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर कई मामले सुलझाने का दावा भी किया है.

साउथ जिला पुलिस उपायुक्त अतुल कुमार ठाकुर ने बताया कि 16 मई को एक पीसीआर कॉल प्राप्त होने के बाद संगम विहार थाने में एक मामला दर्ज किया गया था. इस मामले में पीड़ित लड़की ने बताया था कि जब वह केमिस्ट की दुकान में जा रही थी तो उसकी गली में दो लड़के बाइक पर आए और उसका मोबाइल फोन छीन कर फरार हो गए.

इस सूचना के मिलते ही एसीपी संगम विहार की देखरेख में एसएचओ संगम विहार विजय पाल के निर्देश पर एसआई विकास सांगवान, हैड कांस्टेबल रवि, रविंदर कांस्टेबल बलकार की टीम ने आरोपी व्यक्तियों की उपस्थिति के बारे में जानकारी एकत्र कर सीसीटीवी फुटेज की मदद से एक बाइक को देखा जिसका नंबर स्पष्ट नहीं था. टीम ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर स्नैचरों की पहचान इस्माइल ञ मोटा (29) और काल के रूप में की. इसके बाद टीम ने अपना जाल बिछाकर आरोपी इस्माइल को गिरफ्तार कर लिया.

पुलिस ने उसकी निशानदेही पर उसके घर से स्नैचिंग के 10 मोबाइल फोन बरामद किए हैं. पूछताछ में पता चला है कि उसने संगम विहार, तिगरी, गोविंदपुरी, बदरपुर बॉर्डर, पल्ला और फरीदाबाद क्षेत्र में कई स्नैचिंग की है. पुलिस पूछताछ में उसने बताया कि वह अपने दोस्त काल के साथ स्नैचिंग करता था, जिसके पास एक चोरी की बाइक भी है. वे केवल महिलाओं/लड़कियों को ही निशाना बनाते थे. इस्माइल उर्फ मोटा हत्या, स्नैचिंग, सेंधमारी, आर्म्स एक्ट आदि के कई मामलों में संलिप्त पाया गया है. वह पीएस संगम विहार का बीसी भी है. सह आरोपी जाहिद उर्फ काल की तलाश जारी है.

'आप' बताए दिल्ली में कहां सील हुई दुकानें : जय प्रकाश

नई दिल्ली (संवाददाता)। उत्तरी दिल्ली के महापौर जय प्रकाश ने आज आम आदमी पार्टी के प्रवक्ता दुर्गेश पाठक द्वारा दिल्ली नगर निगम पर दुकानों को सील करने के लगाए गए आरोपो का खंडन करते हुए कहा है कि जब दिल्ली में पिछले एक महीने से लॉकडाउन लगा हुआ है तो कहां पर दुकानें सील हुई ये आम आदमी पार्टी बताए। जय प्रकाश ने कहा कि आम आदमी पार्टी हमेशा झूठ की राजनीति करती है ये लोग दूसरों पर बिना तथ्यों के आरोप लगाते है। उन्होंने कहा कि पिछले एक महीने से भी ज़्यादा समय से दिल्ली में लॉकडाउन लगा हुआ है ऐसे में जब सभी मार्केट सभी दुकानें बंद है तो कहाँ पर ये सीलिंग की गई इसकी भी जानकारी आम आदमी पार्टी को देनी चाहिए थी।उन्होंने कहा कि आम आदमी के आरोप हमेशा तथ्यहीन और सच्चाई से परे होते हैं। इन लोगों को दूसरों पर झूठे आरोप लगाकर राजनीति चमकाना होता है। महापौर जय प्रकाश ने कहा कि एक तरफ़ जहाँ दिल्ली सरकार की अव्यवस्था के कारण लोग कोरोना महामारी से परेशान है वहीं आम आदमी पार्टी दिल्ली नगर निगम पर झूठे आरोप लगाकर नागरिकों के बीच एक भ्रम की स्थिति उत्पन्न करना चाहती है। उन्होंने कहा कि दिल्ली नगर निगम कोरोना महामारी की स्थिति में नागरिकों को हर संभव सुविधा प्रदान करने की पूरी कोशिश कर रही है।

दिल्ली के दो अलग-अलग इलाकों में हुई फायरिंग, 2 शख्स को गोली मारकर बदमाश फरार

नई दिल्ली । दिल्ली के मंगोलपुरी और महिंद्रा पार्क इलाके में शुक्रवार देर रात्रि को दो युवकों को अज्ञात बदमाशों ने गोली मारकर घायल कर दिया. दोनों ही वारदात में आरोपी गोली मारकर फरार हो गये. पुलिस ने दोनों घटनाओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है. साथ ही सीसीटीवी फुटेज भी कब्जे में लेकर आरोपियों की पहचान करने में जुट गई है.

जानकारी के मुताबिक मंगोलपुरी वाई ब्लॉक में रात्रि करीब 8.15 बजे पुलिस को किसी युवक को गोली मारने की सूचना मिली थी. सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और वारदात वाली जगह पर सड़क पर खून पड़ा मिला. पुलिस घायल युवक को संजय गांधी अस्पताल ले गई जहां से परिजन घायल को जयपुर गोल्डन अस्पताल ले गये.

घायल की पहचान मो. जफर उर्फ आरिफ के रूप में हुई. वह आई ब्लॉक में परिवार के साथ रहता है. आरोपी कौन है, उसको क्यों गोली मारी गई है. अभी इसके बारे में पता नहीं चल सका है.

पुलिस के आला अधिकारी शुरुआती जांच में स्कोर पुरानी रंजिश के रूप में देख रहे हैं. बताया जाता है कि पिछले साल घायल युवक के बड़े भाई शाहनवाज़ उर्फ नवासा ने मंगोलपुरी के बापू पार्क में चीकू नाम के युवक को साथियों के साथ मिलकर बुरी तरह से मारा था. उसकी चाकू और गोलियां मारकर हत्या कर दी गई थी. जिसमें आरोपी को उसके कुछ साथियों के साथ पुलिस ने गिरफ्तार भी कर लिया था. उसी हत्या का बदला लेने को लेकर भी पुलिस इस मामले की जांच कर रही है.

उधर, महेंद्रा पार्क इलाके में एक शख्स को गोली मारकर घायल करने का मामला सामने आया है.घायल की पहचान शाह आलम के रूप में हुई है. वह आई ब्लॉक जहांगीरपुरी इलाके में परिवार के साथ रहता है. शाह आलम जब चाय की दुकान पर बैठा हुआ था. मुंह पर मास्क लगाकर एक अज्ञात शख्स आया और पास से शाह पर गोली चलाई. एक गोली उसकी कमर में लगी. वारदात के बाद आरोपी पैदल ही फरार हो गया. शाह को नजदीक के बाबू जगजीवन राम अस्पताल में भर्ती करवाया गया. डॉक्टरों ने उपचार के बाद उसकी हालत स्थिर बताई.

दिल्ली में बढ़ेगा लॉकडाउन या फिर होगा छूट का एलान, उपराज्यपाल-सीएम की बैठक के बाद होगा फैसला

नई दिल्ली । राजधानी दिल्ली में 24 मई को सुबह 5 बजे तक लॉकडाउन है, लेकिन कोरोना वायरस संक्रमण के मामलों में तेजी से कमी आने के चलते लोग आम आदमी पार्टी सरकार से राहत की उम्मीद करने लगे हैं। दरअसल, दिल्ली में जहां संक्रमण दर 5 फीसद के आसपास आ गई है तो 24 घंटे में कोरोना के 3000 से कम मामले सामने आ रहे हैं। ऐसे में लोगों को उम्मीद है कि शनिवार या फिर रविवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल लॉकडाउन खत्म करने के साथ कुछ सख्त पाबंदियों के साथ बाजार और दफ्तर खोलने का एलान कर सकते हैं। लोगों का कहना है कि एक महीने के दौरान कामकाज, रोजगार का बहुत नुकसान हो चुका है। खासकर लोग मेट्रो सेवाओं को सामान्य करने की मांग करने लगे हैं।

पत्रकारों के सवाल के जवाब में सीएम अरविंद केजरीवाल ने जवाब दिया था कि वह उपराज्यपाल अनिल बैजल के साथ चर्चा के बाद ही इस पर कोई निर्णय लेंगे। उन्होंने कहा कि वह लॉकडाउन प्रतिबंधों में ढील की संभावना समेत राजधानी दिल्ली में कोरोना वायरस संक्रमण की स्थिति पर उपराज्यपाल अनिल बैजल के साथ चर्चा करेंगे। ऐसे में माना जा रहा है कि दिल्ली के सीएम और अरविंद केजरीवाल के बीच शनिवार को अहम बैठक हो सकती है, इसके बाद अरविंद केजरीवाल लॉकडाउन बढ़ाने या फिर इसमें कुछ ढील देने का एलान कर सकते हैं।

तीसरी लहर के लिए दिल्ली तैयार

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि उनकी सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए पूरी तैयारी कर रही है कि दूसरी लहर के दौरान लोगों को जिन समस्याओं और कमियों का सामना करना पड़ा, वे तीसरी लहर आने पर दोहराई न जाएं। अधिकारियों की एक कमेटी बनाई गई है जो तीसरी लहर से निपटने के लिए तैयार किए जाने वाले ऑक्सीजन और आईसीयू बेड जैसी तैयारियों पर व्यापक दिशानिर्देश तैयार करेगी।

बता दें कि दिल्ली में पहली बार गत 19 अप्रैल से लॉकडाउन लगाया गया था, जिसे हालात देखते हुए समय-समय पर 24 मई तक के लिए बढ़ा दिया गया है। इस दौरान केवल आपातकालीन और आवश्यक सेवाएं ही खुली हैं। वहीं, कोरोना के मामलों में कमी आने के चलते अब लॉकडाउन में ढील देने की मांग उठने लगी है।

डीपीसीसी अध्यक्ष चौ. अनिल कुमार ने नई दिल्ली में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की 30वीं पुण्यतिथि के अवसर पर मास्क, सैनिटाइज़र और अन्य चिकित्सा उपकरण वितरित किए।

संपादकीय

संकट के समय में सामाजिक संगठन

कहते हैं, इतिहास खुद को दोहराता है। अगर हम एक सदी पहले फैली महामारी स्पेनिश फ्लू की तुलना कोविड-19 से करें, तो कई मामलों में सचमुच ऐसा ही लगता है। बावजूद इसके कि इस बीच विज्ञान और शासन-विज्ञान ने काफी तरक्की कर ली है। निस्संदेह, सन 1918 की स्पेनिश फ्लू की त्रासदी ज्यादा बड़ी थी। वह कितनी भयावह थी, इसका अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि उसके बाद जब 1921 में देश में जनगणना हुई, तो 1911 की जनगणना के मुकाबले आबादी कम हो गई थी। पूरे भारतीय इतिहास में इसके पहले या बाद में ऐसा कभी नहीं हुआ। इसे छोड़ दें, तो उस त्रासदी के कई सबक बहुत महत्वपूर्ण हैं। एक तो सरकार उस त्रासदी की भयावहता का सामना करने में पूरी तरह से अक्षम साबित हुई थी। लेकिन दूसरी चीज ज्यादा महत्वपूर्ण है कि उस दौरान बहुत से सामाजिक संगठन सामने आए थे और उन्होंने तकरीबन पूरे देश में लोगों की वास्तविक मदद की थी। इनमें से ज्यादातर के नाम और काम हम नहीं जानते, क्योंकि वे कहीं भी किताबों में दर्ज नहीं हैं। लेकिन कुछ नाम जो सामने आते हैं, वे हमारी सामाजिक चेतना और सेवा-भावना की सही तस्वीर हमारे सामने रखते हैं। फिलहाल हम ऐसे तीन नामों का जिक्र करेंगे, जिनकी कहानी बताती है कि बड़ी त्रासदी के वक्त हमारा समाज उसका मुकाबला कैसे करता है। इनमें से पहले दो नाम दो भाइयों के हैं- कल्याणजी मेहता और कुंवरजी मेहता। और तीसरा नाम है दयालजी देसाई का। ये तीनों नाम गुजरात के हैं, लेकिन जो चीज इन्हें आपस में जोड़ती है, वह है गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के प्रति समर्पण। इसी वजह से ये तीनों 1918 के खेड़ा सत्याग्रह में भी शामिल हुए थे। तीनों कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में भी शामिल हुए थे। मेहता बंधु सरकारी अधिकारी थे और दोनों ने एक साथ नौकरी छोड़कर अपना आश्रम स्थापित किया, जो आज भी मौजूद है। उन्होंने पटीदार युवा मंडल की स्थापना करके युवाओं को संगठित करने की कोशिश की और अपने आश्रम में युवाओं को राष्ट्रवाद की शिक्षा दी। दूसरी तरफ, दयालजी देसाई ने भी इन्हीं कामों को अपने ढंग से शुरू किया और उनके आश्रम में भी युवाओं को राष्ट्रवादी बनाने का काम किया गया। स्पेनिश फ्लू महामारी के फैलते ही ये तीनों अपने-अपने ढंग से सक्रिय हो गए। इन तीनों के पास अच्छी संख्या में समर्पित युवा थे और दरअसल, वही उनकी ताकत बने। दो काम सबसे जरूरी थे, लोगों को महामारी के प्रति जागरूक बनाना और उन तक दवा पहुंचाना। इसके लिए वे घर-घर गए। दयालजी देसाई के बारे में कहा जाता है कि वह साइकिल पर बैठकर खुद गांव-गांव जाते थे। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि वह लोगों को कौन सी दवा देते थे? स्पेनिश फ्लू की तब तक कोई दवा नहीं थी। ज्यादा संभावना यही है कि उन्होंने कोई आयुर्वेदिक दवा ही लोगों को दी होगी। वह दवा कितनी कारगर थी हम नहीं जानते, लेकिन एक मुश्किल दौर में उन्होंने जिस तरह से समाज को जोड़कर रखने का काम किया, वह ज्यादा महत्वपूर्ण है। इन तीनों ने जो सबसे महत्वपूर्ण काम किया, वह था महामारी में मारे गए लोगों के अंतिम संस्कार की व्यवस्था करना। तमाम अफवाहों और अज्ञात भय के बीच लोग उस समय अपने परिजनों के पार्थिव शरीर को वैसे ही छोड़कर चले जाते थे। इनकी पहल ने धीरे-धीरे लोगों के भ्रम दूर किए और फिर लोग अपने परिजनों के अंतिम संस्कार के लिए खुद आगे आने लगे। एक सदी बाद आज फिर से इन चीजों को याद करना इसलिए जरूरी है कि इस बार भी देश भर में जिस तरह से विभिन्न सामाजिक संगठन लोगों की मदद के लिए सामने आए, वह बताता है कि कठिन दौर में समाज को जोड़े रखने का हमारा जज्बा अब भी पहले की तरह बरकरार है। जब पूरा देश मरीजों के लिए ऑक्सीजन के संकट से जूझ रहा था, तब जिस तरह से ऑक्सीजन का लंगर चलाया गया, वह बताता है कि सेवा-भावना ही नहीं, बल्कि लोगों तक सेवा पहुंचाने की हमारी रचनात्मकता भी किसी से कम नहीं है।

कोविड-19 के संकट ने यह भी बताया है कि हमारी सरकारें भले त्वरित कार्यबल, त्वरित कार्यवाही जैसी बातें करती हों, लेकिन वे सब आखिर में नौकरशाही के जाल में फंसकर रह जाती हैं। लोगों को त्वरित राहत देने का काम, सीमित संसाधनों के बावजूद जिस तेजी और जिस सटीकता से हमारे सामाजिक संगठन कर सकते हैं, सरकारें उसके बारे में सोच भी नहीं सकतीं। इसलिए इन प्रयासों की जितनी तारीफ की जाए, कम है। लेकिन एक दूसरा सच यह है कि इस तरह के प्रयास चाहे जितने भी हों, वे सरकार की भूमिका के विकल्प नहीं बन सकते। हम 21वीं सदी के जिस दौर में हैं, उसमें उम्मीद की जाती है कि राज्य कल्याणकारी होगा और संकट या किसी भी आम समय में लोगों तक किसी भी तरह की राहत पहुंचाने का काम अंत में सरकारों को ही करना होगा। दुर्भाग्य से, जिस समय हम अपने सामाजिक संगठनों को लेकर गर्व महसूस कर रहे हैं, सरकारों के बारे में हमारी धारणा ऐसी नहीं बन पा रही। यह दुर्भाग्य इसलिए भी बड़ा है कि एक सदी पहले इस देश में जो सरकार थी या जो राज्य था, महामारी आने पर उसके हाथ-पांव फूल गए थे। बेशक, हालात अब उतने बुरे नहीं हैं। तमाम अदालती कोशिशों और लोगों के दबाव के कारण सरकारों को सक्रिय होना पड़ा है, और राहत भी कुछ लोगों तक पहुंचनी शुरू हुई है। लेकिन सच यही है कि समस्या जितनी बड़ी है, उसके मुकाबले सरकार की तैयारियां और उसके संसाधन काफी कम साबित हुए हैं। कम या ज्यादा, कमोबेश यही स्थिति एक सदी पहले भी थी। या हो सकता है कि उस समय तैयारियां व संसाधन और भी भीषण रूप से कम रहे हों। हो सकता है कि एक सदी में यह अनुपात काफी हद तक बदल गया हो; लेकिन जरूरत इस अनुपात को ही नहीं, इसकी गुणवत्ता को बदलने की थी। स्वास्थ्य-सेवा के मामले में एक यही चीज नहीं बदली। अब पहली प्राथमिकता इसे बदलने की ही होनी चाहिए।

प्रवीण कुमार सिंह

सेहत के प्रति समाज के नजरिये को बदलने का समय

बाजार व सरकार की सुरक्षा में सारा जोर भौतिक संसाधन पर रहता है, उसमें भावना का पक्ष काफी कमजोर रहता है। वहीं, इंटरनेट मीडिया पर बहते ज्ञान की धारा में डूबते उतराते व्यक्ति की सांस फूलने लगती है। शहरों के मुकाबले गांव में बेहतर स्थिति ने रेखांकित किया है कि हमें शहर निर्माण योजना पर नए सिरे से सोचना होगा। सुखी व खुशहाल जिंदगी के लिए सिर्फ सुविधा ही नहीं, बल्कि स्वच्छ हवा, पानी और आहार के साथ ही स्पेस भी महत्वपूर्ण है। शहरों की योजना बनाते समय उसे उसकी जरूरत के हिसाब से उसकी आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करना बेहद अहम है।

कोरोना ने इस समय केवल भारत को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को झकझोर कर रखा हुआ है। इसकी चोट सीधे सांसों पर पड़ रही है। इसे सहेजने के क्रम में व्यक्ति जिस तरह से अपनी गतिविधियों को समेट रहा है, लगता है जैसे कोरोना केवल अर्थव्यवस्था ही नहीं, जीवन ही लीलने को मुंह बाए है। इसने हमारे सामने ढेर सारे सवाल खड़े किए हैं जो सिर्फ स्वास्थ्य से संबंधित नहीं हैं। इसने हमारी पूरी जीवन शैली और उसके दर्शन की अपर्याप्तता को लेकर सवाल खड़े किए हैं। इस बुरे वक्त में एक बात जो सबसे शिद्दत के साथ महसूस की जा रही है वह यह कि आड़े वक्त में सरकार और बाजार दोनों की तुलना में परिवार व समाज भरोसे के हैं। बाजार को सरकार बनने का मौका देना और भी घातक दिख रहा है। बाजार निर्मम और निराकार है, उसे आपदा की उतनी ही परवाह है जितना उसके हित को प्रभावित करती हो। अगर इस कठिन घड़ी में सबसे बड़ा रक्षा कवच बनकर सामने आया है तो वह है परिवार और सबको अपने परिवार की तरह मानने वाला कुटुंब भाव।

परिवार ही एक ऐसी संस्था है जहां सदस्यों को किसी सेवा को देने के लिए कोई फैसला लेते समय पात्रता, अपात्रता और नफा-नुकसान के बारे में नहीं सोचा जाता है। केवल परिवार के सदस्य होने मात्र से ही आप उच्चतम संरक्षण के अधिकारी होते हैं। स्वास्थ्य को लेकर भी हमें अपनी सोच को बदलने की जरूरत है। रोग क्या है? क्या यह महज देह की सीमा में कैद है या इसका वास्ता देह की सीमा से बाहर भी है। टेलकॉट पारसन जैसे समाजशास्त्रियों ने पहले ही इस पर विचार कर 'सोशियोलॉजी ऑफ डिजीज' की नींव रखी जो आगे

चलकर 'सोशियोलॉजी ऑफ इलनेस एंड हेल्थ' के रूप में विकसित हुई। कोरोना के इस संकट ने पारसन की बात को पुष्ट करते हुए रोग के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम को गहराई से रेखांकित किया है।

इसमें अहम बात यह है कि केवल अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रखकर आप स्वस्थ नहीं रह सकते हैं। रोग के असर का वितरण सामाजिक ताने-बाने व उसकी कार्यात्मक रिश्तेदारी के आधार होता है। 'टोटल हेल्थ' के नए दर्शन के मुताबिक आपके स्वस्थ रहने के लिए यह जरूरी है कि आपके आसपास रहने वाले लोगों के साथ ही आसपास के पशु-पक्षी और पेड़-पौधे भी स्वस्थ हों। आपको अपने परिवेश के हर जीवन के अधिकार व उनके स्वस्थ रहने के अधिकार का सम्मान करना होगा। अपनी सहूलियत के हिसाब से प्रकृति से शिकायत का भाव छोड़कर उसके लय के हिसाब से स्वयं को ढालना सीखना होगा। हमारे यहां तो 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना रही है। यह भाव कितना जरूरी है इसे अब समझा जा रहा है। रोग को लेकर दो तरह के दर्शन हैं। पहले को 'बायोस्टेटिकल थ्योरी ऑफ हेल्थ' कहा जाता है तो दूसरे को 'होलिस्टिक थ्योरी ऑफ हेल्थ' कहा जाता है। पहले के अनुसार एक व्यक्ति को स्वस्थ तब माना जाता है जब उसके सभी प्राकृतिक अंग सामान्य ढंग से कार्य कर रहे हों। यह सामान्य सांख्यिकीय औसत होता है। इसके अनुसार रोग की अनुपस्थिति ही स्वस्थ होने को सुनिश्चित करता है, जबकि 'होलिस्टिक थ्योरी ऑफ हेल्थ' के अनुसार किसी व्यक्ति को स्वस्थ तभी माना जाता है जब वह अपने प्राणाधार जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो। आज सबसे ज्यादा जिस बात को लेकर चर्चा है वह है इम्युनिटी और अक्सर लोग इसके महज जैविक पक्ष पर ही बात करते हैं, जबकि इसके तीनों आयाम जैविक व्यवहारात्मक, सामाजिक संस्थागत संरचना व उनका विन्यास महत्वपूर्ण हैं। कोरोना के समय व्यवहारात्मक व सामाजिक संस्थागत संरचनाओं का महत्व खास तौर पर देखने को आ रहा है। कोरोना से बचने के लिए क्या करना चाहिए इसको लेकर जितने मुंह उतनी बातें हैं। कोरोना ने हमारे चरित्र के खोखलेपन को भी सामने रखा है। यहां हर किसी की फिक्र अपने को बचाने की है और अक्सर रोगी व प्रभावित परिवार को हेय दृष्टि से देखा जा रहा है। संयुक्त परिवार को गैर-जरूरी मान लिया गया है। उसके साथ ही सामाजिक सुरक्षा के दायरे से परिवार जिस तरह से पीछे हटा उस खाली जगह की भरपाई सरकार और बाजार ठीक से कर नहीं पा रहे हैं। बाजार व सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सामाजिक सुरक्षा पात्रता व गुणवत्ता दोनों के मामले में परिवार-समाज द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सुरक्षा निम्न कोटि की है। बाजार जिस तरह से हमारी रसोई को कब्जे में लेने की जुगाड़ में है उसे भी कोरोना ने सामने रखा है। खाना बनाने को गैर जरूरी कौशल मानने की सोच ने कई परिवारों में इस समय भुखमरी जैसे हालात पैदा कर किए। खाने बनाने की जिम्मेदारी जिनकी है वे बीमार हैं और बाहर से कोई मदद नहीं आ सकती तो लोग असहाय हो जा रहे हैं। गांव-समाज में यह परंपरा थी कि कई मौके पर जब आपके घर में चूल्हा नहीं जलना है तो आपके रसोई को चलाने की जिम्मेदारी रिश्तेदारों व पड़ोसियों की होती थी। शहरों में लोग दरवाजा बंदकर अपनी दुनिया में कैद रहना पसंद करते हैं।

बाजार व सरकार की सुरक्षा में सारा जोर भौतिक संसाधन पर रहता है, उसमें भावना का पक्ष काफी कमजोर रहता है। वहीं, इंटरनेट मीडिया पर बहते ज्ञान की धारा में डूबते उतराते व्यक्ति की सांस फूलने लगती है। शहरों के मुकाबले गांव में बेहतर स्थिति ने रेखांकित किया है कि हमें शहर निर्माण योजना पर नए सिरे से सोचना होगा। सुखी व खुशहाल जिंदगी के लिए सिर्फ सुविधा ही नहीं, बल्कि स्वच्छ हवा, पानी और आहार के साथ ही स्पेस भी महत्वपूर्ण है। शहरों की योजना बनाते समय उसे उसकी जरूरत के हिसाब से उसकी आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करना बेहद अहम है।

क्या कभी किसी ने यह सोचा था कि माकपा के नेता अपनी गलत नीतियों से पार्टी को मटियामेट कर देंगे?

यदि कोई पार्टी अपनी गलतियों को जान-समझ ले, उन्हें सार्वजनिक तौर स्वीकार भी कर ले, फिर भी उन्हें सुधारने की कोई गंभीर कोशिश न करे तो उसका क्या हश्र होगा? वही होगा जो सीपीएम यानी माकपा का बंगाल विधानसभा चुनाव में इस बार हुआ। उसे एक भी सीट नहीं मिली। कांग्रेस भी खाली हाथ रही। कांग्रेस को माकपा के हश्र से सबक लेना चाहिए। माकपा और कांग्रेस के कुछ नेतागण अपनी गलत नीतियों के कारण एक दिन पार्टी को मटियामेट कर देंगे, क्या यह कभी किसी ने सोचा भी था? अब बंगाल में राजनीति और चुनाव के मुद्दे बदल चुके हैं। देशहित और प्रदेशहित के उन मुद्दों पर मौजूदा पक्ष और विपक्ष में मजबूती से अड़े रहने वाले दो मजबूत राजनीतिक दल अब आमने-सामने हैं। बंगाल में तीसरे दल के लिए फिलहाल कोई जगह नहीं नजर आती। वर्ष 1977 में पहली बार पूर्ण बहुमत के साथ माकपा बंगाल की सत्ता में आई थी। आपातकाल की पृष्ठभूमि में कांग्रेस के कुशासन से ऊबे लोगों ने वाम मोर्चा का साथ दिया। वाम मोर्चा सरकार ने बटाईदारों को हक दिलाने जैसे कुछ जनपक्षीय काम किए। इससे उसका एक बड़ा वोट बैंक तैयार हुआ। वह वोट बैंक बांग्लादेशी घुसपैठियों से भी बड़ा था। आरंभिक दिनों में माकपा के बड़े नेताओं की सादगीपूर्ण जीवनशैली से भी प्रभावित होने वाले लोग थे, पर धीरे-धीरे उसके अनेक नेता बुर्जुआ दलों के अवगुण अपनाते चले गए। नेतृत्व मूकदर्शक होकर देखता रहा या फिर लाभ भी उठाता रहा। एक समय था जब माकपा के कुछ अच्छे कामों को देखते हुए लोग इस दल के 1962 के चीनपरस्त रवैये के पाप को भूल रहे थे, किंतु एकछत्र सत्ता के दस साल बीतते-बीतते स्थिति ऐसी हो गई कि प्रमुख नेता डॉ. अशोक मित्र को यह कहना पड़ा कि हमारी पार्टी में 18वीं सदी के जमींदारों का चरित्र घर कर गया है। माकपा नेतृत्व ने इस टिप्पणी से सबक लेने से इन्कार किया।

नतीजतन 2009 के लोकसभा चुनाव में पार्टी की बंगाल में भारी पराजय हुई। 2010 में केंद्रीय कमेटी की बैठक में आत्ममंथन किया गया। पार्टी ने माना, 'बुर्जुआ दलों से चुनावी तालमेल नुकसानदेह साबित हो रहा और कुछ सदस्यों के गलत रुझानों ने भी दल को नुकसान पहुंचाया। पार्टी के कुछ लोगों में बेहतर जीवनशैली, व्यक्तिवादिता और करियरपरस्त होने की महत्वाकांक्षा बढ़ी। इससे उनमें सामूहिक रूप से काम करने की प्रवृत्ति घटी। सामूहिकता के अभाव में पार्टी में भ्रष्टाचार और गुटबाजी को बढ़ावा मिला। कई कामरेडों ने अकूत संपत्ति बनाई। शिकायतें आने पर भी उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई।' इन कमियों को स्वीकार करने के बावजूद माकपा ने अपनी राह नहीं बदली।

वैसे भ्रष्टाचार के आरोप तो केरल की माकपा सरकार पर भी हैं, किंतु उसने इस बार अतिरिक्त सांप्रदायिक वोट बैंक हासिल करके गद्दी बचा ली। बंगाल के माकपा नेतृत्व ने बारी-बारी से तीन रणनीतिक गलतियां कीं। केंद्र में मोदी के सत्तासीन हो जाने के बाद ममता बनर्जी अपने राजनीतिक भविष्य के प्रति चिंतित हो गई थीं। उन्होंने अगस्त, 2014 में कहा कि हम वाम दलों से हाथ मिलने को तैयार हैं। हमारे लिए कोई अछूत नहीं है। बिहार की तरह यहां भी गठबंधन बनना चाहिए। तब बिहार में जदयू राजद के साथ था, किंतु माकपा ने ममता के ऑफर को ठुकरा दिया। सवाल है कि जो माकपा हिंदी पट्टी के राज्यों में राजद और सपा के साथ जा सकती है, उसे ममता के साथ जाने में एतराज क्यों था? दरअसल माकपा का अहंकार गया नहीं था। इसके साथ-साथ बांग्लादेशी घुसपैठियों के प्रति माकपा में दो राय रही। 2000 में तत्कालीन मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने कहा था कि प्रदेश के पूर्वोत्तर क्षेत्र के उग्रवादी संगठन आइएसआइ की मदद से गड़बड़ी फैला रहे हैं। भट्टाचार्य ने एक अन्य अवसर पर इस्लामिक आतंकवाद और संदिग्ध मदरसों के खिलाफ भी सार्वजनिक रूप से आवाज उठाई थी। तृणमूल कांग्रेस ने बंगाल में सत्ता पाने के बाद रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों को समर्थन और संरक्षण दिया। नतीजतन जो तबका वाम मोर्चे के साथ था, वह उसके साथ हो गया।

पिछड़ों के आरक्षण को लेकर माकपा की ढुलमुल नीति के कारण 1993 से ही पिछड़े उससे सशंकित थे, पर उसके अन्य गुणों के कारण जनता ने उसे लगातार 34 साल तक सत्तासीन रखा। जब मंडल आरक्षण 1993 में लागू हुआ तो माकपा की तत्कालीन बंगाल सरकार ने कहा कि हमारे यहां कोई जातिवाद नहीं है। उसने मंडल आरक्षण लागू नहीं किया, पर जब 2009 के लोकसभा चुनाव में माकपा की भारी हार हुई तो उसे समझ आया कि आरक्षण को लेकर कुछ करने की जरूरत है। फिर बुद्धदेव सरकार ने 2010 में आधा-अधूरा और डंडीमार आरक्षण लागू किया। इस कारण माकपा को लाभ कम, हानि ज्यादा हुई। बंगाल की सरकारी नौकरियों में पहले से पिछड़ों के लिए सात प्रतिशत आरक्षण था। इसे बढ़ाकर वाम सरकार ने 17 प्रतिशत कर दिया। इसमें भी मुस्लिम वोट बैंक हावी रहा।

विपक्षी एकता की कवायद

शिवसेना सांसद संजय राउत ने एक बार फिर कहा है कि विपक्षी दलों का एक मजबूत मोर्चा वक्त की जरूरत है। यह बात पहले से कही जा रही थी कि पांच राज्यों में चुनाव के नतीजे अच्छे रहे तो विपक्षी दलों को नए सिरे से संगठित करने की कोशिश हो सकती है। खास तौर पर पश्चिम बंगाल में बीजेपी की उम्मीदों को झटका देते हुए ममता बनर्जी ने जो अप्रत्याशित जीत दर्ज की, उससे विपक्ष का हौसला बढ़ा है। हालांकि राउत ने जो कहा है, उससे यह बात तय हो गई है कि इस संभावित विपक्षी मोर्चे की नेता के तौर पर ममता बनर्जी का नाम तय मानकर नहीं चला जा सकता। राउत पहले इसके लिए एनसीपी के शरद पवार का नाम ले चुके हैं। इस बार उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन कुछ ऐसा भी नहीं कहा, जिससे लगे कि उनकी पार्टी अपनी इस राय से पीछे हटी है। दूसरी तरफ कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंघवी ने यह तो माना कि बीजेपी विरोधी राजनीति की अग्रिम पंक्ति में ममता बनर्जी अपनी जगह पक्की कर चुकी हैं, लेकिन उन्होंने भी साफ किया कि विपक्षी मोर्चे का नेता कौन होगा, जैसे सवाल अभी नहीं उठाने चाहिए। सिंघवी ने एक बड़ा संकेत यह दिया है कि इस मोर्चे में कांग्रेस सपोर्टिंग रोल के लिए तैयार है।

खैर, विपक्ष की एकजुटता की राह में सबसे बड़ा रोड़ा यही सवाल बनने वाला है कि उसकी अगुआई किसके हाथों में होगी। यूपीए-वन और यूपीए-टू के दौरान यह मुद्दा आसानी से हल हो गया तो इसलिए क्योंकि तब कांग्रेस सबसे बड़ी और मजबूत पार्टी के रूप में मौजूद थी। मगर पिछले कुछ वर्षों से उसकी ताकत लगातार कम होती गई है। ऐसे में विपक्षी मोर्चे का हिस्से बनने वाली क्षेत्रीय पार्टियां कांग्रेस पर हावी होने की कोशिश करें, यह स्वाभाविक ही है। लेकिन क्या कांग्रेस वाकई विपक्षी मोर्चे के नेतृत्व का दावा आसानी से छोड़ देगी? यों भी, 2024 संसदीय चुनाव में अभी तीन साल बाकी हैं। उससे पहले यूपी, पंजाब, गुजरात जैसे महत्वपूर्ण राज्यों के विधानसभा चुनाव होने हैं। विपक्षी खेमे में शामिल एसपी और बीएसपी जैसे दलों की ही नहीं, खुद कांग्रेस की हैसियत भी काफी कुछ इन विधानसभा चुनावों के नतीजों से निर्धारित होगी। साफ है, विपक्षी खेमे के नेतृत्व का सवाल आसानी से हल नहीं होने वाला। लेकिन लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष की जरूरत सिर्फ चुनावों के लिए नहीं होती। सामान्य दिनों में शासन को जनाभिमुख बनाए रखने के लिए भी उसकी जरूरत होती है। और आज जब देश कोरोना की असाधारण चुनौती से जूझ रहा है तो विपक्ष का बिखराव किसी के हक में नहीं है। इसलिए पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजों से मिले उत्साह की ही बदौलत अगर विपक्षी पार्टियां आपस में बेहतर सामंजस्य और तालमेल स्थापित करती हैं तो यह एक सराहनीय कदम होगा।

कोरोना काल में महामारी से निपटने के लिए सक्षम भारतीय आयुर्वेद

जबकि यह भी स्पष्ट हो चुका है कि कोविड विषाणु देश काल के अनुसार अपनी संरचना बदलते हुए मारक बना हुआ है। इसलिए इसके नियंत्रण के लिए देश काल के अनुसार प्रोटोकॉल की आवश्यकता है। परंतु दुर्योग से पाश्चात्य जगत के अप्रमाणिक उपायों और दवाओं की असफलता के बावजूद उनका निरंतर प्रयोग किया जा रहा है, वहीं हजारों वर्षों की अनुभूत आयुर्वेद की औषधियों पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया जा रहा है। महामारी के इस भयावह दौर में सैकड़ों आयुर्वेद संस्थानों और विश्वविद्यालयों की भूमिका तमाशाई की बनी हुई है। हजारों वर्षों से परीक्षित तत्काल प्रभावी औषधियों व उपायों को अप्रमाणिक बताकर भारतीय आयुर्विज्ञान को काढ़े तक सीमित कर दिया गया है।

आवागमन के साधनों के विकास के कारण पूरा विश्व एक प्रांत की तरह हो गया है। कोरोना संक्रमण के तेज फैलाव और इसके वैश्विक महामारी बनने का एक बड़ा कारण यह भी है। आयुर्वेद के आचार्यों ने महामारियों का मुख्य कारण जलवायु प्रदूषण को बताया है, जिससे अनाज, फल, सब्जियों और औषधीय वनस्पतियों के गुण क्षीण हो जाते हैं। इससे मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है जिससे रोगकारक जीवाणु-विषाणु सक्रिय होकर महामारी पैदा करते हैं। जल एवं वायु जीवन का प्रमुख आधार है। आयुर्वेद के अनुसार मानव शरीर में जल तत्व, कफ तथा वायु तत्व, वात के रूप में रहता है। इसलिए पर्यावरण में जलवायु के विकृत होने पर स्वस्थ व समृद्ध दिनचर्या के बावजूद मानव शरीर का कफ-वात तत्व कमजोर हो जाता है। यही कारण है कि आम जनता के साथ तपस्वी और समृद्ध राजपुरुष भी महामारी का शिकार बनने लगते हैं। इस क्रम में महामारी से बचाव के लिए धूपन व उपासना और रसायन सेवन बताया गया है। आज भी गांवों में सावन में सामूहिक पूजा के रूप में धूपन किया जाता है, क्योंकि सावन में वर्षा के जल के साथ गंदगी बह कर कुओं, जलाशयों, नदियों आदि में प्रवाहित होती है, जिससे तमाम जीवाणुओं और विषाणुओं के प्रकोप की आशंका बढ़ जाती है। इसके निवारण के लिए धूपन की परंपरा रही है। भारतीय संस्कृति के मुख्य पर्व ऋतुसंधि काल में होते हैं, जिस समय शीत व तापक्रम तेजी से बदल रहे होते हैं जिससे शरीर का समायोजन न होने पर

बीमार होने की अधिकतम आशंका बनी रहती है। इसलिए सभी पर्वों पर हवन, सफाई, ऋतु अनुकूल पकवानों के साथ कुल, ग्राम देवताओं के उपासना की परंपरा रही है। परंतु आज सांस्कृतिक संक्रमण काल में पाश्चात्य शैली में नगरों के विकास के कारण परंपराओं को पिछड़ापन का प्रतीक और ढोंग समझकर हम त्याग चुके हैं। पर्व, त्यौहार भी बाजारीकरण के हवाले हो चुके हैं। कमजोर इम्युनिटी का एक कारण यह भी सिद्ध हो रहा है। इन्हीं कारणों से अति विकसित संसाधनों के बावजूद कोरोना काल में हम असहाय बने हुए हैं। महामारियों के बचाव का दूसरा महत्वपूर्ण उपाय रसायन सेवन है।

आयुर्वेद में उन औषधियों को रसायन कहा जाता है जिनके सेवन से मेधा और शरीर आरोग्य होता है। आधुनिक भाषा में इसे एंटीआक्सीडेंट एवं इम्युनिटी बूस्टर कहा जा सकता है। आयुर्वेद के अनुसार रोगप्रतिरोधक शक्ति अर्थात इम्युनिटी दो प्रकार की होती है जिन्हें सत्वबल एवं ओजबल कहा गया है। सत्वबल का तात्पर्य मनोबल से है। महामारी काल में चारों तरफ से नकारात्मक सूचनाओं के कारण व्यक्ति का मनोबल कमजोर हो जाता है। संवेदनशील लोगों को महामारी के लक्षणों का आभास होने लगता है। अतिसंवेदनशील या कोमल मानस के लोग अवसादग्रस्त होकर हृदयाघात से मृत्यु के मुख में चले जाते हैं। सत्वबल अर्थात मनोबल बढ़ाने के लिए ही उपासना, पूजा, ध्यान आदि के लिए कहा गया है। इसके अतिरिक्त मेधा रसायन औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है। इम्युनिटी के का दूसरे पक्ष को ओज कहा गया है। देह, मन और आत्मा के संयुक्त शक्ति को ओजबल कहा गया है।

आयुर्वेद में आचार्य नागार्जुन को महामारी नियंत्रण व चिकित्सा का विशेषज्ञ माना जाता है। कहा जाता है कि एक बार मगध प्रांत में महामारी का प्रकोप हुआ था। वर्षा न होने के कारण फसलें, कंद-मूल एवं जड़ी-बूटियां भी सूख गई थीं। जनता कुपोषण और बीमारियों से ग्रसित हो रही थी। तत्कालीन मगध नरेश ने नालंदा विश्वविद्यालय में इस संकट से निपटने के लिए आचार्यों का सम्मेलन आयोजित किया। अपनी बारी आने पर नागार्जुन ने कहा कि वनस्पतियां नष्ट हो चुकी हैं, इसलिए धातुओं-खनिजों की औषधियों से ही महामारी को नियंत्रित किया जा सकता है। पारा एवं स्वर्ण आदि धातुओं के भस्म से तमाम रोगों की चिकित्सा संभव है। नागार्जुन ने ऐसे सूत्र दिए जिनसे बनी औषधियों से महामारी पर नियंत्रण संभव हो सका।

हमें समझना होगा कि महामारी काल में आपातकालीन चिकित्सा की आवश्यकता होती है, जो केवल जड़ी-बूटियों से संभव नहीं है। आचार्य नागार्जुन के गहन शोध से बनाई गई रसायन औषधियों का प्रयोग आवश्यक है। परंतु खेद है कि आज हम आपने देश के आचार्यों और विद्वानों की परंपराओं की उपेक्षा कर वैश्विक प्रोटोकॉल पर अधिक विश्वास कर रहे हैं। कोविड महामारी को आज एक साल से अधिक समय हो गया, परंतु शासन द्वारा भारतीय संस्थानों, आचार्यों आदि से विमर्श नहीं किया गया। जबकि यह भी स्पष्ट हो चुका है कि कोविड विषाणु देश काल के अनुसार अपनी संरचना बदलते हुए मारक बना हुआ है। इसलिए इसके नियंत्रण के लिए देश काल के अनुसार प्रोटोकॉल की आवश्यकता है। परंतु दुर्योग से पाश्चात्य जगत के अप्रमाणिक उपायों और दवाओं की असफलता के बावजूद उनका निरंतर प्रयोग किया जा रहा है, वहीं हजारों वर्षों की अनुभूत आयुर्वेद की औषधियों पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया जा रहा है। महामारी के इस भयावह दौर में सैकड़ों आयुर्वेद संस्थानों और विश्वविद्यालयों की भूमिका तमाशाई की बनी हुई है। हजारों वर्षों से परीक्षित तत्काल प्रभावी औषधियों व उपायों को अप्रमाणिक बताकर भारतीय आयुर्विज्ञान को काढ़े तक सीमित कर दिया गया है।

गौरवशाली भारत के स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं, दिल्ली.... से मुद्रित एवं, ब्लॉक नं. 23 मकान नं. 399 त्रिलोकपुरी दिल्ली....91 से प्रकाशित संपादक -प्रवीण कुमार सिंह टेलीफोन नं. 011.22786172 फैक्स नं. 011.22786172
RNI, No. DELHIN383334, E-mail: gauravashalibarat@gmail.com इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के पीआरबी एट के तहत

संक्षिप्त खबर

सिद्धार्थनाथ सिंह का अखिलेश व प्रियंका पर पलटवार- आंखे खोलें, यूपी में फ्री लग रही कोरोना वैक्सीन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में कैबिनेट मंत्री और सरकार के प्रवक्ता सिद्धार्थनाथ सिंह ने समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव और कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका वाड्रा पर आपदा के समय घटिया राजनीति करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव कोरोना संक्रमण से लोगों को बचाने के लिए सरकार द्वारा कराए जा रहे वैक्सीनेशन को लेकर लगातार गलत बयान दे रहे हैं। ब्लैक फंगस के इलाज को लेकर भी वह भ्रम फैला रहे हैं। वहीं, प्रियंका वाड्रा कोरोना से लोगों को कैसे बचाया जाए, इसके सुझाव वाले पत्र लिख कर राजनीति में अपनी खोई जमीन पाने का प्रयास कर रही हैं। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के दिए गए बयान कि सत्ता में आने पर वर्ष 2022 में सभी को फ्री में वैक्सीन लगाई जाएगी और प्रदेश में ब्लैक फंगस के इलाज में अव्यवस्थाएं छुपाए नहीं छुप रही हैं, को लेकर सिद्धार्थनाथ सिंह ने शुक्रवार को कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि वास्तव में अखिलेश यादव सत्ता के सपने में इतने अंधे हो गए हैं कि योगी सरकार प्रदेश में लोगों को जो फ्री में वैक्सीन लगवा रही है, वह भी देख नहीं पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सपा मुखिया आंखें खोलें, तो दिखेगा कि प्रदेश में सभी लोगों को फ्री में वैक्सीन लगाई जा रही है। सरकार के प्रवक्ता सिद्धार्थनाथ सिंह ने प्रियंका द्वारा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखे पत्र को लेकर भी उन्हें आड़े हाथों लिया। प्रियंका ने कोरोना से प्रभावित मध्यम वर्ग के लिए राहत की घोषणा करने के साथ ही बिजली दर कम करने, निजी अस्पतालों व स्कूलों में खर्च निर्धारण और उन्हें राहत पैकेज देने के अलावा व्यापारियों को करो में छूट देने समेत कई सुझाव दिए हैं। उन्होंने कहा कि प्रियंका का यह सुझाव राजनीतिक हथकंडा है। उन्होंने प्रियंका से सवाल पूछा है कि कांग्रेस शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों को भी क्या ऐसा ही पत्र लिखा है अगर नहीं तो क्यों? राजनीति करनी है तो घर से बाहर आकर जनता की सेवा करना भी सीखें।

भोजपुरी गायिका नेहा सिंह राठौर का दावा-गांव में कोरोना से मौत, ग्रामीणों ने नकारा

रामगढ़ । कैमूर के जंदाहा में कोरोना से मौत को ग्रामीणों ने नकार दिया है। उनका कहना है कि जिन मौतों का जिक्र किया जा रहा है, वे स्वाभाविक या अन्य कारणों से हैं। भोजपुरी गायिका नेहा सिंह राठौर ने अपने गांव की स्थिति के संबंध में ट्वीट किया था कि यहां कोरोना से सात लोगों की मौत हो चुकी है। उन्होंने गांव में कोरोना के मामले या इससे मौत नहीं होने के प्रशासन के दावे पर शुक्रवार को फिर कहा कि जिनकी मौत हुई है उनके बारे में बता चुकी हूं। रही बात स्वास्थ्य विभाग के दावे की तो 800 लोगों के गांव में 36 की ही जांच क्यों? गांव में आज भी लोग बीमारी को डर से छिपाते हैं। इसलिए प्रशासन लीपापोती कर रहा है। बीडीओ ने तीन लोगों के संक्रमण के बाद ठीक होने की बात कही, अगर जानकारी सही होती तो इसमें नेहा की मां का भी नाम होता, क्योंकि वे ठीक हो चुकी हैं। इधर, कुछ ग्रामीणों ने नेहा के ट्वीट पर नाराजगी जताते हुए कहा कि सस्ती लोकप्रियता के लिए कुछ भी कह देना सही नहीं है। स्वास्थ्य विभाग की टीम गुरुवार को जांच के लिए गांव गई थी। जिन सात लोगों की मौत कोरोना से होने का दावा किया गया, उनमें तीन हार्ट व एक कैंसर से पीड़ित थे। इस गांव में मेडिकल टीम दो बार जांच के लिए गई। पहली बार 50 व दूसरी बार 36 लोगों की जांच हुई, लेकिन किसी जांच में कोई पॉजिटिव नहीं मिला। यहां पचास लोगों को टीका भी लग चुका है।

हार्ट अटैक व लू लगने से मौत- गामा सिंह के भतीजे श्री नारायण सिंह ने कहा कि मेरे चाचा की मौत मौत कोरोना से नहीं, हार्ट अटैक व लू लगने से हुई। वे 80 वर्ष से अधिक उम्र पार कर चुके थे। उन्हें प्रयागराज से लेकर आए, उनका पेसमेकर बंद हो गया था। ट्विटर व फेसबुक से बिना तथ्य के अनर्गल बात नहीं रखनी चाहिए। समाज इसकी इजाजत नहीं देता।

डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि गांव में कोरोना से किसी की मौत नहीं हुई है। दो लोग संक्रमित हुए थे, जिसमें एक मेरी बेटी माधुरी थी, जो काफी पहले ही स्वस्थ हो गई। अब किसी तरह का मामला भी नहीं दिखाई दे रहा है। अनर्गल तथ्य इंटरनेट मीडिया पर नहीं शेयर करना चाहिए। यह गलत है।

अलग-अलग कारणों से हुआ निधन- डॉ. महेंद्र सिंह ने कहा कि गांव में इस दौरान जिनलोगों की मृत्यु हुई है, वे या तो स्वभाविक मृत्यु को प्राप्त हुए हैं या अलग-अलग कारणों से निधन हुआ है। उम्र भी काफी हो चुकी थी। किसी की भी मृत्यु कोरोना से होने की पुष्टि नहीं हुई है।

जंदाहा में कोरोना से एक भी मौत नहीं- इलाके के सोनू तिवार ने कहा कोरोना से जंदाहा गांव में एक भी व्यक्ति की मृत्यु नहीं हुई है। वे बीमार थे या उम्र के बाद स्वाभाविक मौत हुई। जब कोरोना जांच की नौबत ही नहीं आई तो कैसे कह सकते हैं कि मौत कोरोना से हुई। नेहा ने जो कुछ भी गांव में कोरोना से संबंधित लिखा है, वह सरासर गलत है।

प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) प्रदीप कुमार ने कहा कि आपदा को अवसर में बदलने की कोशिश अच्छी बात नहीं है। वहां दो-दो बार मेडिकल टीम भेज कर जांच कराई गई है। वहीं सिविल सर्जन मीना कुमार ने कहा कि जो आंकड़ा है, वह रेफरल अस्पताल में ही है। अस्पताल से जो जानकारी दी गई है, वह सही है। रेफरल अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिंह ने कहा कि जंदाहा में कोरोना से किसी की मौत नहीं हुई है। वहां जांच की गई है, ऐसा कोई मामला नहीं पाया गया।

पंजाब में पीएम मोदी के लिए अरदास करने वाला महिला सरपंच का पति गिरफ्तार, एससी आयोग ने मांगा जवाब

बठिंडा/अमृतसर। पंजाब के बठिंडा स्थित गांव बीड़ तालाब की महिला सरपंच राजपाल कौर के पति गुरमेल सिंह खालसा द्वारा गुरुद्वारा साहिब में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तंदुरुस्ती और डेरा प्रमुख की रिहाई के लिए अरदास की गई। इसके बाद गांव में माहौल तनावपूर्ण हो गया। एडवोकेट हरपाल सिंह खारा की शिकायत पर पुलिस ने धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की धाराओं के तहत केस दर्ज कर गुरमेल सिंह को गिरफ्तार कर लिया है। इस बीच राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने मामले में पूरी घटना की जानकारी तलब कर दी है।

आजाद प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़कर सरपंच बनी राजपाल कौर के पति गुरमेल सिंह द्वारा की गई अरदास में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी द्वारा अनुसूचित भाईचारे के किसी व्यक्ति को मुख्यमंत्री बनाने के एलान का स्वागत किया। उन्होंने अरदास में एक परिवार द्वारा गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी कराने व उसका इंसाफ न मिल पाने का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि दो परिवार पंजाब को लूट रहे हैं, इसलिए किसी अनुसूचित जाति के व्यक्ति के सिर पर हाथ रखकर उसको मुख्यमंत्री बनाया जाए। साथ ही कहा कि छठे जामे में जैसे 52 राजाओं को रिहा कराया था, ठीक उसी तरह डेरा प्रमुख को भी रिहा कराएं। उधर, बठिंडा के एसएसपी भूपिंदरजीत सिंह विर्क ने कहा कि एडवोकेट हरपाल सिंह खारा की शिकायत पर आरोपित गुरमेल सिंह खालसा पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की धाराओं के तहत केस दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

नए केस घटकर 406 हुए पर नहीं थमा मौतों का सिलसिला, 14 ने तोड़ा दम

चंडीगढ़ । यूटी में कोरोना वायरस संक्रमण के नए केस घट रहे हैं लेकिन मरीजों की मौतों का सिलसिला अभी नहीं थमा है। शुक्रवार को शहर में 14 कोरोना मरीजों की मौत हो गई। यूटी में अब तक 680 लोगों की मौत हो चुकी है। शुक्रवार को 406 नए कोरोना पॉजिटिव केस भी दर्ज किए गए। इनमें 236 पुरुष और 170 महिलाएं हैं। अब तक 57,737 लोगों में कोरोना वायरस की पुष्टि हो चुकी है। पिछले 24 घंटे में 3,314 लोगों के कोरोना सैंपल लेकर टेस्टिंग की गई। इस समय 5,675 कोरोना एक्टिव मरीजों का इलाज चल रहा है। स्वास्थ्य विभाग 4,77,484 लोगों के कोरोना सैंपल लेकर टेस्टिंग कर चुका है। इनमें से 4,18,558 लोगों की कोरोना रिपोर्ट नेगेटिव आई है। 1,189 लोगों के कोरोना सैंपल तकनीकी खामियों की वजह से खारिज कर दिए गए। 790 संक्रमित मरीजों को ठीक होने के बाद डिस्चार्ज किया गया। अब तक 51,382 संक्रमित मरीज ठीक हो चुके हैं। 104 लोगों के कोरोना सैंपल जांच के लिए भेजे गए हैं। इनकी जांच रिपोर्ट शनिवार शाम तक आएगी।

यूपी के हर जिले में कोरोना से मुक्त होने वाले पहले तीन गांवों को मिलेगा विशेष योजनाओं का लाभ

लखनऊ । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार से उत्तर प्रदेश में मेरा गांव, कोरोना मुक्त गांव अभियान को मिशन के तौर पर संचालित करने का निर्देश दिया है। अभियान के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में जनप्रतिनिधियों और सरकारी एजेंसियों के माध्यम से गांववासियों को कोरोना संक्रमण व इससे बचाव के प्रति जागरूक किया जाएगा। हर जिले में कोरोना संक्रमण से मुक्त होने वाले पहले तीन गांवों को विशेष योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। सीएम योगी ने शहरों में भी मेरा वार्ड, कोरोना मुक्त वार्ड अभियान चलाने के लिए कहा है।

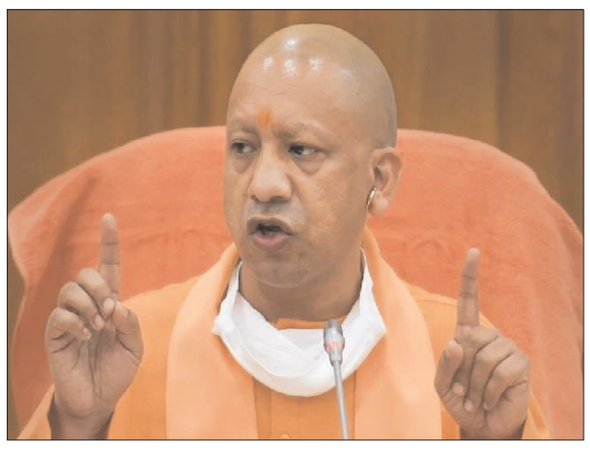

उत्तर प्रदेश में कोविड संक्रमण की स्थिति की टीम-9 के साथ शुक्रवार को समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गांवों को कोरोना से सुरक्षित रखने के लिए चलाए जा रहे विशेष जांच अभियान के अछे परिणाम मिल रहे हैं निगरानी समितियां और रैपिड रिस्पांस टीमें सराहनीय कार्य कर रही हैं। कोरोना मुक्त गांव के संदेश को हर ग्रामवासी अपना लक्ष्य बनाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पुलिस विभाग ने भी मेरी लाइन कोरोना मुक्त लाइन का संकल्प लिया है जो प्रेरणास्पद है।

समीक्षा बैठक के बाद अपर मुख्य सचिव सूचना नवनीत सहगल ने बताया कि बीती पांच मई से गांवों में कोरोना संक्रमित और लक्षण युक्त व्यक्तियों की पहचान के लिए संचालित विशेष जांच अभियान के तहत 18733 रैपिड रिस्पांस टीमों ने प्रदेश के 98386 राजस्व गांवों में से 89512 में टेस्टिंग पूरी कर ली है। विशेष जांच अभियान के तहत अब तक 28742 गांवों में कोरोना संक्रमण पाया गया है।

सभी जिलों में 20 जून तक काम करने लगें पीकू = कोरोना की संभावित तीसरी लहर से बचों के प्रभावित होने की आशंका के मद्देनजर मुख्यमंत्री ने प्रदेश के सभी जिलों में स्थापित किए जा रहे पीडियाट्रिक इंटेंसिव केयर यूनिट (पीकू) को हर हाल में 20 जून तक क्रियाशील करने का निर्देश दिया। सभी मेडिकल कॉलेजों में 100-100 बेड और सभी जिला अस्पतालों में कम से कम 20 बेड के पीकू बनाए जाने हैं। बैठक में बताया गया कि राजधानी के किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय में एक पीकू तैयार हो गया है। एक अन्य पीकू की स्थापना का काम जारी है। लखनऊ के राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान में 120 बेड का पीकू तैयार हो रहा है। मुख्यमंत्री ने इनमें तैनात किए जाने वाले पीडियाट्रिशियंस, एनेस्थेटिक्स, टेक्नीशियन तथा पैरामेडिकल स्टाफ की ट्रेनिंग का कार्यक्रम चरणबद्ध तरीके से संचालित करने का निर्देश दिया। कहा कि वर्चुअल के साथ ही फिजिकल ट्रेनिंग की व्यवस्था भी की जाए।

न हो जलभराव, सफाई पर जोर = बीते दो-तीन दिनों से प्रदेश के कई जिलों में हुई बारिश को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि किसी भी क्षेत्र में जलजमाव न हो। नगर विकास और पंचायती राज विभाग घनी आबादी वाले क्षेत्रों और स्वास्थ्य केंद्रों के आसपास विशेष स्वच्छता और सैनिटाइजेशन अभियान चलाएं।

कोरोना के नए संक्रमितों की संख्या में थोड़ी बढ़ोतरी, घटी मृतकों की संख्या

लखनऊ । उत्तर प्रदेश सरकार के ट्रैक, टेस्ट व ट्रीट फॉमूला के सटीक क्रियान्वयन के कारण प्रदेश में कोरोना वायरस संक्रमण के नए मामले लगातार घट रहे हैं। प्रदेश में बीते 24 घंटे में 7735 नए संक्रमित मिले हैं जबकि 17,668 लोग इसके संक्रमण से उबरे हैं। 24 घंटे में 172 लोगों की मौत भी हुई है। गुरुवार के मुकाबले शुक्रवार को नए संक्रमितों की संख्या की 1010 की बढ़ोतरी हुए है जबकि लम्बे समय बाद मृतकों की संख्या दो सौ के नीचे आई है।

प्रदेश में बीते 24 घंटे में सर्वाधिक नए संक्रमित 1003 गाजियाबाद में मिले हैं। गोरखपुर में 892, मेरठ में 427 और लखनऊ में 286 नए केस मिले हैं। वाराणसी में बीते 24 घंटे में 15, लखनऊ में 12 और सहारनपुर में 11 लोगों की मौत हुई है। लखनऊ में अब भी 6631 एक्टिव केस हैं जबकि 2341 लोगों ने दम तोड़ा है।

कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर ने प्रदेश में जान का बड़ा नुकसान किया है। इसकी चपेट में आने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उबरने के बाद मंडल के साथ जिलों का भी स्थलीय निरीक्षण का बड़ा अभियान चलाया। इसके बाद से मिशन मोड में आने वाली सरकारी मशीनरी ने प्रदेश में कोरोना कर्फ्यू लगाया। इससे कोविड चेन बाधित हो गई और मामला नियंत्रण में आने लगा। प्रदेश में अब एक्टिव केस एक लाख 6276 हैं। प्रदेश में 15 लाख 34,176 लोग इससे रिकवर हुए हैं जबकि 18,760 लोगों ने दम तोड़ा है। सक्रिय मामलों में लगभग 68 प्रतिशत की कमी आई है। पॉजिटिविटी रेट 3.6 प्रतिशत है। प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने बताया कि मॉनिटरिंग और ट्रेसिंग करके हमने यह सफलता पाई है। वैक्सीनेश जारी= अपर मुख्य सचिव नवनीत सहगल ने बताया कि प्रदेश में अब तक कुल मिलाकर 1,25,00,000 लोगों को कोरोना वैक्सीन की पहली डोज दी जा चुकी है। इसके साथ ही 33 लाख लोगों को दूसरी डोज भी दी गई है। 23 ज़िलों में 18 से 44 वर्ष के अब तक 8,52,000 लोगों को वैक्सीन की पहली डोज दी गई है।

यूपी बोर्ड के 100 वर्ष के इतिहास में पहली बार हाईस्कूल का परिणाम 100 प्रतिशत

प्रयागराज । वैश्विक महामारी कोरोना वायरस संक्रमण ने विश्व में अनके जगह का भूगोल ही बदल कर रख दिया। भारत में भी लम्बा लॉकडाउन चला तो उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद यानी यूपी बोर्ड में तो इतिहास ही रच दिया गया। यहां पर सौ वर्ष के इतिहास में पहली बार हाईस्कूल में सौ प्रतिशत छात्र-छात्राएं पास हो रहे हैं। वर्ष 2020-21 के लिए हाईस्कूल में पंजीकृत सभी 29.94 लाख छात्र-छात्राओं को इस बार प्रोन्नति मिलेगी। इससे पहले का सर्वाधिक सफलता का परिणाम प्रतिशत 87.66 फीसद तक रहा है।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद यानी यूपी बोर्ड के सौ वर्ष के इतिहास में पहली बार हाईस्कूल की परीक्षा निरस्त करने की तैयारी है, वहीं परीक्षा के लिए पंजीकृत सभी छात्र-छात्राओं को कक्षा 11 में प्रोन्नति मिल सकती है। इसकी प्रक्रिया के लिए बोर्ड प्रशासन की वेबसाइट पर नौवीं कक्षा के विषयवार अंक अपलोड होना शुरू हो गए हैं। इस क्रम में गुरुवार देर शाम तक करीब डेढ़ लाख परीक्षार्थियों के अंक अपलोड हो गए थे। आज भी काम जारी है। यह जरूर है कि इस पर अभी शासन की मुहर लगना बाकी है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) कोरोना संक्रमण की वजह से हाईस्कूल की परीक्षा न कराने की दिशा में प्रयासरत है। सीबीएसई सहित देशभर के कई शिक्षा बोर्ड इस ओर पहले ही कदम बढ़ा चुके हैं। उत्तर प्रदेश बोर्ड में देरी की वजह परीक्षा प्रणाली दुरुस्त न होना है। असल में, कई दिन तक उस फार्मूले की तलाश हुई, जिसमें परीक्षार्थियों को मिलने वाले विषयवार अंक निर्विवाद हों। सभी को अंक देना इसलिए भी जरूरी है कि आगे मेरिट से चयन में छात्र-छात्राओं को परेशानी न हो। हर किसी की जन्म तारीख का हाईस्कूल का प्रमाणपत्र अहम रिकॉर्ड भी है।

प्रदेश में नौवीं व ग्यारहवीं की वार्षिक परीक्षा के अंक बोर्ड मुख्यालय नहीं आते हैं। अब बोर्ड को रिकॉर्ड कालेजों से मांगना पड़ रहा है। इससे पहले हाईस्कूल की परीक्षा का सफलता प्रतिशत अधिकतम 87.66 फीसद तक रहा है, इसमें हर वर्ष उतार-चढ़ाव होता रहा है। इस बार प्रमोट करने में सभी छात्र-छात्राओं को सफल घोषित करने की तैयारी है। यानी पहली बार 100 फीसद उत्तीर्ण हो सकते हैं।

कालेज वार्षिक परीक्षा पर निरुत्तर- बोर्ड की ओर से नौवीं वार्षिक परीक्षा के विषयवार अंक मांगे जाने पर कई कालेजों ने 13 अप्रैल 2020 के शासनादेश का हवाला दिया था। उनका कहना था कि बीते वर्ष सभी प्रमोट हुए थे, लेकिन यह नहीं बता सके कि बीते वर्ष जब सत्र मार्च में ही खत्म हो रहा था और उस समय कोविड नियम लागू नहीं थे तो वार्षिक परीक्षा क्यों नहीं कराई। इंटर की प्रायोगिक परीक्षाओं के बाद व बोर्ड परीक्षा शुरू होने से पहले गृह परीक्षाएं होती रही हैं। क्या उन्हें यह पता था कि सरकार अप्रैल में प्रमोट करने का आदेश देगी। उन्होंने परीक्षार्थियों को प्रमोट भी किया है तो फिर किस फार्मूले का प्रयोग किया। हकीकत में स्कूलों में वार्षिक परीक्षाएं हुई थी लेकिन, प्रमोट करने का आदेश होने पर सभी उसकी आड़ ले रहे हैं।

बिहार: सेनारी नरसंहार मामले में 13 दोषियों को रिहा करने का आदेश, 34 लोगों का बांधकर रेता गया था गला

पटना । पटना हाई कोर्ट ने शुक्रवार को जहानाबाद जिले के बहुचर्चित सेनारी नरसंहार के सभी 13 दोषियों को बरी कर दिया है। न्यायाधीश अश्वनी कुमार सिंह एवं न्यायाधीश अरविंद श्रीवास्तव की खंडपीठ ने लंबी सुनवाई के बाद अपना फैसला सुरक्षित कर लिया था, जिसे शुक्रवार को सुनाया। कोर्ट ने निचली अदालत के फैसले को रद करते हुए सभी 13 दोषियों को तुरंत रिहा करने का भी आदेश दिया। जहानाबाद की जिला अदालत ने 15 नवंबर, 2016 को इस मामले में दस लोगों को मौत की सजा सुनाई थी, जबकि तीन अन्य को उम्रकैद की सजा दी थी।

बताते चलें कि 18 मार्च, 1999 की रात प्रतिबंधित नक्सली संगठन (मार्क्सवादी समन्वय समिति यानी एमसीएसी) के उग्रवादियों ने सेनारी गांव को चारों तरफ से घेर लिया था। उसके बाद एक जाति विशेष के 34 लोगों को उनके घरों से जबरन निकालकर गांव के मंदिर के सामने ले जाकर बेरहमी से गला रेत कर उनकी हत्या कर दी थी।निचली अदालत के फैसले की पुष्टि के लिए पटना हाई कोर्ट में राज्य सरकार की ओर से डेथ रेफरेंस दायर किया गया, जबकि दोषियों द्वारा पासवान, बचेश कुमार सिंह, मुंगेश्वर यादव और अन्य की ओर से क्रिमिनल अपील दायर कर निचली अदालत के फैसले को चुनौती दी गई थी।

इस वजह से किया रिहा

अभियुक्तों का पक्ष रखने वाले अधिवक्ता अंशुल ने बताया कि हाई कोर्ट के समक्ष आए अभियुक्तों में कोई प्राथमिकी में नामित नहीं था। गवाहों के बयान में विरोधाभास और पुलिस द्वारा किए गए अनुसंधान में त्रुटियों की वजह से हाई कोर्ट ने उक्त फैसला दिया। चूंकि गवाह इस स्थिति में नहीं थे कि रात में अभियुक्तों की पहचान कर सकें।

अखिलेश यादव का तंज- सरकार ने आंकड़ों व जुबानी दावों पर नियंत्रित कर लिया कोरोना व ब्लैक फंगस

लखनऊ । समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि कोरोना महामारी और ब्लैक फंगस के आतंक के बीच भारतीय जनता पार्टी की सरकार सच को पूरी तरह नकारने, जनता में भ्रम फैलाने और झूठी वाहवाही लेने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जहां बीमार वहीं उपचार का नया नारा लेकर आ गए हैं। शहर से गांव तक पूरे राज्य में चिकित्सा व्यवस्था बर्बाद करने के बाद भी बधाई का आदान प्रदान चल रहा है। भाजपा की सोची समझी रणनीति के तहत ऐसा किया जा रहा है ताकि जनता भ्रम में रहे और बिना उपचार हो रही मौतों पर पर्दा पड़ा रहे।

सपा अध्यक्ष अखिलेश ने कहा कि मुख्यमंत्री ने तो आंकड़ों और जुबानी दावों से प्रदेश में कोरोना संक्रमण व ब्लैक फंगस पर हवाई नियंत्रण कर लिया है, जबकि शहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सेवाओं पर बदइंतजामी का ताला पड़ा हुआ है। दवा, इलाज के लिए हाहाकार मचा है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी मान लिया है कि उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्यों से भी कोरोनारोधी टीकाकरण में बहुत पीछे है। कागजों पर इलाज, जमीन पर बेइलाज यही प्रदेश की नियति हो गई है।

सपा चीफ अखिलेश ने कहा कि कोरोना महामारी का अगला दौर और ज्यादा घातक होने और बच्चों तक इसके फैलने से बचाव के लिए टीकाकरण अभियान का भी भाजपा सरकार ने मजाक बना दिया है। टीकाकरण की नीति की अस्पष्टता, पंजीकरण में बाधाएं, फिर सेंटरों पर टीका नहीं होने की दुर्व्यवस्था से जनता परेशान है।

सपा अध्यक्ष अखिलेश ने कहा कि देश और प्रदेश के प्रधान के बीच परस्पर प्रशंसा का जो आदान-प्रदान हो रहा है उसके बीच देश-प्रदेश की जनता पिस रही है। जितना समय एक-दूसरे की झूठी तारीफ में दिया जा रहा है, उतना अगर कोरोना के टीके, बेड, ऑक्सीजन की व्यवस्था में दिया जाए तो शायद कुछ और लोगों की जान बच जाए।

जाप सुप्रीमो के डीएमसीएच से रेफर होने के बावजूद पटना नहीं जाने के राज से उठा पर्दा

मुजफ्फरपुर । वीरपुर जेल से डीएमसीएच रेफर किए जाने के अगले दिन ही जाप सुप्रीमो सह पूर्व सांसद पप्पू यादव को मेडिकल बोर्ड ने पटना रेफर कर दिया था। कहा तो यहां तक जा रहा है कि प्रशासनिक स्तर से इसकी तैयारी भी शुरू कर दी गई थी। इसके बाद अचानक सबकुछ बदल गया और यह तय हुआ कि पप्पू यादव की चिकित्सा डीएमसीएच में ही होगी। गत एक सप्ताह से उनका डीएमसीएच की आइसीयू में इलाज चल रहा है। अभी उनकी स्थिति बेहतर बताई जा रही है, लेकिन एक सवाल जो उनके समर्थकों व सूबे के लोगों के मन में रह गया था कि आखिर पप्पू यादव रेफर किए जाने के बाद भी पटना क्यों नहीं गए? अब इस पूरे मामले पर से पर्दा हट गया है।

दरअसल, पप्पू यादव को भर्ती कराए जाने के बाद जब मेडिकल टीम ने उनकी पैथोलॉजिकल व रेडियोलॉजिकल जांच करवाई तो सामने आया कि उन्हें किडनी व हार्ट से संबंधित परेशानी है। सांस लेने से भी परेशानी है। पैदल तक नहीं चल पा रहे। इसके आधार पर मेडिकल बोर्ड ने उन्हें पटना रेफर कर दिया था। सब तैयारी भी कर ली गई थी, लेकिन पूर्व सांसद और जन अधिकार पार्टी प्रमुख राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने यहां के अधीक्षक को एक पत्र लिखा था।

जिसमें उन्होंने सरकार पर एक साजिश के तहत उनकी हत्या कराने का आरोप लगया था। इसमें राज्य सरकार के कुछ अधिकारियों के शामिल होने का संदेह भी उन्होंने प्रकट किया था। टीओआइ की रिपोर्ट के अनुसार इस पत्र में उन्होंने अधीक्षक से आग्रह किया कि यदि डीएमसीएच में किडनी के पथरी का इलाज संभव नहीं है तो पटना की जगह उन्हें दिल्ली रेफर कर दिया जाए।

उनका इलाज केवल मेडिकल बोर्ड की अनुशंसा के आधार पर की जाए, सरकार के निर्देश पर नहीं। वहीं दूसरी ओर जाप समर्थकों ने अस्पताल परिसर में प्रदर्शन शुरू कर दिया था। इसके बाद ही रेफर करने के प्रोग्राम को रद कर दिया गया।

इस प्रकरण को तूल पकड़ता देख डीएमसीएच अधीक्षक डॉ. मणिभूषण ने भी अपना पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि पप्पू यादव को पटना के आइजीआइसी रेफर किया गया था, लेकिन उनको स्लिप डिस्क की परेशानी हो गई। इसके बाद इस आइडिया को रद कर दिया गया। इस हालत में यात्रा करने पर परेशानी बढ़ने की आशंका थी। अपने ऊपर सरकार के दबाव में काम करने का लग रहे आरोपों पर उन्होंने कहा कि इसमें कोई भी सच्चाई नहीं है। जहां तक दिल्ली रेफर किए जाने की बात है तो हमलोग उन्हें केवल बिहार के ही किसी उच्च चिकित्सा संस्था में रेफर कर सकते हैं। बाहर नहीं।

यूपी कैबिनेट मंत्री ब्रजेश पाठक लखनऊ में अटल भोजनालय में जरूरतमंद लोगों को मुफ्त भोजन परोसते हुए।

शबनम की फांसी रोकने के लिए दर्ज केस मानवाधिकार आयोग ने 24 घंटे में किया खारिज, दिया ये हवाला

मुरादाबाद । अमरोहा बावनखेड़ी में प्रेमी सलीम के साथ मिलकर अपने परिवार के सात लोगों का गला काट कर मौत की नींद सुलाने वाली शबनम एक बार फिर चर्चा में है। रामपुर निवासी आरटीआइ एक्टिविस्ट दानिश खान द्वारा उसकी फांसी की सजा रोने या महिला जल्लाद से फांसी दिलाए जाने की मांग को लेकर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में केस दर्ज कराया था। केस दर्ज करने के 24 घंटे के भीतर आयोग ने इस मामले से पल्ला झाड़ते हुए उसे खारिज कर दिया है। हवाला दिया है कि यह मामला न्यायिक प्रक्रिया में विचाराधीन है।

अमरोहा के हसनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव बावनखेड़ी निवासी शबनम ने बीती 13-14 अप्रैल 2018 की रात को गांव के ही प्रेमी सलीम के साथ मिलकर अपने पिता शौकत अली समेत परिवार के सात लोगों की गला काट कर हत्या कर दी थी। पुलिस ने घटना का पर्दाफाश करते हुए शबनम व सलीम को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। इस मामले में शबनम व सलीम को फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। राष्ट्रपति भी शबनम की दया याचिका को खारिज कर चुके हैं।

जबकि बीती 18 फरवरी को शबनम के अधिवक्ता ने फिर से राज्यपाल के पास दया याचिका दायर की है। जोकि विचाराधीन है। अब इस मामले में रामपुर निवासी आरटीआइ एक्टिविस्ट दानिश खां ने बीती 22 फरवरी 2021 को शबनम की फांसी पर रोक लगाने के संबंध में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के समक्ष केस दर्ज कराने के लिए आवेदन किया था। उनका कहना था कि शबनम पुलिस की कार्रवाई से संतुष्ट नहीं है तथा वह सीबीआइ जांच कराने की मांग कर रही है। लिहाजा फिलहाल शबनम की फांसी पर रोक लगाई जाए।

यदि फांसी पर रोक नहीं लगाई जा सकती को महिला जल्लाद से फांसी दिलाई जानी चाहिए। इस बारे में दानिश खां ने बताया कि गुरुवार 20 मई को आयोग ने उनके आवेदन पर केस दर्ज कर लिया था। परंतु 24 घंटे के भीतर ही आयोग ने यह कहते हुए केस खारिज कर दिया कि यह मामला बहुचर्चित है तथा न्यायिक प्रक्रिया के तहत विचाराधीन है।

ब्लैक फंगस से संक्रमित एक मरीज को हैदराबाद के अस्पताल ले जाते हुए।

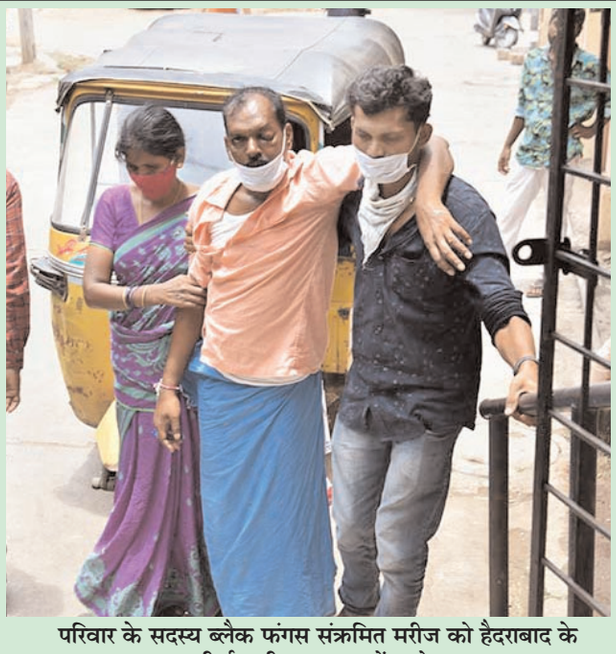

परिवार के सदस्य ब्लैक फंगस संक्रमित मरीज को हैदराबाद के सरकारी ईएनटी अस्पताल में लाते हुए।

अहमदाबाद में कोविड-19 तालाबंदी के बीच अधिकारियों द्वारा सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक बाजार को फिर से खोलने की घोषणा के बाद भारी भीड़ दिखाई दी।

एक नजर

टूलकिट मामले को लेकर कोटा पुलिस में भाजपा नेताओं के खिलाफ परिवाद पेश

जयपुर । टूलकिट मामले को लेकर राजस्थान में कोटा के कांग्रेसियों ने भाजपा के केंद्रीय नेताओं के खिलाफ पुलिस में परिवाद दिया है। भाजपा अध्यक्ष जे.पी.नड्डा,प्रवक्ता संबित पात्रा और केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी व अन्य के खिलाफ दिए गए परिवाद में कहा गया की भाजपा के इन नेताओं ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी अनुसंधान विभाग का जाली लेटर हेड बनाया और उसके बाद उस पर झूठी और मनगढ़ंत सामग्री लिखी। कोटा जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष रवींद्र त्यागी और अमत धारीवाल ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रवीण कुमार जैन को सौंपे परिवाद में कहा गया कि बीजेपी देश में नफरत फैलाने का काम कर रही है। बीजेपी ने अपने सत्यापित ट्वीट हैंडल और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए देश में सांप्रदायिक अशांति को बढ़ाने व नफरत को हवा देने काा काम किया है । त्यागी ने कहा कि भाजपा इस दस्तावेज का उपयोग फर्जी खबरें फैलाने के लिए कर रही है। परिवाद दिए जाने के बाद कोटा पुलिस के नयापुरा थाना में इस संबंध में मामला दर्ज किया गया है। भाजपा के इस फर्जीवाड़े का उद्देश्य मौजूदा महामाारी में लोगों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने में नाकाम रही केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार की विफलता से ध्यान हटाना है।

टूलकिट से कांग्रेस की देशद्रोही नीति उजागर-देवनानी- पूर्व शिक्षा मंत्री व विधायक अजमेर वासुदेव देवनानी ने कांग्रेस के टूलकिट को घटिया और ओछी मानसिकता बताते हुए कहा है कि इससे उसकी भारत, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और देश की संस्कृति को बदनाम करने की नीति उजागर हो गई है। इस टूलकिट से कांग्रेस का देशद्रोही चेहरा पूरी तरह बेनकाब हो गया है। कांग्रेस को इसके लिए देश से माफी मांगनी चाहिए। देवनानी ने बयान में कहा कि टूलकिट में कोरोना के नए वायरस को चीनी नहीं, इंडियन वायरस या मोदी वायरस के नाम से प्रचारित करने, अंतिम संस्कारों व मृत्यु को जमकर प्रचारित करने या जलती चिताओं के फोटो सहित पोस्ट डालने, सेंट्रल विस्टा को मोदी का निजी घर बताकर प्रचार करने, वर्ल्ड मीडिया में भारत विरोधी खबरें शेयर करने, केंद्रीय मंत्रियों पर सोशल मीडिया में दुष्प्रचार चलाने, पीएम केयर का दुष्प्रचार करने और उससे मिले वेंटीलेटर्स को खराब बताकर पोस्ट डालने, गुजरात को प्राथमिकता देने की झूठी बातों से राज्यों को लड़ाने जैसी घटिया बातें कही गई हैं। इस टूलकिट से कांग्रेस का भारत विरोधी चेहरा सामने आया है।

महाराष्ट्र में कोरोना के 29644 नए मामले और 555 लोगों की मौत

मुंबई । महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 29644 नए मामले सामने आए, 44493 लोग ठीक हुए और 555 लोगों की मौत हुई है। कुल मामले 55,27,092 हैं। कुल 50,70,801 रिकवर हुए। मरने वालों की संख्या 86,618 है। सक्रिय मामले 3,67,121 हैं। इससे पहले वीरवार को प्रदेश में कोरोना के 29911 नए मामले सामने आए, 47,371 ठीक हुए और 738 मौतें हुईं। कुल मामले 54,97,448 हैं। कुल 50,26,308 रिकवर हुए। मरने वालों की संख्या 85,355 है। सक्रिय मामले 3,83,253 हैं। वहीं, मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 1425 नए मामले सामने आए, 1460 ठीक हुए और 59 मौतें हुईं। कुल मामले 6,93,644 हैं। कुल 6,47,623 रिकवर हुए। मरने वालों की संख्या 14,468 व सक्रिय मामले 29,525 हैं। इससे पहले बुधवार को प्रदेश में कोरोना के 34031 नए मामले सामने आए, 51457 लोग ठीक हुए और 594 लोगों की मौत हुई। प्रदेश में कुल मामले 54,67,537 हैं। अब तक कुल 49,78,937 लोग रिकवर हुए।रिकवरी दर 91.06 फीसदी है। अब तक कोरोना से मरने वालों की संख्या 84,371 हैं। सक्रिय मामले 4,01,695 हैं। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 1350 नए मामले सामने आए, 4565 लोग डिस्चार्ज हुए और 57 लोगों की मौत हुई। सक्रिय मामले 29,643 हैं। कुल मामले 6,92,239 हैं। कोरोना से अब तक 14,409 लोगों की मौत हुई। कुल 6,46,163 रिकवर हुए। इससे पहले सोमवार को प्रदेश में कोरोना के 26616 नए मामले सामने आए, 48211 ठीक हुए और 516 लोगों की मौत हुई है। कुल मामले 54,05,068। कुल 48,74,582 रिकवर हुए। मरने वालों की संख्या 82,486 है। सक्रिय मामले 4,45,495 है। वहीं, मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 1240 नए मामले सामने आए, 2587 ठीक हुए और 48 लोगों की मौत हुई है। कुल मामले 6,89,936 है। कुल 6,39,340 रिकवर हुए। मरने वालों की संख्या 14,308 है। सक्रिय मामले 34,288 हैं। इससे पहले रविवार को प्रदेश में कोरोना के 34389 नए मामले सामने आए, 59318 डिस्चार्ज हुए और 974 लोगों की मौतें हुईं। कुल डिस्चार्ज 48,26,371 हैं। मरने वालों की संख्या 81,486 है। कुल मामले 53,78,452 हैं। सक्रिय मामले 4,68,109 हैं।

सिर्फ गरारा करने से हो जाएगा कोरोना टेस्ट, आईसीएमआर ने भी दी मंजूरी

मुंबई । राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (नीरी) ने कोरोना के टेस्ट का एक ऐसा तरीका खोज लिया है, जिसमें सिर्फ गरारा करके किसी भी व्यक्ति का सैंपल लिया जा सकेगा। इसके लिए अब गले या नाक में रूई लगी सलाई डालने की जरूरत नहीं रहेगी। कोरोना टेस्ट की इस पद्धति को आईसीएमआर ने मंजूरी भी प्रदान कर दी है।

क्या है स्टेराइल सैलाइन गार्गल टेक्निक - सीएसआईआर की एक घटक प्रयोगशाला नागपुर स्थित नीरी ने एक ऐसा द्रव्य तैयार किया है, जिसे मुंह में लेकर 15-20 सेकेंड गरारा करके एक शीशी में रख लिया जाता है। गरारा किए इसी द्रव्य को लैब में ले जाकर उसका परीक्षण करने से व्यक्ति के कोरोना संक्रमित होने या न होने का पता चल जाता है। इसे स्टेराइल सैलाइन गार्गल टेक्निक नाम दिया गया है। नीरी का दावा है कि इस पद्धति से टेस्ट करना आसान हो जाएगा। इसमें सैंपल रखने के लिए सिर्फ एक शीशी एवं द्रव्य की जरूरत पड़ेगी। एवं इसका परिणाम आरटी-पीसीआर टेस्ट जैसा ही विश्वसनीय भी होगा। रुई लगी सलाई के जरिए नाक एवं मुंह से निकाले जाने वाले सैंपल की भांति इसमें स्वैब कम मिलने का खतरा नहीं है। सलाई से निकाले गए सैंपल को लैब तक पहुंचाने की मुश्किल भी इसमें नहीं है। सलाई से लिए जाने वाले सैंपल को एक ट्रांस्पोर्ट मीडिया सोल्यूशन की जरूरत पड़ती है। उसे एक निश्चित तामपान पर ही लैब तक पहुंचाना जरूरी होता है। जबकि स्टेराइल सैलाइन गार्गल टेक्निक में गरारा करके लिया गया नमूना सामान्य तामपान पर भी लैब तक पहुंचाया जा सकता है।

यह तकनीक सस्ती भी है- जानकारों का मानना है कि एक सरकारी लैब द्वारा खोजी गई यह पद्धति भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में बहुत कारगर हो सकती है। क्योंकि इस पद्धति से लिए गए नमूनों को एक साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। यह तकनीक संसाधनों की कमी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक लाभप्रद हो सकती है।

सचिन पायलट बोले, इस्तीफा देने वाले हेमाराम चौधरी सबसे ईमानदार और वरिष्ठ नेता

जयपुर । राजस्थान कांग्रेस की सियासी चिंगारी फैलती ही जा रही है। पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट के विश्वस्त वरिष्ठ विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री हेमाराम चौधरी के इस्तीफे व विधायक वेदप्रकाश सोलंकी के बयान के बाद अब तक मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व प्रदेश प्रभारी अजय माकन ने दोनों से बात नहीं की। हालांकि तीन दिन बाद इस मसले पर पायलट ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए कहा कि प्रदेश की राजनीति में चौधरी जैसा कोई ईमानदार और वरिष्ठ नेता नहीं है। चौधरी का इस्तीफा देना हम सबके लिए एक बड़ा चिंता का विषय है। पायलट ने कहा कि चौधरी विधानसभा में सबसे वरिष्ठ विधायक हैं, वे छठी बार विधायक बने।

शुक्रवार को मीडिया से बात करते हुए पायलट ने कहा कि मुझे उनके इस्तीफे की जानकारी अखबार से मिली है। वहीं, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने चौधरी को मनाने का प्रयास करने की बात कहते हुए साफ कर दिया कि इसकी आड़ में बयानबाजी करने वालों को पार्टी की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए। डोटासरा ने कहा कि मैंने उनसे खुद फोन पर बात की है। वे अनुभवी नेता है। चौधरी की नाराजगी इसलिए है कि जिला कलेक्टर ने उनका फोन नहीं उठाया। जानकारी करने पर पता चला कि कलेक्टर तूफान के कारण बात नहीं कर सके, बाद में बात कर उनकी समस्याओं का समाधान कर लिया गया। इसी बीच, राज्य सरकार के दो वरिष्ठ मंत्री शांति धारीवाल व डॉ. बीडी कल्ला ने चौधरी से फोन पर बात कर उन्हें अपनी समस्याएं बताने के लिए कहा, लेकिन चौधरी ने दोनों मंत्रियों से कहा कि मेरी समस्या का समाधान सीएम और माकन ही कर सकते हैं, किसी मंत्री के हाथ में यह नहीं है।

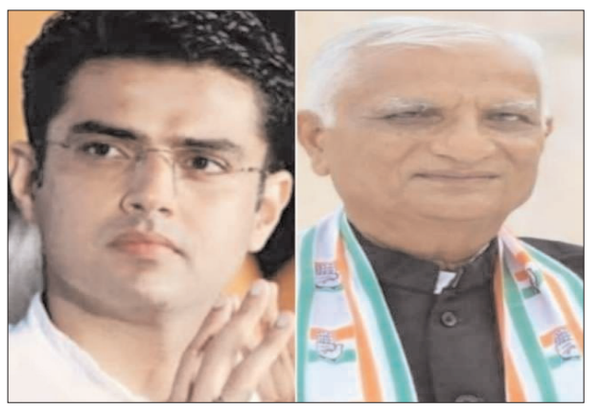

अशोक गहलोत व अजय माकन ने अब तक नहीं की बात

चौधरी को इस्तीफा दिए चार दिन हो गए, लेकिन सीएम और माकन के उनसे बात नहीं करने को लेकर कांग्रेस सूत्रों का कहना है कि ये इस मामले को लंबा खींचकर ठंडे बस्ते में डालना चाहते हैं। हालांकि गहलोत के विश्वस्तों ने विधायकों को टटोलना शुरू कर दिया। वे पायलट खेमे के विधायकों से भी संपर्क साधने में जुटे हैं। इसके साथ ही बसपा से कांग्रेस में शामिल होने वाले छह विधायकों से भी बात की गई है। सत्ता में भागीदारी नहीं मिलने से ये विधायक नाराज बताए जाते हैं। सीएम खेमा नहीं चाहता कि चौधरी के इस्तीफे पर जल्दबाजी में कोई फैसला हो। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने भी अभी तक चौधरी से बात नहीं की है। जोशी और सीएम की तो इस मामले में चर्चा हो गई, लेकिन नाराज विधायक को मनाने का काम सीधा अपने हाथ में नहीं लिया।

एक साल पूर्व पायलट खेमे की बगावत के समय चौधरी अन्य विधायकों के साथ मानेसर रहे थे। उस समय कांग्रेस के तत्कालीन कोषाध्यक्ष स्वर्गीय अहमद पटेल और महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के हस्तक्षेप के बाद गहलोत व पायलट के बीच समझौता हुआ था। पायलट खेमे के विधायक जयपुर लौटे थे। उस समय उन्हें मंत्रिमंडल विस्तार और राजनीतिक नियुक्तियों का काम शीघ्र पूरा करने का आश्वासन दिया गया था, लेकिन सीएम इसे लगातार टाल रहे हैं। पायलट खेमे का कहना है कि गहलोत अपने पसंद के लोगों को लगातार राजनीतिक नियुक्तियों के माध्यम से उपकृत कर रहे हैं, लेकिन उन्हें दरकिनार किया जा रहा है। वहीं, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने चौधरी को मनाने का प्रयास करने की बात कहते हुए साफ कर दिया कि इसकी आड़ में बयानबाजी करने वालों को पार्टी की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए। डोटासरा ने कहा मैने उनसे खुद फोन पर बात की है। चौधरी की नाराजगी इसलिए है कि जिला कलेक्टर ने उनका फोन नहीं उठाया। जानकारी करने पर पता चला कि कलेक्टर तूफान के कारण बात नहीं कर सके, बाद में बात कर उनकी समस्याओं का समाधान कर लिया गया। इसी बीच, राज्य सरकार के दो वरिष्ठ मंत्री शांति धारीवाल व डॉ. बीडी कल्ला ने चौधरी से फोन पर बात कर उन्हें अपनी समस्याएं बताने के लिए कहा, लेकिन चौधरी ने दोनों मंत्रियों से कहा कि मेरी समस्या का समाधान सीएम और माकन ही कर सकते हैं, किसी मंत्री के हाथ में यह नहीं है।

जोधपुर के गौरव गहलोत ने बनाई ऑक्सीजन मशीन, केंद्रीय मंत्री ने देखा 10-12 हजार में बनी मशीन का डेमो

जोधपुर । नवाचार में हमारे युवा पीछे नहीं हैं। कोरोना महामारी के दौरान ऑक्सीजन की कमी पड़ी तो सूर्यनगरी के गौरव गहलोत ने मात्र दस बारह हजार रुपए में ऑक्सीजन कंसंट्रेटर मशीन को तैयार कर दिया, जबकि मार्केट में मिल रहे ऑक्सीजन कंसंट्रेटर की कीमत 80 से 90 हजार रुपए तक है। स्थानीय सांसद और केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने गौरव गहलोत से मुलाकात की और मशीन का डेमो देखा व उसे प्रोत्साहित किया।

गौरव ने अटल कम्युनिटी कोविड केयर सेंटर में केंद्रीय मंत्री शेखावत के समक्ष अपनी मशीन का डेमो दिया।

गौरव के अनुसार उसने स्थानीय स्तर पर ऑक्सीजन मशीन का निर्माण किया है जो कि कंसंट्रेटर के रूप में ही काम करती है इसकी लागत में दस से बारह हजार का खर्च खर्चा आया है।यह एक व्यक्ति के लिए काम करेगी।शेखावत ने गौरव से कहा कि फाइनल शेप देकर कुछ मशीन बनाओ, प्रयोग सफल रहता है तो चिकित्सा केंद्रों में तुम्हारी मशीन उपलब्ध करा सकेंगे। इससे पहले विशेषज्ञ संस्थान से परीक्षण कराया जाएगा।

शेखावत के अनुसार गौरव सहित अनेक युवा आपदा के समय में इनोवेटिव कार्य कर रहे हैं। ऐसे में जोधपुर ब्रांड को प्रोत्साहित किया जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि मेक इन इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया, स्कील इंडिया और आत्मनिर्भर भारत के तहत भी युवाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके साथ ही केंद्रीय मंत्री ने अच्छा काम करने वाले युवाओं की मदद के लिए अन्य लोगो को भी आगे आने को कहा है, जिससे कम लागत में बेहतर संसाधन उपलब्ध हो सके।

साधु संतों से मिल लिया आशीर्वाद, समर्पित किये ऑक्सीजन कंसंट्रेटर

केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने जोधपुर में साधु संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान उन्होंने अनेक स्थानों पर ऑक्सीजन कंसंट्रेटर समर्पित मशीन समर्पित किए। केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत शुक्रवार को सुबह चौपासनी स्थित श्रीनाथ जी के मन्दिर पहुंचे और यहां पर गोसाईं जी महाराज से आशीर्वाद लिया साथ ही एक ऑक्सीजन कंसंट्रेटर समर्पित मशीन समर्पित की। इसी प्रकार मंत्री शेखावत राइकाराबाग स्थित जुगल जोड़ी मन्दिर पहुंचे और यहां पर एक अत्याधुनिक ऑक्सीजन कंसंट्रेटर समर्पित किया। इसके बाद केन्द्रीय मंत्री शेखावत सन्त रामप्रसाद महाराज से मिलने सूरसागर स्थित बड़ा रामद्वारा गए और आशीर्वाद लिया। उन्होंने यहां पर एक ऑक्सीजन कंसंट्रेटर समर्पित किया। बाद में मंत्री जी ने सन्त हरिराम जी का आशीर्वाद प्राप्त किया और वहां भी एक ऑक्सीजन कंसंट्रेटर समर्पित किया। इसके बाद मंत्री शेखावत चांदपोल गए और अमृताराम जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया और यहां भी ऑक्सीजन कंसंट्रेटर सौंपा।

इसके बाद मंत्री शेखावत स्वर्गीय मगराज जी महाराज ÷सूरदास जी महाराज÷ की कुटिया पहुंचे और उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। विदित रहे स्वर्गीय मगराज जी महाराज ÷सूरदास जी÷ का अस्थि कलश आगामी सोमवार को वाराणसी में गंगा मैया के पवित्र आंचल में विसर्जित किया जाएगा। मंत्री शेखावत ने महाराज के पवित्र अस्थि कलश पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस दौरान लूणी के पूर्व विधायक जोगाराम पटेल, पूर्व सरपंच बेरू महेन्द्र सिंह भी मंत्री शेखावत के साथ रहे।

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़, 13 नक्सली ढेर

मुंबई । शुक्रवार सुबह पुलिस के साथ हुए एनकाउंटर में 13 माओवादी नक्सली मारे गए। यह मुठभेड़ मुंबई से करीब 1000 किमी. दूर गढ़चिरौली जिले के इटापल्ली सब-डिवीजन में स्थित पायडी-कोटमी के जंगल में हुई। गढ़चिरौली पुलिस के अनुसार मारे गए नक्सलियों में छह पुरुष एवं सात महिला नक्सली हैं।

विशेष तौर पर नक्सलियों से ही निपटने के लिए बनाई गई महाराष्ट्र पुलिस की सी-60 कमांडो फोर्स के साथ इन नक्सलियों की मुठभेड़ बहुत सटीक गुप्त सूचना मिलने के बाद हुई थी। कमांडो फोर्स को सूचना मिली थी कि उस स्थान पर किसी विशेष अभियान को अंजाम देने के लिए 60-70 नक्सली इकट्ठा हुए हैं। कमांडो फोर्स के निश्चित स्थान के नजदीक पहुंचते ही नक्सलियों ने उस पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं।

जवाब में सी-60 फोर्स ने भी गोलियां चलाईं। यह एनकाउंटर सुबह छह से 7.30 बजे के बीच हुआ। जिसमें 13 नक्सली मारे गए। मारे गए लोगों की पहचान अभी नहीं हो सकी है। उनके पास से पुलिस ने सात ए.के.47 एसाल्ट राइफल्स, एसएलआर, कार्बाइन, 303 राइफल, 12 बोर की राइफल एवं भारी मात्रा में कारतूस बरामद किए हैं। पुलिस का यह अभियान नक्सल प्रभावित क्षेत्र के डीआईजी संदीप पाटिल एवं एसपी अंकित गोयल की निगरानी में किया गया।

महाराष्ट्र के गृहमंत्री दिलीप वलसे पाटिल ने पुलिस टीम को उसकी सफलता के लिए बधाई दी है। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (स्पेशल आपरेशन्स) ने टीम की सराहना की है। कुछ सप्ताह पहले हुई एक मुठभेड़ में भी महाराष्ट्र की पुलिस टीम ने नक्सलियों को भारी नुकसान पहुंचाया था। पिछले कुछ वर्षों में स्थानीय लोगों का सहयोग भी पुलिस को मिलते देखा जा रहा है। जिसके कारण पुलिस टीम को नक्सलियों के बारे में सटीक जानकारियां मिल रही हैं और नक्सलियों को नुकसान उठाना पड़ रहा है।

राजस्थान में कोरोना के 6225 नए मामले और 129 मौतें

जयपुर। राजस्थान सरकार ब्लैक फंगस का सरकारी और निजी अस्पतालों में निशुल्क इलाज होगा। मुख्यमंत्री चिरंजीवी योजना में ब्लैक फंगस को शामिल किया गया है। राज्य सरकार ने इस बीमारी के इलाज के लिए केंद्र से 50 हजार इंजेक्शन उपलब्ध कराने की मांग की है। सीएम अशोक गहलोत ने कहा कि सरकार रोगियों के उपचार की पूरी व्यवस्था करेगी। उधर, प्रदेश में कोरोना संक्रमण पर लगाम लगने लगी है। लगातार पॉजिटिव केसों की संख्या में कमी हो रही है। पिछले 24 घंटे में 6,225 संक्रमित मिलने के साथ ही 129 लोगों की की मौत हुई है। वर्तमान में एक्टिव केसों की संख्या एक लाख 31 हजार 806 है। अब तक कुल नौ लाख तीन हजार 418 संक्रमित मिलने के साथ ही 7,475 की मौत हुई है। शुक्रवार को 18,264 लोग रिकवर हुए हैं। चिकित्सा विभाग के अनुसार, प्रदेश में नए मरीजों में करीब 22 फीसद की गिरावट आई है।

उधर, कोरोना प्रोटोकॉल का पालन नहीं करने पर पुलिस ने अब तक 22 लाख 44 हजार लोगों के चालान किए हैं। मास्क नहीं लगाने पर चार लाख 60 हजार 706, बिना मास्क पहने लोगों को सामान बेचने पर 21,141 दुकानदारों, निर्धारित भौतिक दूरी नहीं रखने पर 17 लाख 473 लोगों के चालान कि गए हैं। राज्य के पुलिस महानिदेशक एमएल लाठर ने बताया कि क्वरंटाइन मानदंडों का पालन नहीं करने और निषेधाज्ञा का पालन नहीं करने पर अब तक 4,890 मुकदमें दर्ज कर 12,137 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। विभिन्न मामलों में अब तक 21 लाख 45 हजार 953 वाहनों का चालान किया गया।

इसके साथ ही दो लाख 57 हजार 621 वाहन जब्त किए गए। जुर्माने के रूप में 41.53 करोड़ रुपये वसूले गए। उन्होंने बताया कि कोरोना प्रोटोकॉल का उल्लंघन करने और तय नियम तोड़ने वालों के खिलाफ पुलिस की सख्ती जारी रहेगी। अनावश्यक घूमने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी।

गुजरात में 13 साल के किशोर में पाया गया ब्लैक फंगस का संक्रमण, दांत-जबड़े का हुआ ऑपरेशन

अहमदाबाद । कोरोना के साथ अब गुजरात पर म्यूकर माइकोसिस (काली फफूंद) नामक बीमारी का कहर टूटा है। राज्य में इस बीमारी से पीड़ित एक हजार से अधिक लोग उपचाराधीन हैं। एक 13 साल के किशोर के इससे संक्रमित होने का मामला सामने आया, उसका एक निजी अस्पताल में ऑपरेशन किया गया। पिछले माह अहमदाबाद की एक महिला व उसके 13 साल का पुत्र कोरोना संक्रमित हुया था। महिला का गत दिनों कोरोना व काली फफूंद के चलते निधन हो गया, लेकिन उसके पुत्र में भी काली फफूंद के लक्षण नजर आए। इसके बाद उसे चांदखेडा स्थित खुशबू चिल्ड्रंस हॉसपिटल लाया गया, यहां शुक्रवार को उसके जबड़े का ऑपरेशन किया गया। काली फफूंद को अब तक वयस्क लोगों की बीमारी माना जा रहा था, लेकिन पहली बार 13 साल के किशोर के दांत व जबड़े में इसका संक्रमण पाया गया। किशोर अब पूरी तरह स्वस्थ बताया जा रहा है। अहमदाबाद के

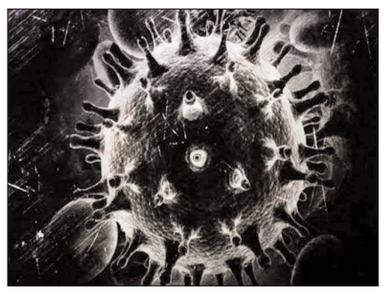

सिविल अस्पताल में काली फफूंद के करीब साढ़े चार सौ मरीज उपचाराधीन हैं, यहां इससे संक्रमितों के लिए अलग वार्ड बनाए गए हैं। राजकोट में राजकोट, सूरत, वडोदरा में भी इस बीमारी से पीड़ितों की संख्या सैकड़ों में है। राज्य में अब तक इस बीमारी से दो दर्जन लोगों की मौत हुई है, जिनमें से अकेले सूरत में करीब एक दर्जन बताई जा रही है। हालांकि सरकार की ओर से इसके कोई अधिकारिक आंकड़े जारी नहीं किए गये हैं।

सरकार खरीदेगी काली फफूंद का टीका- राज्य में इस बीमारी में कारगर ऐम्फोटेरीसिन- बी नामक टीके की कमी को देखते हुए सरकार ने सवा तीन करोड़ की लागत से 5000 इंजेक्शन खरीदने के लिए टेंडर जारी कर दिया है। म्यूकर माइकोसिस बीमारी के राज्य में बड़ी संख्या में केस आ रहे हैं। राज्य में अब तक करीब दो दर्जनकी इससे मौत हो चुकी है। टीके की कालाबाजारी को रोकने के लिए सरकार ने अहमदाबाद, गांधीनगर, सूरत, राजकोट, वडोदरा, जामनगर व भावनगर के सात सरकारी अस्पतालों में ही यह टीका रखने का फैसला किया है।

टीके की कालाबाजारी में चार गिरफ्तार- इस बीमारी में कारगर टीके की कालाबाजारी कर कुछ लोग मुनाफाखोरी करने में जुटे हैं। अपराध शाखा ने ऐसे ही चार युवकों की धरपकड़ कर उनसे आठ इंजेक्शन जप्त किए हैं। अहमदाबाद अपराध शाखा व फूड एंड ड्रग्स विभाग ने मिलकर म्यूकर माइकोसिस बीमारी के काम आने वाले टीके की कालाबाजारी करने वाले चार युवकों की धरपकड़ की है, जबकि एक की तलाश जारी।

इनमें से दो मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव है तथा एक का फार्मेसी का कारोबार है। दो अन्य में से एक इंजीनियर तथा दूसरा फैसिलिटी मैनेजर हैं। अपराध शाखा ने प्रज्ञेश पटेल, स्मित रावल, वशिष्ठ पटेल एवं निरव पंचाल की धरपकड़ कर इनके पास से आठ टीके तथा सवा लाख रुपये की नगदी जब्त कर ली है। इनसे पूछताछ में पता चला है कि पालनपुर में फार्मेसी का कारोबार करने वाले हार्दिक पटेल से यह लोग टीका लेकर आते थे तथा उसे 10 हजार तक में बेचते थे। आठ टीके 80 हजार में बेच चुके थे। पुलिस की एक टीम पालनपुर के लिए रवाना हुई है, ताकि हार्दिक पटेल की गिरफ्तारी कर इस रैकेट का पूरा पर्दाफाश कर सके।

आसाराम को इलाज के लिए नहीं मिली जमानत, याचिका खारिज; पुनः जेल भेजने की तैयारी

जोधपुर । जोधपुर के एम्स में कोरोना के इलाज के लिए भर्ती अपने ही आश्रम की छात्रा से दुष्कर्म के दोषी आसाराम को हाई कोर्ट से फिर झटका मिला है। जोधपुर स्थित राजस्थान हाई कोर्ट की मुख्य पीठ में आसाराम की जमानत याचिका को न्यायाधीश संदीप मेहता और देवेंद्र कच्छवाहा की खंडपीठ ने खारिज कर दिया। इससे आसाराम के आयुर्वेद पद्धति से दो माह तक उपचार लेने की उम्मीदों पर पानी फिर गया है। इधर, आसाराम की तबीयत स्वस्थ है, जिसके बाद उन्हें पुनः जेल भेजने की तैयारियां की जा रही है। आसाराम ने अपने बिगड़ते स्वास्थ्य और कोरोना संक्रमण के इलाज के लिए आयुर्वेद पद्धति से उपचार के लिए जमानत याचिका लगाई थी, जिसमें उन्होंने उपचार व स्वास्थ्य लाभ के लिए दो माह तक अंतरिम जमानत दिए जाने की गुहार की थी।

याचिका की पूर्व सुनवाई पर हाईकोर्ट ने एम्स से तथ्यात्मक रिपोर्ट के साथ अन्य सभी जांच रिपोर्ट पेश करने के लिए कहा था। इसके बाद जोधपुर एम्स में भर्ती आसाराम की एंडोस्कोपी की भी हुई थी। उनको अल्सर की शिकायत थी। हाईकोर्ट के न्यायाधीश संदीप मेहता व न्यायाधीश देवेन्द्र कच्छवाह की खंडपीठ ने एलोपैथी पद्धति से अल्सर का इलाज कराने का कहते हुए जमानत आवेदन को खारिज कर दिया। हाईकोर्ट ने यह भी कहा कि यदि आसाराम के स्वास्थ्य में सुधार पाया जाता है तो उन्हें पुनः जेल शिफ्ट कर दिया जाए। इसके बाद आसाराम की उम्मीद पर पानी फिर गया। इधर, जानकारी मिली है कि जमानत खारिज होने के बाद आसाराम को पुनः जेल शिफ्ट किया जा सकता है। गौरतलब है कि वर्ष 2013 में एक नाबालिग छात्रा से दुष्कर्म के मामले में गिरफ्तार होने के बाद से आसाराम जोधपुर जेल में बंद है। कोर्ट ने इस मामले में आसाराम को जीवन की अंतिम श्वास तक जेल में रहने की सजा सुनाई है।

ऐसी फिल्में चाहता हूं जिस पर 50 साल बाद गर्व कर सकूं

राजकुमार राव को भारत के सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में से एक माना जाता है। उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है और उन्होंने ऐसे किरदार निभाएं हैं जिसने बॉलीवुड नायक को फिर से परिभाषित किया है। अभिनेता ने अपनी फिल्मोग्राफी के बारे में साझा किया कि वह किय तरह की फिल्में करना चाहते हैं। अपने अब तक के 11 साल के बॉलीवुड सफर में राजकुमार ने 'काई पो चे!', 'शाहिद', 'अलीगढ़', 'सिटीलाइट्स', 'बरेली की बर्फी', 'न्यूटन', 'स्त्री' और 'द व्हाइट टाइगर' सहित कई जीवन की विशेषताओं से जुड़ी फिल्मों में अभिनय किया है। अभिनेता ने कहा कि शुक्रवार का दबाव उन्हें असुरक्षित महसूस नहीं कराता। ''मैं बहुत सुरक्षित महसूस करता हूं। मैं शुक्रवार का दबाव नहीं लेता। मेरा मानना है कि कुछ फिल्में जीवन के लिए होती हैं और कुछ बॉक्स ऑफिस और जीवन दोनों के लिए होती हैं, जैसे 'स्त्री'।'' उन्होंने कहा, ''मैं सिर्फ अच्छी फिल्में करना चाहता हूं। यही एकमात्र तरीका है जिससे मैं चाहता हूं कि मेरी फिल्मोग्राफी (बनी हुई) फिल्में हो, जिसपर मुझे गर्व हो और जब मैं 50 साल बाद वापस लौटू और कहूं कि ये सभी वह फिल्में हैं, जो मैंने की है और यह सब खास हैं।'' 36 वर्षीय अभिनेता को हाल ही में हॉरर कॉमेडी 'रूही' में देखा गया था। उनके पास 'बधाई दो' और 'हम दो हमारे दो' फिल्में हैं। उनका कहना है कि वह चाहते हैं कि हर साल कुछ बेहतरीन फिल्में हों जहां वह बेहतरीन किरदार निभा सकें।

कोरियग्राफर गीता कपूर ने बताया क्यों लगाया सिंदूर, बोलीं-ये सच है

कोरियोग्राफर गीता कपूर की कुछ तस्वीरें इन दिनों सुर्खियों में हैं। इनमें वह सिंदूर लगाए नजर आ रही हैं। बिना शादी के अपनी 'गीता मां' को सिंदूर लगाए देख उनके फैन्स हैरान हैं। उनके इंस्टाग्राम पर कई लोगों ने इस बारे में सवाल किया था। अब गीता ने खुद बताया है कि ये तस्वीरें फोटोशॉप्ड नहीं बल्कि असली हैं। उन्होंने सिंदूर लगाने की वजह भी बताई। गीता कपूर की सिंदूर वाली तस्वीरें देखकर लोग उनकी गुपचुप शादी के कयास लगा रहे हैं। इस पर गीता कपूर ने बताया कि उनकी शादी नहीं हुई है। उन्होंने कहा, अगर मेरी शादी होगी तो मैं छिपाऊंगी नहीं। साथ ही अभी मैं शादी कैसे कर सकती हूं, मेरी मां को गुजरे कुछ महीने हुए हैं। तस्वीरों के बारे में पूछे जाने पर गीता ने बताया कि तस्वीरें असली हैं। उन्होंने कहा, मैंने सिंदूर लगाया है। ये फोटोज 'सुपर डांसर 4' के लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें हैं। ये एपिसोड बॉलीवुड की एवरग्रीन हिरोइनों पर है। इसमें हमें उनकी तरह तैयार होना था। मैं रेखाजी की तरह तैयार हूं। वह सिंदूर लगाती हैं तो मैंने भी सिंदूर लगाया है।

डर के कारण छोड़ दिए इंडियन वेब सीरीज के ऑफर्स

माहिरा खान ने बॉलिवुड में फिल्म रईस से डेब्यू किया था। उसके बाद पाकिस्तानी ऐक्टर्स पर बैन लगा दिया गया। माहिरा ने अब कहा है कि उन्हें कई वेब सीरीज के ऑफर्स आए थे मगर डर के कारण उन्होंने इन्हें छोड़ दिया था। पाकिस्तानी ऐक्ट्रेस माहिरा खान ने साल 2017 में शाहरुख खान के ऑपोजिट फिल्म 'रईस' से धमाकेदार बॉलिवुड डेब्यू किया था। इस फिल्म के बाद माना गया था कि माहिरा खान बॉलिवुड की कुछ और बड़ी फिल्मों में भी नजर आ सकती हैं। मगर कुछ समय बाद ही बॉलिवुड ने पाकिस्तानी कलाकारों के काम करने पर बैन लगा दिया। इसके बाद माहिरा को भी पाकिस्तान लौटना पड़ा। अब माहिरा ने कहा है कि 'रईस' के बाद उन्हें बहुत सारी वेब सीरीज ऑफर हुई थीं मगर उन्होंने इनमें काम करने से इनकार कर दिया था। एक हालिया इंटरव्यू में माहिरा ने कहा कि अगर एक साथ काम किया जाए तो पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में बहुत अच्छे काम के मौके मिल सकते हैं। माहिरा ने उम्मीद जताई है कि जल्द ही पाकिस्तानी कलाकार दोबारा भारतीय फिल्मों और वेब शोज में नजर आएंगे। माहिरा जल्द ही एक शो में स्टोरी नरेशन करती नजर आएंगी। पाकिस्तानी कलाकारों पर बैन लगाए जाने के मुद्दे पर माहिरा ने कहा, 'मुझे बहुत सी वेब सीरीज ऑफर हुई थीं मगर मैं उस वक्त डरी हुई थी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग क्या कहते मगर मुझे नहीं पता था कि वहां जाना था या नहीं। इनमें से कुछ बहुत अच्छा कॉन्टेंट भी था और उसे मैं मिस नहीं करना चाहती थी।' माहिरा ने आगे कहा, 'मैं डरी हुई थी और मुझे यह स्वीकार करने में कोई शर्म नहीं है। अब मुझे लगता है कि चलो यार, आप कुछ ऐसा नहीं होने देंगे जो पॉलिटिकल हो या आपकी पसंद प्रभावित करता हो। इसलिए मुझे नहीं लगता कि मैं अब और ऐसा करूंगी। मुझे उम्मीद है कि हम जल्द ही मिलकर काम करेंगे फिर चाहे वह डिजिटल प्लैटफॉर्म के लिए हो कुछ और।'

विद्या बालन की 'शेरनी' ऐमजॉन पर होगी रिलीज

बॉलीवुड एक्ट्रेस विद्या बालन बीते कई दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'शेरनी' को लेकर सुर्खियों में बनी हुई है। अब इस फिल्म ने ओटीटी का रुख कर लिया है। अमेजन प्राइम वीडियो ने घोषणा की है कि डाइरेक्ट-टू-स्ट्रीम हिन्दी अमेजन ओरिजिनल मूवी 'शेरनी' का उनकी स्ट्रीमिंग सेवा पर अगले महीने ग्लोबल प्रीमियर किया जाएगा। इस फिल्म के निर्देशक अमित मासुरकर है। एबंडेंटिया इंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित इस फिल्म में विद्या बालन ने मुख्य भूमिका निभाई है। फिल्म की स्टारकास्ट में उनके साथ शरद सक्सेना, मुकुल चड्ढा, विजय राज, इला अरुण, ब्रजेंद्र काला और नीरज काबी जैसे कलाकार शामिल हैं। इस फिल्म में विद्या बालन एक मजबूत इरादों वाली महिला अफसर का मुख्य किरदार निभा रही हैं, जो प्रतिकूल व शत्रुतापूर्ण माहौल में भी बड़ी निष्ठा के साथ अपना कर्तव्य निभाने की कोशिश करती है। फिल्म के बारे में बात करते हुए अमेजन प्राइम वीडियो इंडिया के निदेशक विजय सुब्रमणियम ने कहा, पिछले कुछ वर्षों में एबंडेंटिया इंटरटेनमेंट और टी-सीरीज अपनी ताजा और दिलचस्प कंटेंट वाली कहानियां कहने वालों का एक पॉवरहाउस साबित हुआ है और हम उनके साथ अपनी सहभागिता ज्यादा मजबूत करने को लेकर रोमांचित हैं।

'शकुंतला देवी' की कामयाबी के बाद हम भारत समेत दुनिया भर में मौजूद अपने ग्राहकों के लिए विद्या बालन अभिनीत एक और फिल्म 'शेरनी' प्रस्तुत करते हुए बेहद उत्साहित हैं। टी-सीरीज के हेड भूषण कुमार ने कहा, मुझे अब तक जितनी भी फिल्में प्रोड्यूज करने का मौका मिला है, उनमें से 'शेरनी' सबसे अपरंपरागत तथा दिलचस्प फिल्म है। मैं इस बात को लेकर रोमांचित हूं कि इस फिल्म का प्रीमियर अमेजन प्राइम वीडियो पर होने जा रहा है, जिससे यह एक ग्लोबल ऑडियंस तक पहुंच सकेगी। हमेशा की ही तरह विक्रम के साथ हुई सहभागिता बेहद शानदार रही और मैं एबंडेंटिया इंटरटेनमेंट के साथ मिलकर और भी ज्यादा मनोरंजक तथा बेमिसाल कंटेंट तैयार करने के लिए उत्सुक हूं।

तमिल लड़के से शादी करना चाहती हैं रश्मिका मंदाना

'नेशनल क्रश' रश्मिका मंदाना किसी भी परिचय की मोहताज नहीं हैं। उन्होंने अपनी एक्टिंग और खूबसूरती से करोड़ों लोगों को घायल किया हुआ है। सोशल मीडिया पर उनकी जबरदस्त फैन फॉलोइंग हैं। उन्होंने तमिल, तेलुगू, कन्नड़ फिल्म इंडस्ट्री में बेहतरीन काम किया है। फैंस रश्मिका के बॉलीवुड डेब्यू का इंतजार कर रहे हैं। कई लोग है जो रश्मिका मंदाना के साथ शादी करना चाहते हैं, लेकिन अब एक्ट्रेस ने साफ कर दिया है कि वह केवल तमिल लड़के से ही शादी करेंगी। रश्मिका ने 2016 में रिलीज हुई कन्नड़ फिल्म 'किरिक पार्टी' से कन्नड़ फिल्म इंडस्ट्री में डेब्यू किया था। हाल ही में एक्ट्रेस ने फिल्म सुल्तान से तमिल फिल्म इंडस्ट्री में भी डेब्यू कर लिया है। उन्होंने इस फिल्म में गांव की लड़की का किरदार निभाया था। फिल्म की शूटिंग के दौरान रश्मिका ने कहा था कि वह तमिल कल्चर से बहुत आकर्षित हो गई हैं, खासकर यहां के खाने से। बातों-बातों में उन्होंने यह भी बता दिया कि वह केवल तमिल युवक से ही शादी करेंगी। रश्मिका ने कहा था, मैं तमिलनाडु के कल्चर बहुत प्रभावित हुई.मुझे तमिल के खाने से प्यार हो गया और ये बहुत स्वादिष्ट होता है। उम्मीद है कि मेरी शादी तमिल युवक से होगी और तमिलनाडु की बेटी बनूंगी। रश्मिका मंदाना सोशल मीडिया पर खासा एक्टिव रहती हैं और लगातार अपनी खूबसूरत फोटोज शेयर करती रहती है। रश्मिका की अभी महज 10 फिल्में रिलीज हुई हैं, लेकिन अपने टैलेंट की बदौलत रश्मिका ने एक तगड़ी फैन फॉलोइंग तैयार कर ली है।

कुछ लोग मेरे साथ काम नहीं करना चाहते

श्रेयस तलपडे को बॉलिवुड के टैलेंटेड ऐक्टर्स में से एक माना जाता है। हालांकि श्रेयस को अभी तक उतनी सफलता नहीं मिल सकी है जिसके वह हकदार हैं। उनका कहना है कि फिल्म इंडस्ट्री में कुछ लोग उनके साथ काम नहीं करना चाहते हैं। बॉलिवुड में कुछ ऐक्टर ऐसे हैं जिनकी ऐक्टिंग की तो काफी तारीफ की जाती हैं मगर वे अभी तक वह मुकाम हासिल नहीं कर सके हैं जिसके वह हकदार थे। ऐसे ही ऐक्टर हैं श्रेयस तलपडे जिनकी ऐक्टिंग बेहतरीन है मगर उन्हें अच्छे मौके नहीं मिले हैं। श्रेयस ने एक हालिया इंटरव्यू में कहा है कि बॉलिवुड में कुछ ऐक्टर्स ऐसे हैं जिन्होंने उनके साथ काम करने से मना कर दिया था क्योंकि वह 'इनसिक्योर' महसूस कर रहे थे।

मेरा काम बोलना चाहिए

बॉलिवुड में फिल्म 'इकबाल' से धमाकेदार एंट्री करने वाले श्रेयस की काफी तारीफ हुई थी। उन्होंने कहा कि फिल्म इंडस्ट्री में केवल 10 पर्सेंट लोग ही सही होते हैं। श्रेयस ने कहा कि उन्हें लगता है कि उनके अंदर खुद की मार्केटिंग करने की स्किल नहीं हैं और वह इस बात पर विश्वास करते हैं कि उनका काम ही बोलना चाहिए।

दोस्तों ने मेरी पीठ पर वार किया है

श्रेयस ने कहा, 'मैंने देखा कि कुछ ऐक्टर्स हैं जो मेरे साथ स्क्रीन शेयर करने पर काफी इनसिक्योर रहते हैं और नहीं चाहते कि मैं फिल्म में रहूं। मैं कुछ फिल्में केवल दोस्ती की खातिर उनके फायदे के लिए की हैं लेकिन तभी उन्हीं दोस्तों ने मेरी पीठ पर वार किया है। इसके बाद कुछ दोस्त ऐसे भी हैं जो मेरे बगैर फिल्म बनाते हैं तब सवाल उठता है कि क्या वे दोस्त भी हैं? दरअसल, इंडस्ट्री में 90 पर्सेंट लोग सिर्फ साथ में काम करने वाले हैं और केवल 10 पर्सेंट ऐसे हैं जो आपके काम से खुश होते हैं। यहां लोगों का ईगो बहुत नाजुक है।'

इन हिंदी फिल्मों में आ चुके हैं नजर

बता दें कि श्रेयस तलपडे हिंदी फिल्मों में आने से पहले ही मराठी थिअटर और सिनेमा का जाना-माना नाम रहे हैं। इकबाल के अलावा डोर, ओम शांति ओम, वेलकम टू सज्जनपुर, गोलमाल रिटर्न्स, गोलमाल 3, हाउसफुल 2, पोस्टर बॉयज, गोलमाल अगेन जैसी बहुत सी मशहूर और सफल फिल्मों में काम कर चुके हैं।

जितना हो सके दूसरों की मदद करें

महामारी के कारण संकट में फसे लोगों को राहत देने के प्रयास में जैकलीन फर्नांडिस इस मुश्किल समय में मैदान पर उतर चुकी हैं। अभिनेत्री लोगों के साथ दयालुता की कहानियों को साझा करने और बनाने एवं सभी के बीच प्यार फैलाने और दूसरों की मदद करने का प्रयास कर रही हैं। जैकलीन फर्नांडिस ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर तस्वीर के साथ एक पोस्ट शेयर की है, जिसमें वो अपने फैंस से लोगों की मदद करने की अपील कर रही हैं। इस तस्वीर में एक्ट्रेस ब्लू कलर की टी-शर्ट और जींस पहने एक मिरर के पास बैठी मुस्कुराती नजर आ रही हैं। तस्वीर को इंस्टग्राम पर शेयर कर उन्होंने कैप्शन लिखा, मजबूत रहें, सुरक्षित रहें, स्वस्थ रहें, जितना हो सके दूसरों की मदद करें। हमेशा प्यार और दया फैलाएं! हम सभी अपने-अपने तरीकों से महामारी से लड़ रहे हैं। उन्होंने आगे लिखा, आइए हम सभी के साथ सहानुभूति और समझदारी रखें.एक-दूसरे के लिए होने दें! दया की अपनी कहानियों को हमारे साथ शेयर करते रहें और हम प्यार, एक्ता जैसे शब्दों को फैलाने में मदद करें। हमारा ये एक जीवन है, जो कुछ भी हम कर सकते हैं उसे इस दुनिया में करने के लिए करें।

2 पार्ट में बनेगी अल्लु अर्जुन की पुष्पा

साउथ स्टार अल्लू अर्जुन की फिल्म 'पुष्पा' लंबे वक्त से चर्चा में है। आए दिन फिल्म से जुड़ी कोई ना कोई नई जानकारी सामने आ रही है। अब यह खबर है कि अल्लु अर्जुन और रश्मिका मंदाना स्टारर फिल्म पुष्पा दो पार्ट में रिलीज होगी। फिल्म के निर्माताओं ने यह पुष्टि की है। निर्माता नवीन यरनेनी और वाई.रवि शंकर ने कहा, फिल्म की कहानी और किरदारों को सही ढंग से दिखाने के लिए समय की जरूरत है। इन्हें एक पार्ट में समेटना संभव नहीं है, इसलिए फिल्म दो पार्ट में रिलीज होगी। टीजर को मिला शानदार रिस्पॉन्स देख हम काफी उत्साहित हैं। हम फिल्म को दो हिस्सों में रिलीज कर इस उत्साह को आगे तक ले जाएंगे। पहला हिस्सा अगस्त में रिलीज किया जाएगा और दूसरा 2022 में रिलीज होगा। अल्लू के जन्मदिन पर 8 अप्रैल को फिल्म 'पुष्पा' का नया पोस्टर सामने आया था, जो मिनटों में सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। उनका ऐसा अवतार फैंस ने पहले कभी नहीं देखा था। बताया जा रहा है कि 'पुष्पा' के पहले पार्ट की 80 प्रतिशत शूटिंग पूरी हो चुकी है, वहीं दूसरे पार्ट की शूटिंग 10 प्रतिशत पूरी हुई है। दोनों फिल्मों का बजट करीब 250-300 करोड़ रुपए है। इसे तेलुगू के अलावा, तमिल, हिन्दी, कन्नड़ और मलयालम भाषा में भी रिलीज किया जाएगा। इस एक्शन-थ्रिलर फिल्म की कहानी आंध्र प्रदेश की पहाड़ियों में लाल चंदन की डकैती पर आधारित है। फिल्म में अल्लू अर्जुन को एक भयानक दिखने वाले चंदन तस्कर पुष्पा राज के रूप में दिखाया जाने वाला है। इसमें उनके साथ रश्मिका मंदाना भी नजर आएंगी। फिल्म का निर्देशन सुकुमार कर रहे हैं। इससे पहले सुकुमार के साथ अल्लू अर्जुन 'आर्य' और 'आर्य 2' जैसी सुपरहिट फिल्मों में काम कर चुके हैं। उनके साथ यह अल्लू की तीसरी फिल्म होगी। यह अल्लू की पहली पैन इंडिया फिल्म है।

राजस्थान में रॉयल वेडिंग करना चाहती हैं अंकिता लोखंडे

दिवंगत एक्टर सुशांत सिंह राजपूत की एक्स गर्लफ्रेंड अंकिता लोखंडे अक्सर सुर्खियों में बनी रहती हैं। अंकिता इन दिनों बिजनेसमैन विक्की जैन के साथ रिलेशनशिप में हैं। अब खबरें आ रही है कि अंकिता जल्द ही शादी रचाने वाली हैं। एक इंटरव्यू के दौरान अंकिता ने विक्की जैन संग अपने रिश्ते और शादी को लेकर बातचीत की।

शादी के बारे में बात करते हुए अंकिता लोखंडे ने कहा, किसी भी लड़की के लिए शादी एक बहुत खूबसूरत एहसास होता है। हां मैं अपनी शादी को लेकर बहुत उत्साहित हूं। मैं जल्द ही शादी करने वाली हूं। मैं उम्मीद कर रही हूं कि वो खास दिन जल्द ही आने वाला है। उन्होंने कहा, मैं जोधपुर या जयपुर में शादी करना पसंद करूंगी। मैं राजस्थानी अंदाज में शादी करना चाहती हूं लेकिन अब तक भी मैंने किसी तरह की कोई प्लानिंग नहीं की है। अपने प्यार के बारे में बात करते हुए अंकिता ने कहा, 'मेरे लिए प्यार जिंदगी की जरूरत है। मुझे हर जगह केवल प्यार की तलाश रहती है। मैं जहां भी जाती हूं वहां प्यार की दरकार होती है.प्यार मेरी जिंदगी का सबसे अहम हिस्सा है। मैं अपने प्यार को लेकर बहुत पजेसिव हूं। अगर मुझे लगता है कि कोई मुझसे झूठ बोल रहा है तो मैं सच जानने की कोशिश करती हूं। अंकिता लोखंडे ने एक्टर सुशांत सिंह राजपूत के बारे में भी बात की। अंकिता ने सुशांत को अपना फेवरेट स्टार बताया और कहा कि मैंने और सुशांत ने सीरियल पवित्र रिश्ता में साथ काम किया है, और वो मेरे फेवरेट स्टार हैं।

टोक्यो ओलंपिक में हिस्सा नहीं लेंगे गोल्ड मेडलिस्ट डेविड रूडिशा!

नई दिल्ली। ओलंपिक के 800 मीटर स्पर्धा के दो् बार चैम्पियन डेविड रूडिशा टोक्यो खेलों में अपने स्वर्ण पदक का बचाव करने के लिए नहीं उतरेंगे। रूडिशा के प्रतिनिधि मिशेल बोइटिंग ने गुरुवार को द एसोसिएटेड प्रेस को बताया कि हैमस्ट्रिंग की समस्या से लगातार परेशान रहने के कारण रुडिशा की टोक्यो खेलों में भाग लेने की 'संभावना नहीं' है।

कोरोना वायरस महामारी के कारण एक साल बाद हो रहे ओलंपिक की शुरुआत 23 जुलाई से होगी जबकि एथलेटिक्स की स्पर्धाएं 31 जुलाई से होंगी। बोइटिंग ने कहा, वह अभी अपने अगले कदम पर विचार कर रहे है । वह संन्यास या फिर अभ्यास जारी रखने के बारे में सोच रहे हैं। कीनिया के 32 साल के रूडिशा ने 2017 सत्र के बाद चोट के कारण किसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सके थे। रुडिशा ने लंदन ओलंपिक में एक मिनट 40.91 सेकेंड के रिकार्ड समय के साथ स्वर्ण पदक जीता था। उन्होंने रियो ओलंपिक में अपनी सफलता को दोहराते हुए एक मिनट 42.15 सेकेंड के समय के साथ पीला तमगा हासिल किया था।

सीमा बिस्ला और अर्जुन लाल के अलावा टेनिस खिलाड़ी अंकिता रैना को टॉप्स में मिली जगह

नई दिल्ली। ओलंपिक का टिकट हासिल करने वाले नौकायन खिलाड़ी अर्जुन लाल जाट, अरविंद सिंह के साथ पहलवान सीमा बिस्ला, सुमित मलिक को खेल मंत्रालय के टारगेट ओलंपिक पोडियन स्कीम में शामिल कर लिया गया है। मंत्रालय ने यह भी कहा कि पहलवान विनेश फोगाट टोक्यो खेलों तक विदेशों में प्रशिक्षण जारी रखेंगी, क्योंकि उनके प्रस्ताव को मिशन ओलंपिक प्रकोष्ठ ने मंजूरी दे दी थी। खेल मंत्रालय के मुताबिक, 'नौकायन खिलाड़ी अर्जुन लाल जाट और अरविंद सिंह को विकास समूह से कोर समूह में शामिल किया गया है। हाल ही में वर्ल्ड ओलंपिक क्वालीफायर से कोटा हासिल करने वाले पहलवानों सीमा बिस्ला और सुमित मलिक को कोर समूह में जोड़ा गया है।' उन्होंने बताया कि बिली जीन किंग कप में सानिया मिर्जा के साथ जोड़ी बनाने वाली टेनिस खिलाड़ी अंकिता रैना को भी टॉप्स के कोर समूह में शामिल किया गया है। उन्होंने हाल ही में महिला युगल में दुनिया के शीर्ष 100 रैंकिंग में में जगह बनाई है।'

टॉप्स ने ओलंपिक खेलों की तैयारी के लिए अर्जुन और अरविंद के पुर्तगाल में 5 सप्ताह के प्रशिक्षण के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी है। इस महीने की शुरुआत में टोक्यो में ओलंपिक में जगह बनाने वाले युगल स्कलर 1 जून से पुर्तगाल के पोकिन्हो हाई परफॉर्मेंस केन्द्र में प्रशिक्षण लेंगे। उनके शिविर पर लगभग 21 लाख रुपए खर्च होंगे। विनेश ने 2019 वर्ल्ड चैम्पियनशिप के 53 किग्रा वर्ग में ओलंपिक कोटा हासिल किया था। वह नौ जून तक बुडापेस्ट में अभ्यास करेंगी। वह पोलैंड ओपन (9 से 13 जून) में भाग लेने के बाद बुडापेस्ट वापस आ जाएंगी और दो जुलाई तक वहीं रहेंगी।

भारतीय टीम को दोहा पहुंचने के बाद कोविड-19 जांच के नतीजे का इंतजार

दोहा। भारतीय फुटबॉल टीम के खिलाड़ी विश्व कप 2022 एवं एशियाई कप 2023 के क्वॉलिफिकेशन मुकाबलों के लिए यहां पहुंचने के बाद अभ्यास शिविर शुरू करने के लिए कोविड-19 जांच के नतीजे का इंतजार कर रहे हैं। भारत का 28 सदस्यीय दल को नई दिल्ली से यहां पहुंचा। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ से जारी विज्ञप्ति के मुताबिक, 'दोहा में आरटी-पीसीआर जांच के परिणाम आने तक तक भारत के 28 खिलाड़ियों एवं सहयोगी सदस्यों को अनिवार्य पृथकवास पर रखा गया है। उन्होंने बताया, जांच नतीजों के बाद टीम मैचों की तैयारी के लिए अभ्यास शिविर शुरू करेगी। कप्तान सुनील छेत्री की वापसी से उत्साहित टीम को मेजबान कतर के खिलाफ तीन जून को अपने पहले मैच से पहले यहां बायो-बबल के अंदर अभ्यास शिविर में भाग लेना है। टीम के दो अन्य मैच बांग्लादेश (सात जून) और अफगानिस्तान (15 जून) के खिलाफ हैं।

कोविड-19 महामारी के कारण इन मैचों को दोहा में खेला जाएगा और इसे घरेलू तथा दूसरी टीम के मैदान पर मैचों के मूल प्रारूप में नहीं खेला जा रहा है। भारतीय टीम ग्रुप ई में तीन अंकों के साथ चौथे स्थान पर है। टीम विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने की दौड़ से बाहर हो गई है, लेकिन 2023 एशियाई कप में जगह बनाने की संभावना अभी बची हुई है। एआईएफएफ ने कतर फुटबॉल संघ (क्यूएफए) को धन्यवाद दिया कि उसने टीम को मैचों से काफी पहले यहां आने और दोहा में अभ्यास शिविर लगाने की अनुमति दी। क्यूएफए ने भारतीयों को 10-दिवसीय कठिन पृथकवास से छूट देकर प्रशिक्षण शुरू करने की अनुमति दी। एआईएफएफ के महासचिव कुशल दास ने कहा, हम कतर एफए के बेहद आभारी और शुक्रगुजार हैं कि उन्होंने नियमों में छूट देकर हमें कतर में अपने शिविर को जल्दी शुरू करने में मदद की।

रोनाल्डो ने जुवेंटस के लिए पहला तो बुफोन ने आखिरी खिताब जीता

नई दिल्ली। फेडरिको चिएसा (73वें मिनट) और देजान कुलुसेवस्की (31वें मिनट) के दम पर जुवेंटस ने अटलांटा को 2-1 से शिकस्त देकर 14वीं बार इटालियन कप फुटबॉल की ट्रॉफी जीत ली। दिग्गज क्रिस्टियानो रोनाल्डो का यह जुवेंटस के लिए पहला जबकि गोलकीपर जियांलुइगी बुफोन का आखिरी खिताब है। 43 वर्षीय बुफोन पहले ही यह घोषणा कर चुके हैं कि वह मौजूदा सत्र के बाद जुवेंटस का साथ छोड़ देंगे। उन्होंने पांचवीं बार यह ट्रॉफी जीती। जुवेंटस सिरी ए में पांचवें स्थान पर है और वह ट्रॉफी जीतने की दौड़ से बाहर हो चुका है। अटलांटा के लिए एकमात्र गोल रुस्लान मालिनोवस्की ने खेल के 41वें मिनट में किया। अटलांटा ने आखिरी बार 1963 में इटालियन कप जीता था। पिछले तीन फाइनल में उसे हार झेलनी पड़ी, जिसमें 2019 में लाजियो से मिली हार शामिल है ।

4300 दर्शकों थे मौजूद : एक साल में पहली बार दर्शकों को स्टेडियम के भीतर जश्न मनाने का मौका मिला। करीब 4300 समर्थक यह मैच देखने के लिए स्टेडियम में मौजूद थे।

पीएसजी ने सात साल में छठी बार जीता फ्रेंच कप :पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) ने मोनाको को 2-0 से हराकर सात साल में छठी और कुल 14वीं बार फ्रेंच कप का खिताब जीत लिया। पीएसजी ने दोनों हाफ में गोल किए। पहला गोल इकार्डी (19वें मिनट) और दूसरा काइलिन म्बापे (81वें मिनट) ने किया। म्बापे इस सत्र में 41 गोल दाग चुके हैं।

फीफा महिला अंडर-17 विश्व कप अगले साल अक्तूबर में

नई दिल्ली। फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप अगले साल 11 से 30 अक्तूबर तक भारत में ही होगा। फीफा परिषद ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। भारत को इससे पहले 2020 अंडर-17 विश्व कप की मेजबानी करनी थी लेकिन इसे कोविड-19 महामारी के कारण रद्द करने से पहले 2021 तक के लिए स्थगित कर दिया गया था। इसके बाद संचालन इकाई ने पिछले साल नवंबर में भारत को 2022 की मेजबानी सौंपी थी।

फीफा परिषद ने 71वीं फीफा कांग्रेस की पूर्व संध्या पर भारत में 2022 में होने वाले अंडर-17 विश्व कप की तारीखों सहित कई अंतरराष्ट्रीय मैचों के लिए तिथियों को मंजूरी दी।

सोनम मलिक: छोटे से गांव मदिना से टोक्यो ओलंपिक के सफर के लिए तैयार

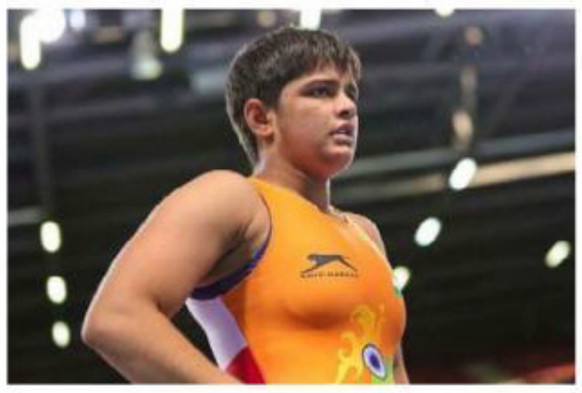

सोनीपत। भारतीय कुश्ती जगत के कई लोगों को डर था कि कम उम्र की सोनम मलिक को सीनियर वर्ग के अनुभवी पहलवानों के खिलाफ मुकाबला करने से गंभीर रूप से चोटिल होने का खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। हरियाणा के सोनीपत जिले के मदिना गांव की 19 साल की इस युवा पहलवान ने हालांकि ओलंपिक टिकट हासिल कर यह साबित किया कि उनका जोखिम उठाने का फैसला सही था। सोनम में रियो ओलंपिक की पदक विजेता साक्षी मलिक को 62 किग्रा भार वर्ग में पटखनी देकर अपनी पहचान बनाई।

सोनम के कोच अजमेर मलिक और उनके अभिभावक को कुश्ती के राष्ट्रीय महासंघ को दो बार की इस कैडेट विश्व चैंपियन को सीनियर स्तर पर मौका देने के दिलवाने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ी। साल 2019 में काफी मेहनत के बाद हालांकि भारतीय कुश्ती संघ (डब्ल्यूएफआई) ने सोनम को रोम रैंकिंग सीरीज के लिए जनवरी 2020 के ट्रायल में मौका दिया। सोनम के कोच अजमेर ने पीटीआई से कहा, ट्रायल्स में सोनम साक्षी मलिक पर भारी पड़ी और उन्होंने भारतीय टीम में जगह पक्की की। इसके बाद नेता जी (डब्ल्यूएफआई के अध्यक्ष बीबी शरण) ने कहा था कि अगर हम ट्रायल्स में उसे मौका नहीं देते तो यह बड़ी गलती होती।

उन्होंने कहा, डब्ल्यूएफआई और कई अन्य लोगों ने तर्क दिया था कि अनुभव की कमी के कारण वह चोटिल हो जाएगी। उन्होंने कहा कि हम ऐसा करके उसके करियर को खतरे में डाल देंगे, लेकिन हमने महासंघ को मनाना जारी रखा। सोनम को लेकर उनका आत्मविश्वास इतना अधिक इसलिए था क्योंकि उसने स्थानीय 'दंगल' में असाधारण प्रदर्शन किया था। उसने बड़े नामों के खिलाफ ओपन कैटेगरी में प्रतिस्पर्धा करते हुए जीत दर्ज की थी। सोनम ने रितु मलिक, सरिता मोर , निशा या सुदेश जैसे बड़े पहलवानों के खिलाफ उनकी प्रतिष्ठा की परवाह नहीं की। उन्होंने भारतीय महिला कुश्ती में बड़े नामों के खिलाफ दमदार मुकाबला किया।

अजमेर ने कहा, हम सिर्फ यह आकलन करना चाहते थे कि वह इन पहलवानों के खिलाफ कैसा प्रदर्शन करती है, लेकिन वह लगातार प्रभावित करती रही।

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल

न्यूजीलैंड से 2019 वर्ल्डकप में सेमीफाइनल में मिली हार का बदला लेने के लिए उतरेगी

नई दिल्ली। विराट की कप्तानी वाली भारतीय टीम के पास पहली बार हो रही वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ भिड़ेगी। फाइनल 18 से 22 जून के बीच इंग्लैंड के साउथैप्टन में खेला जाना है। भारतीय टीम के पास न्यूजीलैंड से 2019 वर्ल्डकप के सेमीफाइनल में मिली हार का बदला लेने का मौका है। वहीं कोहली के पास ICC ट्रॉफी जीतने का भी मौका है। कोहली की कप्तानी में भारतीय टीम कई सीरीज जीती हैं, लेकिन आज तक ICC ट्रॉफी नहीं जीत सकी है।

भारतीय टीम के पास ICC के तीनों फॉर्मेट जीतने का मौका

टीम इंडिया टी-20 और वनडे वर्ल्ड कप जीत चुकी है। ऐसे में अगर वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल जीतती है तो उसके पास तीनों फॉर्मेट के जीतने का मौका है। 1983 में कपिल देव की कप्तानी में पहली बार टीम इंडिया ने वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीता था और उसके 28 साल के बाद एम एस धोनी की कप्तानी में टीम इंडिया ने 2011 में दूसरी बार ये सफलता हासिल की थी। वहीं 2007 धोनी की कप्तानी में भारत ने पाकिस्तान को हराकर पहला टी 20 वर्ल्डकप जीता था।

8 साल बाद ICC ट्रॉफी जीतने का मौका

टीम इंडिया के पास 8 साल बाद ICC ट्रॉफी जीतने का मौका है। भारतीय टीम 2013 में ICC चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के बाद से ICC का कोई भी टूर्नामेंट नहीं जीती है। 2017 में उसे ICC चैंपियंस ट्रॉफी में पाकिस्तान के हाथों हार का सामना करना पड़ा था। वहीं कोहली की कप्तानी में भारत ने 60 टेस्ट मैच खेले हैं। जिनमें से 36 में जीत और 14 में हार का सामना करना पड़ा। जबकि 10 ड्रॉ रहे।

वहीं उन्होंने 95 वनडे मैचों में भारत की कप्तानी की है।

जूनियर खिलाड़ियों का भी बीमा

खेल मंत्रालय जूनियर खिलाड़ियों का भी 5-5 लाख का बीमा कराएगा; 13 हजार खिलाड़ियों और कोच को फायदा

नई दिल्ली। सरकार ने कोरोना महामारी की वजह से खिलाड़ियों के लिए मेडिकल इंश्योरेंस का दायरा बढ़ाया है। इसमें खिलाड़ियों, कोच और सपोर्ट स्टाफ की संख्या में बढ़ोतरी की है। स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (साई) ने कहा कि इस फैसले से 13 हजार से ज्यादा खिलाड़ी, कोच और सपोर्ट स्टाफ को फायदा मिलेगा। खेल मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा, 'हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि सभी खिलाड़ी और स्टाफ को इस कठिन समय में हेल्थ कवर मिले।

खेलो इंडिया में शामिल जूनियर खिलाड़ियों को भी किया गया शामिल

नेशनल कैंप में शामिल खिलाड़ी, कैंप के संभावित खिलाड़ी, खेलो इंडिया के खिलाड़ी, साई एक्सीलेंस सेंटर के कैंप में शामिल जूनियर खिलाड़ियों को 5-5 लाख रुपए का बीमा कवर मिलेगा।' पहले खिलाड़ी और कोच का बीमा सिर्फ नेशनल कैंप और नेशनल व इंटरनेशनल टूर्नामेंट के दौरान किया जाता था। अब पूरे साल यानी ऑन और ऑफ फील्ड दोनों समय के लिए हुआ है। 25 लाख रुपए के हेल्थ इंश्योरेंस में एक्सीडेंट और डेथ कवरेज भी शामिल है।साई ने इंश्योरेंस स्कीम के लिए नेशनल फेडरेशन से खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ के नाम तय करने को कहा है। इस बीच, खेल मंत्रालय ने इस साल के नेशनल स्पोर्ट्स अवॉर्ड्स के लिए आवेदन मंगाना शुरू कर दिया है। योग्य खिलाड़ी, कोच, यूनिवर्सिटी आदि 21 जून तक आवेदन कर सकते हैं। कोविड के कारण लगातार दूसरे साल ऑनलाइन आवेदन मंगाए जा रहे हैं।

क्रिकेटर भुवनेश्वर कुमार के पिता का निधन

मेरठ। इंटरनेशनल क्रिकेटर भुवनेश्वर कुमार के पिता किरनपाल सिंह का निधन हो गया। वह कई दिनों से लीवर की बीमारी से जूझ रहे थे। 63 साल के किरनपाल ने मेरठ स्थित अपने आवास पर आखिरी सांस ली। मूलरुप से बुलंदशहर के रहने वाले किरनपाल लंबे समय तक यूपी पुलिस में तैनात थे। कुछ साल पहले ही उन्होंने वीआरएस ले लिया था।

किरनपाल लीवर की बीमारी से पीड़ित थे, कई दिन से बीमार थे। डॉक्टरों के जवाब देने पर परिवार उन्हें गंगानगर स्थित अपने आवास पर ले आए थे। उनका उपचार दिल्ली एम्स व नोएडा के एक अस्पताल में चल रहा था। इंग्लैंड के डॉक्टरों की देखरेख में इलाज जारी रहा। दिल्ली व नोएडा में उनकी कीमो थेरेपी पूरी हो गई थी।

जिसके बाद वह खुद को ठीक महसूस कर रहे थे। लेकिन दो सप्ताह पहले उनकी हालत फिर खराब हो गई थी। उन्हें गंगानगर स्थित पास के ही अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालत स्थिर रहने के कुछ दिन बाद मुजफ्फरनगर क्षेत्र के मसूरी स्थित अस्पताल में भर्ती कराया गया। लीवर की बीमारी के कारण उन्हें पीलिया और अन्य कई बीमारी ने चपेट में ले लिया, जिसके बाद डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। किरनपाल ने मार्च महीने के लिए ICC प्लेयर ऑफ द मंथ के लिए भुवी को वोट देने की अपील की थी। भुवी सर्वाधिक वोट पाकर प्लेयर ऑफ द मंथ चुने भी गए थे। अब भुवी और उनकी मां इंद्रेश देवी और बहन रेखा पिता की देखरेख कर रहीं थीं। भुवनेश्वर कुमार घर पर ही पिता की सेवा कर रहे थे।

द्रविड़ अच्छे कोच पर शास्त्री किसी से कम नहीं

शास्त्री के कोच रहते 114 मैच जीती टीम इंडिया, 65फीसदी सक्सेस रेट के साथ हैं बेहद कामयाब कोच

नई दिल्ली। टीम इंडिया के पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ श्रीलंका दौरे पर जाने वाली भारतीय टीम के कोच हो सकते हैं। जब यह सीरीज खेली जा रही होगी तब भारतीय टेस्ट टीम इंग्लैंड में होगी। उस टीम के साथ टीम के रेगुलर कोच रवि शास्त्री मौजूद होंगे। इस डेवलपमेंट के बाद क्रिकेट फैंस के बीच यह बहस छिड़ गई है कि क्या अब जल्द ही राहुल द्रविड़ को रवि शास्त्री की जगह टीम इंडिया का रेगुलर कोच बना दिया जाना चाहिए। चलिए इस सवाल का जवाब हम रवि शास्त्री के कार्यकाल में टीम इंडिया के प्रदर्शन से हासिल करने की कोशिश करते हैं।

114 मैचों में जीती है टीम इंडिया

रवि शास्त्री को जुलाई 2017 में अनिल कुंबले के स्थान पर टीम इंडिया का हेड कोच बनाया गया। तब से अब तक भारतीय टीम 174 इंटरनेशनल मैच खेल चुकी है। इसमें टीम को 114 में जीत मिली। यानी शास्त्री के कार्यकाल में भारत का ओवरऑल सक्सेस रेट 65फीसदी से ज्यादा रहा है।

38 में से 23 टेस्ट में जीत

रवि शास्त्री की कोचिंग में भारतीय टीम ने 38 में से 23 टेस्ट मैचों में जीत हासिल की है। सक्सेस रेट 60त्न का रहा। वहीं, वनडे में 76 में से 51 में जीत मिली। सक्सेस रेट 67त्न रहा। इसी तरह टी-20 में भारत को 60 में से 40 मैचों में जीत मिली। 66त्न सक्सेस रेट। टेस्ट क्रिकेट में 20 या इससे ज्यादा मैचों में टीम इंडिया की कोचिंग करने वालों में रवि शास्त्री का रिकॉर्ड सबसे अच्छा है। वनडे क्रिकेट में भी उनकी सफलता की दर 20 से ज्यादा मैचों में कोचिंग करने वालों में सबसे ज्यादा है।

जो कोई न कर सका, शास्त्री ने किया

रवि शास्त्री के कोचिंग करियर की सबसे बड़ी उपलब्धि टीम इंडिया को ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज में जीत दिलवाना है। वह भी एक नहीं दो-दो बार। 2018-19 और 2020-21 में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को उसके घर में हराया। इससे पहले भारत क्या कोई भी एशियाई टीम ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज नहीं जीत पाई थी। 2020-21 में तो भारत ने युवा खिलाड़ियों के दम पर ऑस्ट्रेलिया को हराया।

2017 में जब अनिल कुंबले कोच पद से हटे थे तब भी राहुल द्रविड़ से पूछा गया था कि क्या वे टीम इंडिया के कोच बनेंगे। द्रविड़ ने तब कहा था कि वे परिवार के साथ ज्यादा समय बिताना चाहते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए द्रविड़ ने बेंगलुरू में नेशनल क्रिकेट एकेडमी के हेड का पद भी संभाला है। अब बड़ा सवाल यह है कि क्या द्रविड़ अब भी टीम इंडिया का रेगुलर कोच बनना चाहेंगे? 2017 में टीम के कोच बनने वाले रवि शास्त्री को 2019 में एक्सटेंशन मिला था। उनका कार्यकाल 2021 वर्ल्ड कप तक है। इससे पहले उन्हें ICC टेस्ट चैम्पियनशिप और इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में भी टीम के साथ रहना है। इन असाइनमेंट में शास्त्री का परफॉर्मेंस कैसा रहता है इसके आधार पर उनका भविष्य तय होगा।